

भाषा संस्कृत
पेपर 1 & 2



CTET
2021 - 22



SACHIN CHOUDHARY

FARMAN MALIK

SACHIN ACADEMY

CP STUDY POINT

SACHIN ACADEMY

WARNING



The E-Notes is Proprietary & Copyrighted Material of **Sachin Academy**. Any reproduction in any form, physical or electronic mode on public forum etc will lead

to infringement of Copyright of **Sachin Academy** and will attract penal actions including FIR and claim of damages under Indian Copyright Act 1957.

ई-नोट्स **Sachin Academy** के मालिकाना और कॉपीराइट सामग्री है। सार्वजनिक मंच आदि पर किसी भी रूप, भौतिक या इलेक्ट्रॉनिक मोड में किसी भी तरह फैलाने से **Sachin Academy** के कॉपीराइट का उल्लंघन होगा और भारतीय कॉपीराइट अधिनियम 1957 के तहत प्राथमिकी और क्षति के दावे सहित दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

भाषा - संस्कृत

महत्वपूर्ण शब्द

है	अस्ति	समूह	संघात
क्या	किम्	कि	यति
वह	सः	अगर	यदि
जैसे	यथा	तेरा	तवते
कैसे	कथम्	मेरा	मम
वैसे	तथा	उसका	तस्य
जब	यदा	कार्य	कर्म
नहीं	न	रास्ता	मार्गः
नहीं है	नास्ति	तो	तर्हि
मैं	अहम्	आज	अद्य
तू	त्वम्	भी	अपि
कौन	कः	और	च
हमेशा	सदा	प्रयत्न	यत्नः

बाद में

पश्चात्

निचे दिए गए

अधोलिखित

साथ

सेह

उनमें

तेषु

Tag word

POSITIVE WORDS

- ❖ बहुभाषिकता / मातृभाषायाः
महत्वपूर्ण संसाधनम्
- ❖ विभिन्न विविध गतिविधियां
- ❖ अवसरः
- ❖ रचनात्मककक्षायां
- ❖ प्रोत्साहनम्
- ❖ छात्रकेंद्रित
केंद्रित
- ❖ त्रुटिनाम महत्वपूर्ण
- ❖ समावेशी कक्षाः / शिक्षाः

NEGATIVE WORDS

- रट
- दण्डन / सजाः
- समस्या / बाधाः / बोझः
- व्याख्यानं
- व्याकरणम्
- हतोत्साहित
- पाठ्यपुस्तकम् / अध्यापकं
- केवलं / ही / मात्रः
- छात्र कोरी स्लेटें

- ❖ हस्तपरक अनुभवं / करके सीखना
- ❖ जिज्ञासा:
- ❖ सक्रिय:
- ❖ विभिन्न संदर्भेषु भाषा प्रयोगस्य
- ❖ स्वाभिव्यक्ति

सीमित:

लैंगिक असमानता:

निष्क्रिय:

गद्यांशं - श्लोकं

निर्देश : अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां । (प्रश्नसङ्ख्या 1-6)
विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः समुचितम् उत्तरं । चित्वा लिखत।

विद्या ददाति विनयम् विद्या ददाति वित्तम्।
विद्या सदा जनानां विमलं करोति चित्तम् ॥1॥
विद्या तनोति कीर्तिम् विद्या तनोति मानम्।
विद्या नरं समाजे कुरुते सदा प्रधानम् ॥2॥
विद्या निहन्ति दोषम् विद्या निहन्ति भारम्।
दूरीकरोति विद्या सकलं मनोविकारम् ॥3॥
विद्या न राजहार्या विद्या न चोरहार्या।
विद्या कदापि लोके नहि बन्धुभिः विभाज्या ॥4॥
विद्या गुणः प्रधानः विद्याधनं प्रधानम्।
देश तथा विदेशे विद्याबलं प्रधानम् ॥5॥

1. पद्यांशे कस्याः महत्त्वम् कथितम् अस्ति?

- (a) विद्यायाः (b) दोषस्य (c) वन्धूनां (d) प्रधानस्य

Ans : (a)

उक्त पद्यांश में विद्या के महत्त्व का निरूपण किया गया है। विद्या विनय प्रदान करती है। विद्या धन प्रदान करती है और विद्या सदा लोगों के चित्त को विभक्त करती है।

2. विद्या जनानां किं विमलं करोति?

- (a) उदरम् (b) दन्तम् (c) कर्णौ (d) चित्तम्

Ans : (d)

विद्या लोगों के चित्त को विभक्त करती है। अर्थात् मनुष्य में विद्या शुभ विचारों का प्रादुर्भाव करती है। तदर्थ वह जनहित चिन्तन करता है। अपने को जो अच्छा नहीं लगता, वह दूसरों पर कदापि नहीं करता।

3. बन्धुभिः का न विभाज्या?

- (a) क्षेत्रम् (b) धनम् (c) विद्या (d) भवनम्

Ans : (c)

विद्या कदापि लोके नहि बन्धुभिः विभाज्या अर्थात् विद्या भाइयों द्वारा बांटा नहीं जा सकता। न इसे राजा हरण कर सकता है और न चोर चुरा सकता है।

4. अदूरं दूरं करोति इति भावस्य कृते कः प्रयोगः?

- (a) क्षेत्रम् (b) धनम् (c) विद्या (d) भवनम्

Ans : (d)

पद्यांश में दिया है कि 'दूरी करोति विद्या सकलं मनोविकारं' अदूरं दूर करोति यह भाव भवनम् के लिए प्रयुक्त हुआ है।

5. कीर्तिम्' इति पदस्य विपरीतार्थकः नास्ति

- (a) अकीर्तिः (b) यशः (c) अपकीर्तिः (d) लोकापवादः

Ans : (b)

कीर्ति का विलोम शब्द अकीर्ति है। यश का विलोम अपयश है। यश, कीर्ति का विपरीतार्थक नहीं है जबकि अकीर्ति, अपकीर्ति और लोकायवाद इसके समानार्थक हैं।

6. विद्याबलं कुत्र कुत्र प्रधानं भवति?

- (a) दूषिते भोजने (b) देशे तथा विदेशे (c) जलाशयमध्ये (d) ज्वलिते अग्नौ

Ans : (b)

विद्या गुणः प्रधानः विद्या धनं प्रधानम्।

देशे तथा विदेशे विद्याबलं प्रधानम् ॥

विद्या बल देश और विदेश दोनों स्थानों पर प्रधान होता है। इसीलिए कहा गया है कि विद्यावान् सर्वत्र पूजा जाता है।

निर्देशः अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां प्रश्नसङ्ख्या 1-6)

विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत।

शोको नाशयते धैर्यं, शोको नाशयते श्रुतम्।

शोको नाशयते सर्वं, नास्ति शोकसमो रिपुः॥

गौरवं प्राप्यते दानात् न तु वित्तस्य सञ्चयात्।

स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः॥

सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम्।

असद्भिः शपथेनापि जले लिखितमक्षरम् ।।

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः

स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

काष्ठादग्निर्जायते मध्यमानाद्

भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।

सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां

मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति।।

1. तरवः केन कारणेन नम्राः भवन्ति?

- (a) समृद्धिभिः (b) पुष्पोद्गमैः (c) नवाम्बुभिः (d) फलोद्गमैः

Ans : (d)

'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' अर्थात् वृक्ष फलों से लद जाने पर नम्र हो जाते हैं अर्थात् झुक जाते हैं। इसी प्रकार सत्पुरुष समृद्धि के प्राप्त हो जाने पर नम्र हो जाते हैं।

2. केषां वचनं शिलालिखितम् अक्षरमिव भवति?

- (a) पयोधीनाम् (b) नराणाम् (c) सताम् (d) परोपकारिणाम्

Ans : (c)

'सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम्' अर्थात् सत्-पुरुष का वचन शिला पर लिखित अक्षर की भाँति होता है। वह जो कहता है, उसकी वाणी में सत्यता झलकती है।

3. काष्ठात् इत्यस्य किं विशेषणमत्र प्रयुक्तम्?

- (a) मध्यमानात् (b) शोकात् (c) सञ्चयात् (d) दानात्

Ans : (a)

काष्ठात् अग्निर्जायते मध्यमानाद /अर्थात् काष्ठ के लिए सम्प्रति वाक्य में विशेषण मध्यमानाद प्रयुक्त हुआ है।

4. वह्निःइत्यर्थे किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

- (a) गौरवम् (b) अग्निः (c) घनाः (d) भूमिः

Ans : (b)

वह्नि का अर्थ अग्नि से है। वह्नि का पर्याय दिये गये विकल्पों में अग्नि है। वह्नि के अन्य पर्यायवाची पावकः अनल, आग इत्यादि हैं।

5. अलसानाम् इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

- (a) पयोदानाम् (b) सोत्साहानाम् (c) नराणाम् (d) परोपकारिणाम्

Ans : (b)

सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां अर्थात् उत्साही व्यक्ति के लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। अलसानाम का विलोम शब्द सोत्साहानाम होगा। अर्थात् आलस्य का विलोम शब्द उत्साह है।

6. जायते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

- (a) रिपुः (b) शोकः (c) भूमिः (d) अग्निः

Ans : (d)

जायते क्रिया पद का कर्तृपद अग्नि होगा। जैसा कि श्लोक में कहा गया है कि काष्ठ अग्निर्जायते।

निर्देशः अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदनन्तरं प्रदत्तप्रश्नानां प्रश्नसङ्ख्या 1-9) विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत।

इह खलु पञ्चेन्द्रियाणि, पञ्चेन्द्रियद्रव्याणि, पञ्चेन्द्रियार्थाः च भवन्ति। तत्र चक्षुः श्रोत्रं घ्राणं जिह्वा त्वक् च इति पञ्चेन्द्रियाणि। पञ्चेन्द्रियद्रव्याणि खं वायुः ज्योतिः आपो भूः इति। पञ्चेन्द्रियार्थाः शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः मनःपुनः सराणि च इन्द्रियाणि अर्थसंग्रहसमर्थानि भवन्ति। न इन्द्रियवशगः स्यात्। न चञ्चलं मनः। अनुभ्रामयेत्।

गुरु-वृद्ध-आचार्यान् अर्चयेत्। मूर्ध-श्रोत्र-घ्राण-पाद-तैलनित्यः स्यात्। अतिथीनां पूजकः स्यात्। काले हित-मित-मधुरार्थवादी स्यात्। वश्यात्मा, महोत्साहः, विनयबुद्धिः निर्भीकः, क्षमावान्, सर्वप्राणिषु बन्धुभूतः स्यात्।

न अनृतं ब्रूयात्। न अतिब्रूयात्। न अन्यस्वम् आहरेत्। न वैरं। रोचयेत्। न कुर्यात् पापम्। न पापेऽपि पापी स्यात्। न अन्यदोषान्। ब्रूयात्। न अन्यरहस्यम् आगमयेत्। अधार्मिकैः न दुष्टैः सह आसीत्। न नासिकां कुष्णीयात्। न दन्तान् विघट्टयेत्। न भूमिं विलिखेत्। न। न खान् वादयेत्। न छिन्द्यात् तृणम्। न दुष्टयानानि आरोहेत्। न द्रुमम्। आरोहेत्। न जलग्रवेगम् अवगाहेत्। न अदेशे, न अकाले, न कुत्सयन, न प्रतिकूलोपहितम्, न। पर्युषितम् अन्नम् खादेत्। न नक्तं दधि भुञ्जीत्। न कञ्चिद्। अवजानीयात्। न वेगान् धारयेत्। न अहंमानी स्यात्। न नियमं। भिन्द्यात्। न कार्यकालम् अतिपातयेत्। न अपरीक्षितम् अभिनिविशेत्। न च। अतिदीर्घसूत्री स्यात्। न सिद्धौ उत्सेकं गच्छेत् न असिद्धौ दैन्यम्।

1. 'असत्यम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

- (a) अनृतम् (b) अन्यरहस्यम् (c) अपरीक्षितम् (d) चञ्चलम्

Ans : (a)

असत्य का दिये गये विकल्पों में सही पर्याय होगा अनृतम्। जबकि चञ्चलय, अन्यरहस्यम् तथा अनृतम् अन्य अर्थ वाले हैं।

2. कदा दधि न भोक्तव्यम् ?

- (a) सायम् (b) दिवि (c) रात्रौ (d) मध्याह्ने

Ans : (c)

कदा दधि न भक्तव्यम् अर्थात् दही का सेवन कब नहीं करना चाहिए। सम्प्रति प्रश्न का सही उत्तर है -दही का सेवन रात्रि में नहीं करना चाहिए।

3. जनः केषां पूजकः स्यात्?

- (a) दुष्टानाम् (b) अतिथीनाम् (c) वश्यात्मनाम् (d) निर्भीकाणाम्

Ans : (b)

जनः अतिथिनाम् पूजकः स्यात् अर्थात् लोगों को अतिथियों की पूजा करनी चाहिए।

4. इन्द्रियाणि कति भवन्ति?

- (a) पञ्च (b) त्रीणि (c) षट् (d) चत्वारि

Ans : (a)

पाँच ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी हैं। पञ्च इन्द्रियाणि भवन्ति अर्थात् पांच इन्द्रिया होती हैं। ये हैं -शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।

5. कं न आरोहे?

- (a) अश्वम् (b) नौकाम् (c) गजम् (d) द्रुमम्

Ans : (d)

द्रुमं न आरोहेत्। अर्थात् वृक्ष पर नहीं चढ़ना चाहिए

6. केन युक्तेन इन्द्रियाणि अर्थसंग्रहसमर्थानि भवन्ति?

- (a) शरीरेण (b) वाचा (c) कर्मणा (d) मनसा

Ans : (d)

मनसा युक्तेन इन्द्रियाणि अर्थसंग्रह समर्थानि भविन्त। अर्थात् मन से युक्त इन्द्रियां अर्थ संग्रह में समर्थ होती हैं।

7. अहङ्कारवान्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

- (a) अहंमानी (b) वश्यात्मा (c) कर्मणा (d) मनसा

Ans : (a)

अहंकार के लिए अहंमानी शब्द प्रयुक्त हुआ है। गद्यांश में दिया गया है कि 'न अहंमानी स्यात्।' यहाँ अहंमानी। 'अहंकारवान्' के लिए प्रयुक्त हुआ है।

8. गुरुवृद्धाचार्यान्' इति पदे कः समासः?

- (a) अव्ययीभावः (b) द्वन्द्वः (c) तत्पुरुषः (d) बहुव्रीहिः

Ans : (b)

'गुरुवृद्धाचार्यान्' इस पद में द्वन्द्व समास है। इसका विग्रह है -गुरुश्च वृद्धश्चआर्यान्।

9. क्षमावान् ' इत्यत्र कः प्रत्ययः?

- (a) तुमुन् (b) क्त (c) मतुप् (d) क्तवतु

Ans : (c)

प्रत्यय शब्दों के अन्त में लगाये जाते हैं। क्षमावान् में मतुप प्रत्यय है। जो कि यह तद्वित का प्रत्यय है। प्रातिपदिकों) संज्ञा सर्वनाम, विशेषण आदि (में जिन प्रत्ययों को जोड़कर कुछ और भी निकाला जाता है, उन प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

भाषा शिक्षण शास्त्र के लिए हिंदी के नोट्स देखें

Q.1. दिव्याङ्गानां (Children with special needs) लेखनकौशलवर्धनार्थं कस्य आवश्यकता भवति?

- (a) समीचीनशब्दावल्याः प्रयोगः
- (b) सुन्दराणि हस्ताक्षराणि
- (c) विचाराणां मौलिकता
- (d) प्रतीकात्मक-भाषायाः (Symbolic language) प्रयोगः

Ans : (a)

दिव्याङ्गानां लेखनकौशलवर्धनार्थं समीचीनशब्दावल्याः प्रयोगः आवश्यकता भवति।
अर्थात् - दिव्याङ्गों (विकलाङ्गों) के लेखन कौशल को बढ़ाने के लिए प्रचलित (समीचीन) शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता होती है। जिससे वे सरलता से लेखन क्रिया सम्पन्न कर सकें।

Q.2. बहुभाषिकता (Multilingualism)

- (a) भाषाधिगमे एकं महत्त्वपूर्ण संसाधनम्
- (b) भाषाधिगमे समस्यासृष्टिं करोति
- (c) भाषाशिक्षणे एका बाधा
- (d) भाषासंसाधनानां कृते प्रमादकारी

Ans : (a)

बहुभाषिकता भाषाधिगमे एकं महत्त्वपूर्ण संसाधनम्।। बहुभाषिकता भाषा को सीखने में एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है।

Q.3. लेखनपरम्परायां अधस्तनेषु किं सम्बद्धम् अस्ति?

- (a) कल्पना
- (b) समीचीन-शब्दावली
- (c) कथाविचाराः (Story ideas)
- (d) विरामचिह्नानां सम्यक्प्रयोगः

Ans : (d)

लेखनपरम्परायां विरामचिह्नानां सम्यक्प्रयोगः सम्बद्धम् अस्ति। लेखन क्रिया को सम्पन्न करने के लिए विरामचिह्नों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक होता है। शुद्ध लेखन क्रिया तभी सम्भव हो सकती है जब हम विरामचिह्नों का उचित स्थान पर प्रयोग करें।

Q.4. डिस्लेक्सिया एकः भाषागतविकारः यः प्रभावयति

- (a) सङ्केतबोधम् (Comprehending Signages)
- (b) कथितभाषाबोधम् (Comprehending Spoken Language)
- (c) मौखिकभाषाबोधम् (Comprehending Oral Language)
- (d) लिखितभाषाबोधम् (Comprehending Written Language)

Ans : (c)

डिस्लेक्सिया एक भाषागत विकार है जिससे बच्चा पढ़ने से सम्बंधित कठिनाई का अनुभव करता है।

Q.5. सर्जनात्मकलेखनस्य अनेकानि प्रयोजनानि सन्ति। तेषु प्रमुखम् अस्ति

- (a) भावविनिमयः
- (b) वर्तनीशुद्धता
- (c) व्याकरणशुद्धता
- (d) स्वाभिव्यक्तिः

Ans : (d)

सर्जनात्मक लेखन का अनेक प्रयोजन है। उनमें प्रमुख है- स्वाभिव्यक्ति। क्योंकि अपनी अभिव्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण होती है।

Q.6. मुक्तप्रश्नानां प्रमुखविशेषता वर्तते

- (a) तत्र मूल्याङ्कनं कठिनं भवति
- (b) तेषाम् एकमेव उचितम् उत्तरम् अस्ति
- (c) विभिन्नप्रकारव्याख्यानां तैः अवसरः दीयते
- (d) तत्र आह्वानानि बहूनि सन्ति

Ans : (c)

मुक्त प्रश्नों की प्रमुख विशेषता होती है कि विभिन्न प्रकार के व्याख्यानों पर उन्हें अवसर प्रदान किया जाये। इससे भाषा की समझ के साथ-साथ सूझ-बूझ की क्षमता का भी विकास होता है।

Q.7. रचनात्मक कक्षायां (Constructivist Classroom) कवितायाः पाठनसमये

शिक्षकः

- (a) व्याकरणगतनियमानाम् उपरि अभ्यासोपरि च ध्यानं दद्यात्
- (b) कवितापठनं कुर्यात् छात्रान् पुनरावृत्तिं च कर्तुं निर्दिशेत्
- (c) पाठगतकठिनशब्दानाम् अर्थान् कण्ठस्थीकर्तुं निर्दिशेत्
- (d) समूहेषु चर्चा कविताम् अधिकृत्य स्वस्वमन्तव्यं प्रदातुं छात्रान् निर्दिशति

Ans : (d)

रचनात्मक कक्षा में कविता पाठ के समय शिक्षक समूह में चर्चा करके कविता का अधिकरण कर अपने-अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है।

Q.8. भाषायाः कौशलचतुष्टयम् अतिरिच्य अधोलिखितेषु अपरं कौशलं किम् अस्ति?

- (a) सर्जनकौशलम्
- (b) सम्प्रेषणकौशलम्
- (c) चिन्तनकौशलम्
- (d) अध्ययनकौशलम्

Ans : (c)

भाषा की कौशल चतुरता चिन्तन कौशल में है। चिन्तन कौशल से ही व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है।

Q.9. भाषाविकासे अधोलिखितेषु कस्य महत्त्वं सर्वाधिकम्?

- (a) पठपाठनसहायकसामग्रीणाम् अधिकाधिकप्रयोगः

- (b) मूल्याङ्कनकृते विभिन्नसाधनानां कौशलानां च प्रयोगः
- (c) पाठगतानाम् अभ्यासकार्याणां समाप्तिः
- (d) शिक्षार्थिभ्यः परस्परं भावादानप्रदानस्य अधिकाधिकम् अवसरप्रदानम्

Ans : (d)

भाषा के विकास में सर्वाधिक महत्व है-शिक्षार्थियों के बीच परस्पर भावों के आदान-प्रदान का अधिकाधिक अवसर प्रदान करना।

Q.10. सततव्यापकमूल्याङ्कनान्तर्गते

- (a) छात्राः सर्वदा आनन्देन कार्यनिमग्नाः भवन्ति
- (b) छात्राः शैक्षणिकभारं अधिकं निर्वहन्ति
- (c) छात्राः पूर्णतया अध्यापकानां नियन्त्रणे सन्ति
- (d) छात्राणां मूल्याङ्कनाकलनं नियमितरूपेण क्रियते

Ans : (d)

सतत् व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत छात्रों का मूल्यांकन और आकलन नियमित रूप से किया जाता है। क्योंकि नियमित रूप से मूल्यांकन करने से छात्र की व्यापक परख हो जाती है।

Q.11. भाषाशिक्षणकक्षयायां रचनावादस्य (Constructivism) अर्थः भवति—

- (a) छात्राः केनचित् अध्यापकेन सहकृताः भवन्ति, विभिन्नमाध्यमानां (Medium) साहायेन स्वकीयं सिद्धान्तं व्यवस्थापयन्ति
- (b) छात्राः स्वकीयाम् अधिगमसामग्री (Learning aids) स्वयं निर्माय प्रत्यक्षज्ञानं प्राप्नुवन्ति
- (c) छात्राः विविध-असमानदृष्टान्तान् (Dis-similar samples) पठित्वा सुदृढं समाधानं स्वयं प्राप्नुवन्ति

(d) छात्राः प्रपञ्चविषये स्वकीयम् अध्ययनं, ज्ञानञ्च वस्तूनां प्रतिबिम्बन अनुभवद्वारा, भाषाकौशलेन च प्राप्नुवन्ति

Ans : (d)

भाषाशिक्षणकक्ष्यायां रचनावादस्य अर्थः -छात्राः प्रपञ्चविषये स्वकीयम् अध्ययनं, ज्ञानञ्च वस्तूनां प्रतिबिम्बन अनुभवद्वारा, भाषाकौशलेन च प्राप्नुवन्ति इति। अर्थात् भाषा शिक्षण की कक्षा में रचनावाद का छात्र अपने सम्बन्धित विषय का अध्ययन, ज्ञान और वस्तुओं का प्रतिबिम्ब अपने अनुभव द्वारा और भाषा कौशल के द्वारा प्राप्त करता है।

Q.12. पाठ्यवस्तु समग्रता इत्यनेनाभिप्रायः अस्ति

- (a) कस्मिंश्चित् अनुच्छेदे प्रदत्त-सूचनानुगुणं प्रस्तुतीकरणम्
- (b) दीर्घ-अनुच्छेदात् सूचनालेखनम्
- (c) विभिन्न-अनुच्छेदेषु वाक्येषु वा परस्परं सम्बद्धतां दर्शितुं सर्वेषां नामपदानां प्रयोगः
- (d) कथावर्णनानुगुणं अनुच्छेदव्यवस्था

Ans : (c)

पाठ्यवस्तुओं की समग्रता का अभिप्राय विभिन्न अनुच्छेद और वाक्यों के बीच परस्पर सम्बद्धता दिखाने के लिए सभी नाम पदों का प्रयोग है।

Q.13. कस्यामपि संस्कृतकक्षायां अधिकाधिकं संस्कृतप्रयोगेन लाभः भवति?

- (a) श्रुतलेखनस्य अभ्यासार्थम् आवश्यक सोपानमिदम्
- (b) छात्राः शब्दार्थान् प्राप्नुवन्ति
- (c) सहजसंस्कृतप्राप्त्यर्थं संस्कृतपरिवेशस्य निर्माणं भवति
- (d) छात्रः व्याकरण-ज्ञानं सुगमतयावगच्छन्ति

Ans : (c)

किसी संस्कृत कक्षा में अधिकाधिक संस्कृत के प्रयोग से यह लाभ होता है कि सहज संस्कृत प्राप्त करने हेतु संस्कृत परिवेश का निर्माण होता है।

Q.14. छात्राणां स्वायत्ततां प्रोन्नतीकर्तुं परिणामकारिषु मार्गेषु एकः

- | | |
|--|-------------------------------------|
| (a) परिप्रश्नं कर्तुं छात्राणां प्रोत्साहनम् | (b) कठोरानुशासनविधिः |
| (c) निगदितपाठ्यानां सविस्तरं पाठनम् | (d) पौनःपुन्येन छात्राणां परीक्षणम् |

Ans : (a)

छात्रों से प्रश्नों का पूछा जाना उनके ज्ञान को प्रोत्साहित करता है। इससे उनमें अध्ययन के प्रति विशेष रुचि बनी रहती है।

Q.15. भाषाध्ययने आकलने च विभागः (Portfolio) नाम

- (a) सावधिकलेखनिकपरीक्षा
- (b) प्रतिसन्नं क्रियमाणा मौखिकी परीक्षा
- (c) छात्रायाः कालिकः कार्यसंग्रहः, यः तस्याः प्रगतिं दर्शयेत्
- (d) प्रतिसन्नं छात्रव्यवहाराभिलेखनम्।

Ans : (c)

भाषा अध्ययन और आकलन के विभाग का नाम इस प्रकार है-“ छात्रायाः कालिकः कार्यसंग्रहः, यः तस्याः प्रगति दर्शयेत्” अर्थात् छात्रों का समयानुसार कार्यों का संग्रह तथा उसकी प्रगति को देखना चाहिए।

Q.16. भाषाकक्षायाम् आसनव्यवस्था परिवर्तनसहा स्यात् यतः

- (a) तद् अध्यापकोत्तरदायित्वम् अल्पीकरोति।
- (b) अनुशासनपालने अध्यापकस्य साहाय्यं करोति
- (c) पौनः पुन्येन स्थानपरिवर्तनाय छात्राणां साहाय्यं करोति
- (d) युगलक्रियां समूहक्रियां च प्रोत्साहयति

Ans : (d)

भाषाकक्षा में बैठने की व्यवस्था को परिवर्तनीय बनाया जाना चाहिए जिससे युगल क्रिया (जोड़े बनाकर) तथा समूह क्रिया को प्रोत्साहन मिलता रहे।

Q.17. आकलनस्य निकषः (Criteria)

- | | |
|----------------------------------|---|
| (a) प्रश्नक्रमेण अङ्कानां विभागः | (b) विद्यार्थिना सामर्थ्यस्य सामान्यज्ञानम् |
| (c) अङ्कनमार्गदर्शिका | (d) परीक्षामार्गदर्शन-मूल्याङ्कननिर्देशः |

Ans : (b)

आकलनस्य निकषः (Criteria) – विद्यार्थिना सामर्थ्यस्य सामान्यज्ञानम्। तात्पर्य है - आकलन निकलता है - सामान्य ज्ञान से विद्यार्थियों के सामर्थ्य का आकलन किया जाता है।

Q.18. 'उपचारात्मकं शिक्षणम्' इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति

- (a) छात्राणां, नियमितरूपेण, पुनः पुनः परीक्षणम्।
- (b) "छात्राः किमर्थम् अवगन्तुम् असमर्थाः, असामर्थ्यं च दूरीकर्तुं के उपायाः इत्यर्थं करणीयाः प्रयासाः।
- (c) विद्यालयोपरान्तं शिक्षणायोजनम्।
- (d) प्रबुद्धछात्राणां संवर्धनार्थम् अतिरिक्तशिक्षणम्।

Ans : (b)

उपचारात्मक शिक्षण का अभिप्राय है- छात्र जिस अर्थ को समझने में असमर्थ है उस असमर्थता को दूर करने का उपाय किया जाता है। अतः इस प्रकार के शिक्षण में छात्र के बहुमुखी प्रतिभा पर ध्यान दिया जाता है।

Q.19. 'छात्रकेन्द्रिता कक्ष्या' इत्यनेन कः अभिप्रायः?

- (a) सक्रियाः छात्राः निश्चेष्ट-अध्यापकः/अध्यापिका।

(b) छात्राः कक्ष्यायाः केन्द्रे उपविशन्ति।

(c) अध्यापकस्य निर्देशनान्तर्गते केचन छात्राः एव अन्य छात्रान् पाठयन्ति।

(d) विभिन्नगतिविधिभिः छात्र-पठन-पाठन-प्रक्रिया।

Ans : (d)

छात्र केन्द्रित कक्षा का अभिप्राय है- विभिन्न गतिविधियों में छात्रों के पठन-पाठन की प्रक्रिया।।

Q.20. "भाषार्जनम् अन्तर्निहितमेव। मनुष्यः जन्मना एव कया अपि भाषाव्यवस्थया युक्तः। एतया व्यवस्थया एव सः व्यवहारं करोति।" एषः विचारः केन उपागमेन सम्बद्धः?

(a) प्रघटनाशास्त्रीयेण

(b) संज्ञानात्मकेन

(c) प्राकृतिकेन

(d) सम्प्रेषणात्मकेन

Ans : (c)

भाषा का अर्जन अन्तर निहित ही होता है। मनुष्य जन्म से ही किसी भी भाषा से युक्त होता है। इस व्यवस्था से ही वह व्यवहार करता है। यह विचार प्राकृतिक उपागम से सम्बद्ध है।

Q.21. पठनसमये अधस्तनेषु कस्य महत्त्वं सर्वाधिकम्?

(a) उच्चस्वरेण पठनम्

(b) पाठस्य अर्थस्य अवगमनम्

(c) पाठस्य प्रत्येके शब्दस्य पठनम्

(d) धाराप्रवाहेण पठनम्

Ans : (b)

पाठन प्रणाली में अर्थात् पढ़ने और पढ़ाने (पठनपाठन) के समय मूल रूप से पढ़ते समय 'पाठ के अर्थ को बोधित करना' महत्वपूर्ण होता है कारण यह है कि यदि छात्र पठन् कार्य कर रहा है तो सर्वप्रथम उसे पठित वस्तु पाठ विशेष का 'अर्थावगमन' होना चाहिए।

Q.22. सिंहस्य विषये एका कथां पठित्वा शिक्षिका छात्रान् निर्दिशति- "भवान् स्वयम् अरण्ये सिंहः अस्ति इति मनसि विचार्य कथां श्रावयत्" इति। एवं सा किं विकसितुं प्रयत्नं करोति?

(a) सर्जनात्मकतां चिन्तनक्षमताञ्च

(b) रूपान्तरणम् अनुवादञ्च

(c) पठनकौशलं लेखनकौशलञ्च

(d) प्रारूपलेखनं पुनर्लेखनञ्च

Ans : (a)

प्रश्नानुसार सिंह के विषय में एक कथा को पढ़कर शिक्षिका छात्रों को निर्देश देती है- कि यदि "आप स्वयं जंगल में शेर हैं, ऐसा मन में विचार करके कथा को सुनो।" इस प्रकार का शिक्षिका का प्रयास निश्चित रूप से छात्रों की सर्जनात्मक चिन्तन क्षमता का विकास करना ही है।" क्योंकि शिक्षिका छात्रों को तार्किक एवं विवेकशील बनाना चाहती हैं जिससे उनके चिन्तन शक्ति का भी विकास भली भाँति हो सके।

Q.23. प्राथमिकस्तरे कवितायाः प्रयोजनम् अस्ति

(a) विभिन्नभाषाकौशलानामुपरि अधिकारप्राप्तिः

(b) प्राथमिकच्छात्रेभ्यः अलङ्कारपाठनम्

(c) शब्दावलीज्ञाने विस्तारः

(d) कवितायाः सङ्गीतस्य तालस्य अनुप्रासस्य च आनन्दानुभूतिः

Ans : (d)

प्रारम्भिक स्तर में कविता का प्रयोजन (उद्देश्य) कविता के संगीत (गान), ताल और अनुप्रास के आनन्द की अनुभूति से होता है। कविता काव्य का ही सूक्ष्म अङ्गी कहलाती है। इसीलिए कविता को पढ़ते समय पद्यों के लय, ताल, एवं गति का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

Q.24. विद्यालयशिक्षणे प्रथमभाषाध्ययनं स्यात्

(a) मातृभाषायाः अथवा प्रान्तीयभाषायाः

(b) हिन्दीभाषायाः

(c) राजकीयभाषायाः

(d) सहराजकीयभाषायाः

Ans : (a)

विद्यालय शिक्षण में प्रथम भाषा का अध्ययन उस बच्चे को उसकी 'मातृभाषा' के रूप में देना चाहिए। क्योंकि वह बालक परिवार में अपनी मातृभाषा में पलता-बढ़ता है।

Q.25. चतुर्थकक्षायाः सोमया नाम बाला पठनसमये एकम् अपरिचितं शब्दं पश्यति। सा

(a) सन्दर्भानुसारम् अर्थस्य अनुमानं कुर्यात्

(b) शब्दस्यार्थं कच्चित् पृच्छेत्

(c) शब्दं दुर्लक्षितं कुर्यात्

(d) शब्दकोषे शब्दस्यार्थं पश्येत्

Ans : (a)

यदि शिक्षण के समय ऐसा हो कि- चौथी कक्षा की कोई छात्र/छात्रा पढ़ते समय किसी भी एक अपरिच शब्द को देखती है तो वह निश्चित रूप से उस शब्द के अर्थ को जानने का प्रयास करेगी। तथा उस अर्थ को सन्दर्भ के अनुसार अनुमानित करेगी।

Q.26. अधस्तनेषु कस्मिन् विधौ मातृभाषायाः व्यवधानं न अपेक्ष्यते?

(a) द्विभाषीयविधौ (Bilingual method)

(b) श्रव्यभाषीयविधौ (Audio-lingual method)

(c) स्वाभाविकविधौ (Natural method)

(d) प्रत्यक्षविधौ (Direct method)

Ans : (d)

प्रत्यक्ष विधि से कदापि भी मातृभाषा का व्यवधान नहीं होगा। बल्कि अन्य तीनों विकल्पों से मातृभाषा व्यवधान अपेक्षित सिद्ध हो सकता है। क्योंकि प्रत्यक्ष विधि मातृभाषा का अवबोधक है।

Q.27. निम्नलिखितेषु किं छात्र केन्द्रित-अनुदेशनम्?

(a) व्याख्यानम्

(b) वैयक्तिकम् अनुदेशनम्

(c) प्रदर्शनम्

(d) प्रतिमानात्मकम्

Ans : (b)

छात्र केन्द्रित अनुदेशन एक वैयक्ति अनुदेशन होता है। जबकि व्याख्यान सामूहिक अनुदेशन होता है।

Q.28. छात्राणां लेखनकौशलस्य मूल्याङ्कनार्थं किम् आवश्यकम्?

(a) व्याकरणार्थं विशिष्टस्थानम्

(b) छात्रेभ्यः मौखिकाभिव्यक्त्यर्थम् औपचारिकरूपेण अवसराणां प्रदानम्

(c) लेखन-सन्दर्भं प्रतिपुष्टिदानम् अवलोकनं च

(d) शब्दचयन-प्रकरण-सन्दर्भं परिसीमित-विकल्पाः

Ans : (c)

छात्रों के लेखन कौशल का मूल्यांकन लेखन के सन्दर्भ में प्रतिपुष्टिदान एवं अवलोकन आवश्यक है।

Q.29. परिपृच्छा-आधारितम् अधिगमनम्

(a) छात्रान् प्रश्नान् प्रष्टुं प्रेरयति

(b) छात्रेभ्यः चिन्तनात्मकं प्रोत्साहनं न प्रयच्छति

(c) केवलं शान्तछात्रान् प्रेरयति

(d) छात्रेषु रचनात्मक-चिन्तनं न पोषयति

Ans : (a)

परिपृच्छा आधारित अधिगमन यह होता है कि छात्रों से प्रश्नों को पूछने को प्रेरित किया जाय। इससे उनकी मौलिक अभिव्यक्ति का ज्ञान होता है और साथ-ही-साथ पठित पाठ की भावगम्यता भी निदर्शित होती है।

Q.30. यत्किञ्चित्पाठयते सदैव एव अवगम्यते यतः

- (a) अनौपचारिक-वार्तालापसमये छात्राः सावधाना भवन्ति
(b) शिक्षकस्य सामाजिकस्तरः, आर्थिकस्तर; भिन्नः भवति
(c) छात्राः भिन्न-योग्यता-व्यक्तित्व-सामाजिकपृष्ठभूमियुक्ताः भवन्ति
(d) कोऽपि अध्यापकः अथवा अधिगन्तकः संस्कृतविषये पूर्णतया न निपुणः

Ans : (c)

छात्राः भिन्न-योग्यता-व्यक्तित्व-सामाजिकपृष्ठभूमियुक्ताः भवन्ति। तात्पर्य-छात्रों की भिन्न-भिन्न योग्यता और व्यक्तित्व सामाजिक पृष्ठभूमि से युक्त होती है।

Q.31. भाववाच्यात्मकक्रियापदस्य उदाहरणमस्ति

- (a) भोजनं खादति (b) लेखं लिखति
(c) नृत्यं करोति (d) हसति

Ans : (d)

भाववाच्यात्मक क्रिया पद का उदाहरण है-हसति। भाववाच्य का अर्थ है-केवल किसी क्रिया का होना दिखाना। यह सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होता है। कर्ता के अनुसार इसके रूप नहीं बदलते, जैसे-तेन भूपते, तैः भूपते, हसति, भूपात इत्यादि।

Q.32. पाठ्यचर्या नाम शिक्षणकार्यक्रमो, यत्र वर्तन्ते

- (a) अध्यापकाः, कर्मचारिणः, मानवसम्पन्मूलानि च
(b) प्रयुक्तयोऽभिलेखनानि च
(c) बोधनोद्देशाः साधिता न वेति मौल्याङ्कनोपायाः
(d) पाठ्यवस्तु, बोधनयुक्तयः, अधिगमनात्मकानुभवाः, आकलनप्रतिमानानि च

Ans : (d)

पाठ्यचर्या नामक शिक्षण कार्यक्रम जिसके अन्तर्गत पाठ्यवस्तु, बोधनयुक्त (ज्ञानात्मक विकास), अधिगमनात्मक अनुभव (अधिगम का अर्थ सीखने से है) तथा आकलन का प्रतिमान इत्यादि आते हैं।

Q.33. व्याकरणबोधनस्योपयोगः

- | | |
|-------------------------------|-----------------------|
| (a) निर्गलभाषणशक्त्यभिवर्धनम् | (b) साक्षरताभिवर्धनम् |
| (c) संख्यावृद्धिः | (d) यथार्थताभिवर्धनम् |

Ans : (d)

व्याकरण के ज्ञान का उपयोग शुद्धता (यथार्थता) में वृद्धि करता है। व्याकरण के द्वारा शब्दों का शुद्ध एवं परिमार्जित ज्ञान की प्राप्ति होती है अतः व्याकरण यथार्थता की वृद्धि करता है।

Q.34. शिशोः सर्वाङ्गीणाभिवृद्धिः द्योतयति

- (a) दैनिक-मानसिक-भावनात्मकसामर्थ्यानां सामरस्येनाभिवृद्धिम्
- (b) छात्रान् बहुशंमन्यान् कर्तुं विशेषशिक्षणम्
- (c) शिशोः स्वाभाविकवृद्धिस्तराणाम् अनुसरणम्
- (d) यस्मिन् कस्मिन्नपि कार्यपरिसरे कार्यं कर्तुं छात्रेभ्यः औद्योगिकशिक्षणप्रदानम्

Ans : (a)

शिशु के सर्वाङ्गीण विकास की अभिवृद्धि यह द्योतित करती है कि छात्र का शारीरिक विकास मानसिक विकास तथा भावनात्मक विकास पर्याप्त रूप से हुआ है वह शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक रूप से समर्थ है। वह सामरिक परिस्थितियों से सामना करने में समर्थ है। अतः सर्वाङ्गीण विकास में इन सबकी वृद्धि होती है।

Q.35. "एकालाप"- द्वारा त्रयाणां उपकौशलानाम् आकलनं क्रियते

- | | |
|--|--|
| (a) भावभङ्गिमा, वक्त्रानुमानम् वक्तुः प्रस्तुतिः | (b) ध्वनिगुणः, शैली, वक्तुः प्रस्तुतिः |
|--|--|

(c) वक्त्रानुमानम्, स्वरलहरी, सन्दर्भः

(d) स्वरलहरी (Tone), ध्वनिगुणः, गतिः

Ans : (d)

एक अलाप द्वारा तीन उपकौशलों का आकलन किया जाता है। वे हैं- पहला स्वर लहरी दूसरा ध्वनि गुण और तीसरा गति।

Q.36. परिप्रश्नेन अधिगमनेन अभिप्रायः अस्ति

- (a) व्याख्यासमये सार्थकध्वनीनां उच्चारणम् (b) व्यवस्थितरूपेण विषयसामग्र्याः प्रस्तुतिः
(c) भाषाशिक्षणार्थं सिद्धान्त-प्रतिपादनम् (d) प्रश्नः समस्यानां समाधानस्य प्रयासः

Ans : (d)

परिप्रश्न से प्रश्न की समस्या का समाधान होता है। इससे प्रश्नगत कथ्य की मूल बातों की सही जानकारी प्राप्त होती है। परिप्रश्न अधिगमन का प्रयोग ही प्रश्नगत समस्या के समाधान करने के प्रयास के रूप में जाना जाता है।

Q.37. अधिकृतश्रवणेन अभिप्रायः अस्ति

- (a) विशिष्टसूचना प्राप्तुम् अवधानपूर्वक-श्रवणम्
(b) सम्भाषणरूपेण अथवा अभिलेखनरूपेण स्वाभाविक सम्भाषण-श्रवणम्
(c) अध्यापक द्वारा उच्चैः पठितसामग्र्याः अथवा सम्भाषित सामग्र्या सावधानश्रवणम्
(d) सा परिस्थितिः यदा श्रवणसत्रे सम्पूर्ण कार्य करोति

Ans : (a)

अधिकृत श्रवण का आशय है- विशिष्ट सूचना प्राप्त करने हेतु बड़ी सावधानी से श्रवण करना। अवधानपूर्वक श्रवण किसी भी सूचना को सम्यक् रूप से ग्रहण करने का सबसे उपयुक्त तरीका है।

Q.38. छात्राणां शब्दावलीज्ञानवर्धनार्थम् अधोलिखितेषु कतमा प्रभावीतमायोजना स्यात्?

- (a) प्रत्येकनवीनशब्दप्रयोगेण सह वाक्यनिर्माणम्
- (b) विपरीतार्थकानां पर्यायवाचिनां च शब्दानां स्मरणम्
- (c) प्रस्तुतसन्दर्भानुसारं नवीनशब्दानाम् अर्थानुमानम्
- (d) प्रत्येकनवीनशब्दार्थ शब्दकोषपरामर्शः

Ans : (c)

छात्रा के शब्दावली ज्ञानवर्धन हेतु प्रस्तुत सन्दर्भ के अनुसार नवीन शब्दों के अर्थ का अनुदान लगाना प्रभावी योजना है।

Q.39. अधोलिखितेषु कतमा उक्तिः उचिता

- (a) कस्याश्चित् भाषायाः ज्ञानं नाम विभिन्नपरिस्थितिषु तस्याः भाषायाः व्यवहारः
- (b) कस्याश्चित् भाषायाः ज्ञानं नाम तस्याः भाषायाः सर्वेषां शब्दानां ज्ञानम्
- (c) कस्याश्चित् भाषायाः ज्ञानं नाम तस्याः भाषायाः शुद्धव्याकरणस्य ज्ञानम्
- (d) कस्याश्चित् भाषायाः ज्ञानं नाम तस्यां भाषायां लेखनस्य ज्ञानम्

Ans : (b)

किसी भाषा के ज्ञान से तात्पर्य उस भाषा के सभी शब्दों के ज्ञान से है क्योंकि शब्द ज्ञान से ही उस भाषा का अर्थग्रहण या समझ विकसित होती है।

Q.40. विद्यार्थिनः भाषाधिगमकृते अधोलिखितेषु कतमः प्रभावीरीत्या अधिकं च समर्थयति?

- (a) पुनः पुनः परीक्षायाः
- (b) सहयोगपूर्णक्रियाकलापानाम्
- (c) व्यक्तिगतकार्याणाम्
- (d) व्यक्तिगतलेखनस्य

Ans : (a)

छात्रों के भाषा अधिगम सर्वाधिक प्रभावी पद्धति बार-बार उनकी परीक्षा लेना है। इससे उनमें अपने पाठ्य विषय के प्रति बराबर लगन बनी रहेगी और सम्यक अध्ययन होता रहेगा।

Q.41. शिक्षकः कक्षायां पाठ्यपुस्तकस्य सक्रियबोधनार्थं प्रेरयितुम् इच्छति। तस्य कृते एतद् महत्त्वपूर्णं यत् छात्राः

- | | |
|-----------------------------------|---|
| (a) पाठ्यपुस्तके उत्तराणि लिखन्तु | (b) शिक्षकेण पृष्ठान् प्रश्नान् ध्यानेन शृण्वन्तु |
| (c) पुस्तिकायां उत्तराणि लिखन्तु | (d) स्वयं प्रश्नान् पृच्छन्तु |

Ans : (d)

शिक्षक कक्षा में पाठ्य पुस्तकों के सक्रिय बोधन हेतु प्रेरित करता है। शिक्षक के लिए तो यह विशेष आवश्यक है कि छात्र स्वयं प्रश्नों को पूछे। ऐसा करने से छात्रों की विषयगत ग्राह्यता स्पष्ट होती है।

Q.42. षष्ठकक्षायाः छात्राः सद्य एव कथाम् एकां पठितवन्तः। शिक्षकः छात्रान् प्रश्नस्य उत्तरं पृच्छति, "किमर्थम् अशोकः गृहात् पलायितः?" अयं प्रश्नः छात्राणां किं कौशलम् अपेक्षते?

- | | |
|---------------------|-----------------------|
| (a) लेखनसमीक्षणस्य | (b) सम्बन्धस्थापनस्य |
| (c) अर्थसम्भावनास्य | (d) पूर्वानुमानकरणस्य |

Ans : (c)

छठी कक्षा का छात्र शीघ्रता से एक कथा पढ़ता है। शिक्षक छात्रों से प्रश्न का उत्तर पूछता है, "अशोक घर से किस कारण भागा? यह प्रश्न छात्रों के अर्थ सम्भावना के कौशल की अपेक्षा करता है।

Q.43. श्रवणं, भाषणं, पठनं लेखनञ्च इत्येतैः सह अपरं भाषाकौशलम् अस्ति

- | | | | |
|---------------|--------------|--------------|------------------|
| (a) व्याकरणम् | (b) चिन्तनम् | (c) अधिगमनम् | (d) सर्जनात्मकता |
|---------------|--------------|--------------|------------------|

Ans : (b)

श्रवण, भाषण, पठन और लेखन के साथ चिन्तन भाषा कौशल भी संलग्न है।

Q.44. भारतीयछात्रस्य कस्याः शिक्षणाय महती आवश्यकता अस्ति ?

- | | |
|----------------------------|----------------------------------|
| (a) मातृभाषायाः | (b) मातृभाषा तथा प्रादेशिकभाषयोः |
| (c) मातृभाषा तथा आङ्ग्लयोः | (d) काः अपि तिस्रः भाषाः |

Ans : (a)

भारतीयछात्रस्य मातृभाषायाः शिक्षणाय महती आवश्यकता अस्ति। अर्थात् भारतीय छात्र के भाषा के विकास के सन्दर्भ में उसकी मातृभाषा के शिक्षण की अत्यधिक आवश्यकता होती है। क्योंकि परिवार छात्र की प्रथम पाठशाला होती है।

Q.45. निम्नलिखितेषु का वा पद्धतिः 'शिक्षणपद्धतिः (Teaching method) उच्यते?

- | | |
|--|-----------------------------------|
| (a) चयनपद्धतिः (Selection method) | (b) रुचिपद्धतिः (Interest method) |
| (c) प्रेरणापद्धतिः (Motivation method) | (d) उपर्युक्तं सर्वमपि |

Ans : (c)

प्रेरणापद्धतिः शिक्षणपद्धतिः उच्यते अर्थात् प्रेरणापद्धति को शिक्षण पद्धति कहा जाता है। जबकि चयनपद्धतिः तथा रुचिपद्धतिः शिक्षण पद्धति नहीं है।

Q.46. निम्नलिखितेषु कतमम् उत्तरं प्रादेशिकभाषाविकासाय समस्या नास्ति इति सूचयति?

- | | |
|-------------------------------------|-------------------------|
| (a) बोधने अस्पष्टता | (b) अनुवादविषयक-समस्याः |
| (c) अस्मिन् विषये जनानां परिचयाभावः | (d) सुविधानाम् अभावः |

Ans : (c)

प्रादेशिकभाषाविकासाय समस्या एतत्माध्यमेन नास्ति अस्मिन् विषये जनानां परिचयाभावः। अर्थात् प्रादेशिकभाषाविकास के सन्दर्भ में छात्र को समस्या नहीं होती क्योंकि वह इस विषय

के सन्दर्भ में लोगों से परिचय रहित रहता है वह केवल अपने सगे सम्बन्धियों एवं स्वमित्रों के सम्पर्क में अधिक रहता है।

Q.47. उत्पादककौशलम् अस्ति

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| (a) सम्भाषणं लेखनं च | (b) श्रवणं पठनं च |
| (c) पठनं लेखनं च | (d) श्रवणं सम्भाषणं च |

Ans : (a)

'उत्पादन कौशल' वह कौशल है जिसके अन्तर्गत सम्भाषण और लेखन को संक्षिप्तित किया जाता है। सम्भाषण और लेखन उत्पादन कौशल के आधारस्तम्भ हैं।

Q.48. कथाश्रवणविधिः शिक्षार्थिनां कृते सहायक भवति

- | | |
|---------------------------------------|---|
| (a) श्रवणमात्रस्य कौशलस्य विकासार्थम् | (b) सम्भाषणमात्रस्य कौशलस्य विकासार्थम् |
| (c) श्रवणसम्भाषणकौशलविकासार्थम् | (d) पठनलेखनकौशलविकासार्थम् |

Ans : (c)

शिक्षण की कुछ विधियाँ होती हैं। जिनमें से 'कथाश्रवण विधि' भी प्रमुख है। यदि विद्यार्थी पर इस विधि का प्रयोग किया जाता है तो इससे विद्यार्थी के श्रवणसम्भाषण कौशल का विकास होता है।

Q.49. अधस्तनेषु कतमः साहित्यस्य उदाहरणम्?

- | | |
|-------------------------------|---------------------------|
| (a) मिष्टान्नस्य निर्माणविधिः | (b) निबन्धः |
| (c) शब्दकोषः | (d) वृत्तपत्रे विज्ञापनम् |

Ans : (b)

साहित्य का उदाहरण 'निबन्ध' पद है। क्योंकि साहित्य का प्राण या इसे साहित्य का स्रष्टा कह सकते हैं।

Q.50. व्याकरणशिक्षण-सम्बद्ध-युक्तियुक्तं परिदृश्यम् किम्?

- (a) व्याकरणनियमानाम् अवगमनार्थम् अन्वेषणार्थं च छात्राः प्रेरणीयाः।
- (b) व्याकरणात्मक-संरचना-अभ्यास-कृते अतिरिक्तानामा अभ्यासानाम् आवश्यकता अस्ति।
- (c) व्याकरण-नियमानां प्रयोगार्थं सम्प्रेषणात्मकानि कौशलानि परिसीमितानि भवन्ति।
- (d) व्याकरण-नियमानां सिद्ध्यर्थं लेखनकौशलाभ्यासः एव समीचीनः उपायः।

Ans : (a)

व्याकरण शिक्षण से सम्बद्ध युक्तियुक्त परिदृश्य व्याकरण नियमों का अवगमन एवं अन्वेषण कर छात्रों को प्रेरित करना है। इससे छात्रों में व्याकरण के प्रति रुचि में भी वृद्धि होती है।

Q.51. 'भविष्यकथनम्' (Prediction) इति उपकौशल केन सम्बद्धम्?

- (a) रूपरेखानिर्माणेन
- (b) सारांशलेखनेन
- (c) टिप्पणलेखनेन
- (d) वाचनेन

Ans : (d)

भविष्यकथनम् अर्थात् भविष्यवाणी उपकौशल वाणी से सम्बद्ध होता है। 'वाचन' भविष्यकथन नामक शैली की प्रमुख विशेषता है।

Q.52. निम्नलिखितेषु किं शब्दावल्याः पाठनप्रक्रियायाः अभिन्नभागः अस्ति?

- (a) विन्यासः
- (b) प्रत्ययाः
- (c) लोकोक्तयः
- (d) उपसर्गाः

Ans : (a)

विन्यास पाठन प्रक्रिया का अभिन्न भाग होता है। जबकि प्रत्यय शब्द के अन्त में और उपसर्ग शब्द के प्रारम्भ में आते हैं।

Q.53. वास्तवीयतात्मकं (Virtual Reality)

- (a) दूरदृश्यागोष्ठी
- (b) संगणकयन्त्रद्वारा प्रगतक्रममेकम्

(c) वीडियोडिस्क

(d) दूरगोष्ठी

Ans : (b)

वास्तवीयतात्मकं है - संगणकयन्त्र द्वारा प्रगतक्रममेकम्। तात्पर्य - संगणक यंत्र द्वारा प्रगति कार्य में एक के बाद एक वास्तविकता को प्रकट करना।

Q.54. चित्रैः अवबोधनम् अत्र परिणामकारी भवति

(a) वाक्कौशलवर्धने

(b) श्रवणकौशलवर्धने

(c) साहित्यकौशलवर्धने

(d) कलाकौशलवर्धने

Ans : (d)

चित्रों का अवलोकन (अवबोधन) कराने से कलाकौशल की वृद्धि होती है। कला के ज्ञान का विकास चित्रों के द्वारा होता है। चित्रों का अवबोध होने से उसके अभ्यास से कला में कुशलता आती है।

Q.55. शिक्षकाः छात्राणं शारीरिकं दण्डनं न कुर्युः यतः

(a) सा अपायकारिणी

(b) सा छात्रेषु मनोभारं भयं चोत्पादयति

(c) सा केवलं शिक्षकाणां भावरचना

(d) सा मातापितरौ क्रोधयति

Ans : (b)

शिक्षकों द्वारा शारीरिक दण्ड छात्रों को नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे छात्रों के मनोभार में भय उत्पन्न हो जाता है। शारीरिक दण्ड देने से छात्र के मन में हमेशा के लिए भय उत्पन्न होता है जिससे शिक्षा पर विपरीत असर पड़ता है।

Q.56. भाषा-अर्जुनदृष्ट्या असम्यक् परिवेषेण अभिप्रायः अस्ति

(a) लक्ष्यभाषायाः प्रयोगः न क्रियते

(b) यदा कदा अनुवादस्य अपि साहाय्यं स्वीक्रियते

(c) कक्षायां छात्राः अपि सक्रियाः भवन्ति

(d) लक्ष्यभाषापाठनसमये मातृभाषायाः प्रयोगः यदा कदा क्रियते

Ans : (a)

भाषा-अर्जुन दृष्टि से असम्यक परिवेश का अभिप्राय दिये गये विकल्पों में सही विकल्प है-
लक्ष्य भाषा का प्रयोग न करना। क्योंकि लक्ष्य भाषा का प्रयोग यहाँ अनुचित होता है।

Q.57. भाषाशिक्षणार्थं महत्वपूर्ण-अवस्था अस्ति

(a) यदा विद्यार्थिनः तार्किक-चिन्तनयुक्ताः भवन्ति

(b) यदा छात्राः अर्थप्राप्त्यर्थं शब्दकोशान् द्रष्टुं समर्थाः भवन्ति

(c) यदा छात्राः प्रश्नान् प्रष्टुं समर्थाः भवन्ति

(d) यदा बालाः भाषार्जने सक्षमाः भवन्ति

Ans : (d)

भाषा शिक्षण की महत्वपूर्ण अवस्था यह है कि जिससे बालक भाषा अर्जन में पूर्ण सक्षम हो।
अर्थात् उनको इस तरह से पढ़ाया जाय कि उन्हें भाषागत जानकारी हो जाए ।

Q.58. भाषा-अर्जनेन सम्बद्धम् अस्ति

(a) व्याकरण-सम्बद्ध-अवबोधनम् विश्लेषणं च

(b) भाषा-परिवेशनिर्माणेन सहजभाषा-अधिग्रहणम्

(c) व्यवस्थानुगुणं पाठ्यपुस्तकपाठनम् येन छात्राः स्वप्रयासैः गृहकार्यं कर्तुं समर्थाः भवेयुः

(d) कण्ठस्थीकरणं पश्चात् आवश्यकशब्दप्रयोगाः च

Ans : (b)

भाषा अर्जन के लिए भाषा परिवेश निर्माण से सहज भाषा अधिग्रहण आवश्यक होता है।
सहजभाषा समझने में सरल होती है।

Q.59. लेखनकौशलविकाससमये शिक्षकः मुख्यतया अवधारयेत्

- | | |
|------------------|----------------------|
| (a) कालमर्यादाम् | (b) सुन्दहस्ताक्षरम् |
| (c) व्याकरणम् | (d) भावाभिव्यक्तिम् |

Ans : (d)

लेखन कौशल के विकास के समय शिक्षक को मुख्य रूप से भावभिव्यक्ति प्रधान होना चाहिए। लेखन कौशल की चाहत, शब्द ज्ञान के साथ-साथ भावों पर आधारित होती है।

Q.60. सारकथनम् एकम्

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (a) लेखनान्तं कार्यम् | (b) पठनपूर्व कार्यम् |
| (c) पठनान्तं कार्यम् | (d) लेखनपूर्व कार्यम् |

Ans : (c)

कतिपय प्रतिपाद्य पढ़ने के बाद उस पर अपनी टिप्पणी लिखना एक सार कथन का भाग है।

Q.61. त्रिभाषासूत्रानुसारं प्रथमभाषा भवेत्

- | | |
|---------------------------------|------------------------|
| (a) आंग्लभाषा | (b) आधुनिक भारतीय भाषा |
| (c) मातृभाषा अथवा प्रान्तीयभाषा | (d) हिन्दीभाषा |

Ans : (c)

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रथम भाषा मातृभाषा अथवा प्रान्तीय भाषा होती है।

Q.62. षष्ठकक्षायाः आंग्लपाठ्यपुस्तके वर्षाजलसंरक्षणोपरि एकः पाठः अस्ति। पाठस्य आरम्भात् पूर्व शिक्षकः छात्रान् लेखितुं निर्दिशति यत् एतस्मिन् विषये ते किं किं जानन्ति किं किं च ज्ञातुम् इच्छन्ति इति। अथ पाठं पठित्वा छात्राः यत् ज्ञातवन्तः तत् लिखन्ति। एवंप्रकारकः पठनविधिः किं कथ्यते?

- (a) अक्षरशः बोधः (Literal Comprehension)

- (b) मेटाकॉग्निशन (Metacognition)
- (c) के-डब्ल्यू-एल विधि (K-W-L Strategy)
- (d) प्रतिदानविधि: (Reciprocal Strategy)

Ans : (c)

छठी कक्षा के अंग्रेजी पाठ्य पुस्तक में वर्षा जल संरक्षण पर एक पाठ दिया गया है। पाठ के आरम्भ के पहले शिक्षक छात्रों को लिखने को निर्देशित करता है कि सम्प्रति विषय में वे क्या-क्या जानते हैं और क्या-क्या जानने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार पाठ पढ़कर छात्र जैसा समझते हैं वैसा लिखते हैं। इस प्रकार की पठन विधि के. डब्ल्यू.एल. विधि कही जाती है। पाठ को पढ़ाने के पश्चात् छात्रों को उस पाठ पर लेख लिखने के लिए कहना 'मेटाकॉग्निशन' कहलाता है। इससे छात्रों के ज्ञान स्तर के विषय में जानकारी प्राप्त हो जाती है।

Q.63. षष्ठकक्षायाः एकः छात्रः एकं पाठं पठति यस्मिन् सः एकस्य शब्दस्य अर्थं न जानाति। तदा तेन

- (a) शब्दः उपेक्षितव्यः
- (b) बुद्धिमत्तया अनुमेयम्
- (c) शब्दकोषः द्रष्टव्यः
- (d) शिक्षकः प्रष्टव्यः

Ans : (b)

छठी कक्षा का एक छात्र एक पाठ पढ़ता है जिसमें वह एक शब्द का अर्थ नहीं जानता। तब वह बुद्धिमानी से उसका चिन्तन करता है।

Q.64. सप्तमकक्षायाः आंग्लभाषायाः शिक्षिका स्वच्छात्राणां मौखिकभाषायां दक्षतां वर्धयितुम् इच्छति। एतदर्थं छात्राणां कृते का पद्धतिः श्रेष्ठा भवेत्?

- (a) कक्षायां वार्तालापं कर्तुं प्रोत्साहनम्
- (b) कक्षायां बोधात्मकप्रश्नानाम् उत्तरप्रदानम्
- (c) आंग्लभाषायां वर्णनात्मककथाः लेखितुं प्रेरयेत्

(d) आंग्लभाषायाः दूरदर्शनकार्यक्रमाणां प्रदर्शनम्

Ans : (a)

सातवीं कक्षा की अंग्रेजी भाषा की शिक्षिका अपने छात्रों को मौखिक भाषा में दक्षता बढ़ाने को सोचती है। इसलिए वह कक्षा में बच्चों को आपस में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

Q.65. रटनाभ्यासकारणेन (Cramming) विद्यार्थिनां विकासे कीदृशक्षतिः (Loss) भवति?

- (a) कक्ष्या अध्यापनक्रमात् ते दूरीकृताः भवन्ति।
- (b) ते अध्ययनोपरि समुचितं ध्यानं दातुम् अशक्ताः भवन्ति।
- (c) तेषां बुद्धिः विकासः न भवति।
- (d) तेषाम् आत्मविश्वासः नष्टः भवति।

Ans : (d)

रटनाभ्यासकारणेन विद्यार्थिनां विकासे क्षतिः तेषाम् आत्मविश्वासः नष्टः भवति अर्थात् विद्यार्थियों के भाषा विकास में रटना प्रक्रिया के द्वारा उनके आत्मविश्वास को नष्ट करता है। जिस कारण बच्चों के भाषा विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

Q.66. भाषायां निरन्तर, समग्रमल्याङ्कनार्थं कस्योपरि बलं देयम्?

- (a) शुद्धोच्चारणम् (Correct pronunciation)
- (b) विभिन्नसन्दर्भेषु भाषाप्रयोगसामर्थ्यम्
- (c) उत्तम-शब्दावली (Correct vocabulary)
- (d) परियोजनाकार्यम् (Project work)

Ans : (b)

भाषायां निरन्तर, समग्रमूल्याङ्कनार्थं विभिन्नसन्दर्भेषु भाषाप्रयोगसामर्थ्यम् बलं देयम्।
अर्थात् - भाषा का निरन्तर समग्र मूल्यांकन विभिन्न संदर्भों में भाषा का उचित प्रयोग करने पर बल देता है।

Q.67. निम्नलिखितस्य कस्य उद्देशस्य अनुसारं भाषाशिक्षणस्य आवश्यकता न भवति?

- (a) आभ्यन्तरस्वरस्य (Inner voice) वाचनार्थ, श्रवणार्थञ्च
- (b) जीवनस्य विविधावश्यकतानां परिपूरणार्थम्
- (c) जीवनस्य विविधदशानां ज्ञानार्थम्
- (d) भाषाबोधस्य (Language comprehension) अध्ययनार्थम्

Ans : (d)

भाषाबोधस्य अध्ययनार्थम् उद्देशस्य अनुसारं भाषाशिक्षणस्य आवश्यकता न भवति। अर्थात् - भाषा बोध के अध्ययन के उद्देशानुसार भाषाशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।

Q.68. भाषाधिगमाधिग्रहणयोः (Language learning and acquisition) मध्ये कः भेदः?

- (a) उभये अधिगमाधिग्रहणे साहजिके
- (b) उभये अधिगमाधिग्रहणे प्रयासजन्ये
- (c) अधिगमः प्रयासजन्यः अधिग्रहणं साहजिकम्
- (d) अधिग्रहणं प्रयासजन्यम् अधिगमः साहजिकः

Ans : (c)

भाषा अधिगम और भाषा अधिग्रहण दोनों के बीच भेद हैं। भाषा अधिगम प्रयास का जनक कहलाती है तथा भाषा अधिग्रहण सहजता (स्वाभाविकता) की जनक कहलाती है। भाषा

अधिगम भाषा का मूल अध्ययन ज्ञान है तथा भाषा अधिग्रहण भाषा का पारिवारिक परिवेश से सम्बन्धित सहज ज्ञान है।

Q.69. प्रथमकक्षायाः छात्राणां कृते भाषायाः पठनार्थम् अधोलिखितेषु कतमः विषयः योग्यतमः भवेत्?

- (a) मम विश्वः (b) परिवहनम् (c) मम देशः (d) मम परिवारः

Ans : (d)

प्रथम कक्षा के छात्रों को भाषा पठन कार्य में 'मम परिवारः' (मेरा परिवार) यह विषय सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।

Q.70. लेखनस्य प्रथमसोपानम् अस्ति

- (a) मार्गदर्शितलेखनम् (Guided writing) (b) प्रगतलेखनम् (Advanced writing)
(c) मुक्तलेखनम् (Free writing) (d) संयतलेखनम् (Controlled writing)

Ans : (a)

लेखन का पहला सोपान विद्यार्थी को लेखनोद्देश्य हेतु मार्गदर्शन रूपी लेखन है

Q.71. 'छात्राः स्वाध्यायार्थं प्रेरिताः भवेयुः' इत्यर्थं कः उपायः समीचीनः?

- (a) भाषाकौशलानां संशोधनार्थं प्रायोजनात्मक कार्यस्य गृहकार्यस्य वा अधिकाधिकम् उपयोगः।
(b) 'छात्राः स्वयमेव निर्णयान् स्वीकुर्युः' इत्यर्थं ते न प्रोत्साहनीयाः।
(c) परस्परं वार्तालापार्थं प्राविधिक-यन्त्राणाम् उपयोगः।
(d) 'छात्राः अधिकाधिकं जिज्ञासवः भवेयुः' इत्यर्थं ते प्रोत्साहनीयाः।

Ans : (d)

छात्रों को स्वाध्याय हेतु प्रेरित होना चाहिए। इसका कौन सा उपाय समीचीन है? इसका सम्प्रति प्रश्नगत सही उपाय यह है कि छात्रों को अधिकाधिक जिज्ञासु होना चाहिए।

Q.72. "भाषण-लेखन-कौशल-सम्बद्ध-निमित्त प्रदत्तप्रतिपुष्टि:प्रभावपूर्ण-शिक्षण-अधिगम-प्रक्रियाणाम् आयोजनञ्च" सम्बद्ध स्तः

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| (a) वार्षिकपरीक्षया | (b) सत्रीय-परीक्षया |
| (c) रचनात्मक-मूल्याङ्कनेन | (d) योगात्मक-मूल्याङ्कनेन |

Ans : (c)

भाषण-लेखन-कौशल-सम्बद्ध निमित्त प्रदत्त प्रतिपुष्टि प्रभावपूर्ण-शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आयोजन रचनात्मक मूल्यांकन से सम्बद्ध है।

Q.73. ध्वनि-संज्ञानेन अर्थावबोधन-प्रक्रिया केन कौशलेन सम्बद्धा?

- | | | | |
|-----------|------------|------------|-------------|
| (a) पठनेन | (b) लेखनेन | (c) भाषणेन | (d) श्रवणेन |
|-----------|------------|------------|-------------|

Ans : (d)

ध्वनि में संज्ञान से अर्थ-अवबोधन प्रक्रिया श्रवण नामक कौशल से सम्बद्ध है।

**Q.74. संस्थासु अन्तःशैक्षणिक संपन्नमूलविनिमयकरणं संवहन तन्त्रज्ञानम्
(Communicative Technology)**

- | | |
|---------------------------|----------------------------|
| (a) इन्ट्रानेट (Intranet) | (b) टेलनेट (Telnet) |
| (c) एरनेट (Ernet) | (d) अन्तर्जालम् (Internet) |

Ans : (d)

संस्थाओं में अन्तःशैक्षणिक - सम्पन्नमूल विनिमयकरण संवहन तन्त्रज्ञान होता है - अन्तर्जालम् (Internet) आन्तरिक शैक्षणिक को सम्पन्न करने के लिए विनिमयकरण करते हैं। अन्तर्जालम् जो पूरे विश्व के ज्ञान को समाहित रखता है।

Q.75. विस्तृतपदानां प्रतीपक्रमः

(a) भारत + यूरोपीय-भारोपीय

(b) प्रयोजक:-अप्रयोजकः

(c) मन्त्रः (संस्कृतम्)-मन्त्रः (हिन्दी)

(d) चोर:-चुरति

Ans : (b)

विस्तृतपदानां प्रतीपक्रमः का प्रयोग प्रयोजक तथा अप्रयोजक के लिए किया गया है। प्रयोजक उसे कहते हैं जो आयोजनकर्ता होता है। किसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए जो कार्य करता है उसे प्रयोजक कहते हैं।

Q.76. सम्प्रेषणात्मकभाषाशिक्षणे उपयोगरूढिशब्दौ यथासंख्यम् एतत् सूचयतः

(a) कोशस्योपयोगम् अर्थ च

(b) अर्थ रूपं च

(c) ध्वनिशास्त्रं व्याकरणं च

(d) व्याकरणं ध्वनिविज्ञानं च

Ans : (c)

सम्प्रेषणात्मक भाषा शिक्षण में उपयोगी रुढ़ि शब्द ध्वनि शास्त्र एवं व्याकरण को सूचित करती है। व्याकरण के अभ्यास द्वारा संस्कृत पढ़ाई जाती है। ध्वनि शास्त्र का ज्ञान कराया जाता है। ये दोनों रुढ़ि शब्द सम्प्रेषणात्मक भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी हैं।

Q.77. शिक्षासम्बद्ध-मूलभूताधिकारःसंविधानस्यानेन परिष्करणेन कार्यान्वयी कृतः

(a) संविधानस्य त्र्यशीतितमेन परिष्करणेन

(b) संविधानस्य षड्शीतितमेन परिष्करणेन

(c) संविधानस्य त्रिनवतितमेन परिष्करणेन

(d) संविधानस्य षण्णवतितमेन परिष्करणेन

Ans : (c)

शिक्षा से सम्बन्धित मूलभूत अधिकार संविधान के 93वें संविधान संशोधन में स्वीकृत किया गया था। अर्थात् 93वें संविधान संशोधन में शिक्षा को मूलाधिकार के अन्तर्गत शामिल किया गया।

Q.78. वाक्कौशलं संवर्धयितुम् उत्तमोपायाः

- | | |
|--------------------------------------|---------------------------------------|
| (a) वास्तवजीवनसन्दर्भेषु संवहनम् | (b) अध्यापकदत्तप्रतिमानानां श्रवणम् |
| (c) सम्भाषणे सर्वथा दोषाणां परिहरणम् | (d) आह्वानयुक्तकिलिष्टतरपाठानां पठनम् |

Ans : (c)

वाक् कौशल को बढ़ाने के लिए (संवर्धित करने के लिए) सबसे उत्तम उपाय सम्भाषण से होता है जो सर्वथा दोषों का अपहरण करता है अर्थात् भाषण वाक् कौशल के लिए अत्यन्त उपयोगी है जो दोषों को दूर करता है।

Q.79. सारांशं लेखितम् आवश्यके द्वे कौशले स्तः।

- | | |
|--|--|
| (a) स्वशब्दैः पाठ्यवस्तुनः पुनर्लेखनम् | (b) शब्दानां स्थाने संकेतानां प्रयोगः सम्यक्लेखनम् |
| (c) सम्यक् लेखने योजकानां प्रयोगः | (d) मुख्यं सामान्यं च बिन्दु-संज्ञानम् |

Ans : (d)

सारांश लेखन के लिए दो कौशल आवश्यक होते हैं। वे हैं- सामान्य और प्रमुख बिन्दुओं का संज्ञान। मुख्य सामान्य में संपूर्ण रूप से बोधगत स्तर पर लिखा जाता है।

Q.80. लेखनं भाषणात् भिन्नं अस्ति

- | |
|--|
| (a) लेखने गतिविधि-आधारित-प्रवाहः अधिकं भवति |
| (b) लेखने व्याकरणात्मक-संरचनायाः अधिक-सम्बन्धः न भवति |
| (c) लेखनं प्रायः मुक्तं भवति |
| (d) लेखने पुनरावृत्त्या अथवा संक्षेपीकरणस्य न्यूनता भवति |

Ans : (d)

लेखन भाषण से पृथक् होता है। लेखन में पुनरावृत्ति अथवा संक्षेपीकरण की न्यूनता होती है। भाषण में पुनरावृत्ति तथा संक्षेपीकरण दोनों की संभावना रहती है।

Q.81. प्राथमिकस्तरे वाचनक्षमतायाः आकलनार्थं प्रभावशाली विधिः अस्ति

(a) शब्दार्थमधिकृत्य भाषाक्रीडा

(b) पठितसामग्रीमधिकृत्य साक्षात्कारः

(c) सारलेखन-सम्बद्धं प्रायोजनात्मकं कार्यम्

(d) कथाधारितं लिखितं कार्यम्

Ans : (a)

प्राथमिक स्तर पर वाचन क्षमता के आंकलन के लिए प्रभावशाली विधि शब्दों के अर्थ को ग्रहण कर भाषागत क्रीड़ा करना है।

Q.82. प्रत्येकभाषायाः लिपिः वर्तते। इयम् उक्तिः

(a) अंशतः असत्यम्

(b) असत्यम्

(c) सत्यम्

(d) अंशतः सत्यम्

Ans : (c)

प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। यह उक्ति सत्य है जैसे हिन्दी की अपनी देवनागरी लिपि है।

Q.83. शालिनी एकस्य पुस्तकस्य पृष्ठेषु दृष्टिं निक्षिपति। एवं सा किं करोति?

(a) चित्राणाम् अवलोकनं करोति

(b) गम्भीरतया अध्ययनं करोति

(c) पर्यालोचनं करोति।

(d) विशेषसूचनार्थम् अन्वेषणं करोति

Ans : (b)

शालिनी एक पुस्तक के पृष्ठ पर अपनी दृष्टि गम्भीरता से रखती है। इसका आशय यह कि वह गम्भीरता से अध्ययन करती है।

Q.84. प्रत्येकभाषायाः विशिष्टध्वनयः संरचना शब्दावली च सन्ति। भाषायाः एवं विधं वैशिष्ट्यं सूचयति यत्

(a) भाषा प्रजातिविशिष्टा वर्तते

(b) भाषा यादृच्छिकी वर्तते ।

(c) भाषा एकः कौशलविषयः वर्तते

(d) भाषा एका व्यवस्था वर्तते

Ans : (d)

प्रत्येक भाषा की विशिष्ट ध्वनियां और शब्दावली संरचना होती है। यह भाषा की यह विशिष्टता सूचित करती है कि भाषा एक व्यवस्था है। व्यक्ति का भाषा से समुचित विकास होता है।

Q.85. कक्षायां छात्राणां कृते कवितावाचनस्य प्रमुखं प्रयोजनम्

- (a) कविता प्रति स्वप्रतिक्रियाप्रदर्शनम्
- (b) साहित्यिकविचाराणाम् अवगमनम्
- (c) बिम्बचित्रस्य (imagery) अन्त्यानुप्रासस्य (rhyme) अवगमनम्
- (d) कवेः ऐतिहासिकपृष्ठभूमेः परिज्ञानम्

Ans : (a)

कक्षा में छात्रों के कविता वाचन का प्रमुख प्रयोजन कविता के प्रति स्व प्रतिक्रिया प्रदर्शन है। इससे छात्रों में कविता के प्रति रुचि बढ़ती है।

Q.86. लेखनम् एका प्रक्रिया इति मन्यते चेत, किं नास्ति अत्यावश्यकः भागः?

- (a) मूल्याङ्कनम्
- (b) सम्पादनम्
- (c) प्रारूपनिर्माणम्
- (d) पुनरवलोकनम्

Ans : (a)

लेखन एक प्रक्रिया है, ऐसा माना जाता है। मूल्यांकन इसका अत्यावश्यक भाग नहीं माना जाता। जबकि सम्पादन, प्रारूपनिर्माण और पुनरावलोकन लेखन प्रक्रिया के भाग हैं।

Q.87. चौमस्की-मतानुसारं मनुष्याः जन्मगतभाषाग्रहणसाधनं धारयन्ति येन तेषु उत्पद्यते

- (a) जटिलशब्दाः (Complex words)
- (b) वर्णविचारः (Phonemes)
- (c) अर्थविचारः (Semantics)

(d) साधारणव्याकरणम् (Universal grammar)

Ans : (d)

चौमस्की के मतानुसार मनुष्य जन्मगत भाषा ग्रहण साधन धारण करते हैं। जिससे उनमें साधारण व्याकरण उत्पन्न होता है और जन्मवत् भाषा ग्रहण ही वास्तविक व्याकरण जानने का आधार होती है।

Q.88. अधस्तनेषु कतमम् उत्तरं मातृभाषाशिक्षणोपयोगि ज्ञानलक्ष्येषु अन्यतमं नास्ति?

- (a) उच्चारणस्य ज्ञानार्जनम् (b) भाषागतविभिन्न प्रकारकाणां लेखानां ज्ञानार्जनम्
(c) भाषातत्त्वानां प्रभूतज्ञानप्राप्तिः (d) विषयवस्तुनः ज्ञानार्जनम्

Ans : (d)

मातृभाषाशिक्षणोपयोगि ज्ञानलक्ष्येषु, उच्चारणस्य ज्ञानार्जनम्, भाषागतविभिन्न प्रकारकाणां लेखानां ज्ञानार्जनम् तथा भाषातत्त्वानां प्रभूतज्ञानप्राप्तिः अस्ति। अर्थात् मातृभाषा शिक्षण के उपयोगी उपकरण उच्चारण का ज्ञानार्जन, भाषागत अनेक प्रकार के लेखन एवं ज्ञानार्जन तथा भाषा तत्त्वों का प्रभूत ज्ञान ये सभी तत्त्व बहुत जरूरी होते हैं। जबकि विषयवस्तु का ज्ञानार्जन आवश्यक नहीं है। अतः विकल्प (d) भाषा शिक्षण के ज्ञान से सम्बन्धित नहीं है।

Q.89. भाषायां मूल्याङ्कनस्य मुख्य-उद्देश्यः कः स्यात् ?

- (a) विद्यार्थिसाधित-उपलब्धीनाम् आकलनम्
(b) अधिगमे त्रुटीनां निरीक्षणं तथा न्यूनता परिष्करणम्
(c) शिक्षार्थिषु त्रुटीनाम् अन्वेषणम्
(d) विद्यार्थिनां प्रदर्शनं दृष्ट्वा प्रोन्नति (Promotion) कृते निर्णयः

Ans : (b)

भाषायां मूल्याङ्कनस्य मुख्य उद्देश्यः अधिगमे त्रुटीनां निरीक्षणं तथा न्यूनता परिष्करणम्। भाषा के मूल्याङ्कन का मुख्य उद्देश्य अधिगम की त्रुटियों का निरीक्षण करना और उसका गहनता से परीक्षण करना। भाषा का मूल्याङ्कन तभी समुचित प्रकार से हो सकता है। जब हम उसमें व्याप्त छोटी-सी छोटी कमी को खोज सकें।

Q.90. यः शिक्षकः छात्रान् अधिकं बाल साहित्यं पठितुं प्रेरयति सः छात्राणां

- | | |
|------------------------------------|----------------------------------|
| (a) सम्भाषणकौशलं वर्धयितुम् इच्छति | (b) श्रवणकौशलं वर्धयितुम् इच्छति |
| (c) पठनकौशलं वर्धयितुम् इच्छति | (d) लेखनकौशलं वर्धयितुम् इच्छति |

Ans : (c)

शिक्षक यदि शिक्षण के समय बालसाहित्य के प्रति बालकों के रुझान को अधिकाधिक प्रेरित करता है तो इससे बालक के पठन कौशल का विकास तीव्र होता है। क्योंकि प्राथमिक स्तर का बालक बाल साहित्य में रुचिकर प्रवृत्ति को दिखाता है।

Q.91. सततसमग्रमूल्याङ्कनं सङ्केतयति

- | | |
|-------------------------------------|--|
| (a) अन्तिममूल्याङ्कनम् | (b) विद्वत्तायाः तत्सम्बन्धितः च |
| (c) सर्वविद्याविषयाणां मूल्याङ्कनम् | (d) सहपाठ्यक्रियाकलापानां मूल्याङ्कनम् |

Ans : (b)

निरन्तर सम्पूर्ण मूल्यांकन व्यक्ति के उसकी विद्वत्ता से सम्बन्धित ज्ञान ही होता है। अर्थात् मूल्यांकन कर्ता किसी इष्ट का मूल्यांकन कार्य करता है और उसमें सफल होता है तो वह कार्य उस कर्ता का ज्ञान-विज्ञान (विद्वत्ता ज्ञान) कहलाता है।

Q.92. उद्गामीसाक्षरतायाम् (Emergent literacy) अधस्तनेषु कस्य क्रियाकलापस्य सन्निवेशः भवति?

- | |
|--|
| (a) वर्णमालायाः अक्षरलेखनम् (Writing letters and alphabet) |
| (b) पठनं कूटानुवादः च (Reading and decoding) |

(c) लेखनीघर्षणम् अस्पष्टशब्दोच्चारणं च (Scribbling and blabbering)

(d) गायनं नृत्यच्च (Singing and dancing)

Ans : (c)

लेखनीघर्षणम् (लेखनी का हिल-डुल कर चलना) अस्पष्ट शब्दोच्चारणम् इत्यादि उद्गामी साक्षरतायाम् को बताते हैं।

Q.93. येषां बालानां भाषाविकासः विलम्बितः भवति तेयाम् अभिप्रेरणार्थं कः गतिविधिः समीचीनः?

(a) भाषाचिकित्सकानां भाषणानि।

(b) अध्यापकैः पुनः पुनः उपयुक्त-उत्तराणां प्रदानम्।

(c) छात्राणां सम्भाषणस्य सङ्ग्रहणं विश्लेषणम् च।

(d) परस्परं सम्भाषणार्थं प्रोत्साहनम्।

Ans : (d)

ऐसे बालक जिनका भाषा विकास विलम्बित होता है, उन्हें अभिप्रेरणा सम्बन्धी परस्पर सम्भाषण हेतु प्रोत्साहन की गतिविधि समीचीन है।

Q.94. अत्यधिक-नियन्त्रितायाम् एवञ्च परिसीमित लक्ष्यकेन्द्रितकक्ष्यायां भाषाभ्यासैः किम् अवगम्यते?

(a) संरचना-केन्द्रित-अभ्यासाः, रिक्तस्थानपति-सम्बद्ध-अभ्यासाः।

(b) भूमिकानिर्वहण-नाट्य-गतिविधियुक्त-कक्ष्या।

(c) परिचर्चा-संवाद-युक्ता कक्ष्या।

(d) अधिगत-शब्दावल्याः सहयोगेन स्वाध्ययनम्।

Ans : (a)

अत्यधिक नियंत्रण एवं परिसीमित लक्ष्य केन्द्रित कक्षा में भाषा अभ्यास से संरचना केन्द्रित अभ्यास और रिक्त स्थान पूर्ति सम्बद्ध अभ्यास का अवबोधन होता है।

Q.95. अवगमनसन्दर्भ लोककथासाहित्य-वाचनस्य तथ्यात्मक साहित्य-वाचनस्य च मध्ये भेदः अस्ति। लोककथासाहित्यवाचनदृष्ट्या छात्रैः किम् अपेक्ष्यते?

- (a) अधिकं बौद्धिकविश्लेषणं न्यूनी च भावात्मक-प्रतिक्रिया
- (b) अधिकं बौद्धिकविश्लेषणम्
- (c) न्यूनी-भावात्मक-प्रतिक्रिया
- (d) शैलीगत-प्रशंसा लेखकस्य च भावमूल्याङ्कनम्।

Ans : (d)

अवगमन सन्दर्भ में लोककथा साहित्य, वाचन और तथ्यात्मक साहित्य के बीच भेद है। लोककथा साहित्य में वाचन की दृष्टि से छात्रों से शैलीगत प्रशंसा और लेखक के भाव का मूल्यांकन अपेक्षित होता है।

Q.96. पदद्वय समस्यपदस्य उदाहरणम्

- (a) रामश्च कृष्णश्च
- (b) वातनियन्त्रणम्/करदाता
- (c) तैलकूपः/मुद्रणकर्गजम्
- (d) शिरोवेदना/वर्षापातः

Ans : (a)

पदद्वय समस्यपदस्य उदाहरणम् - रामश्च कृष्णश्च। यह द्वन्द्व समास का इतरेतर द्वन्द्व समास है। जिस समास में दोनों पदों में 'और' का अर्थ निकलता हो तथा समस्त पद में अन्तिम शब्द के लिंग के अनुसार लिंग का प्रयोग हो तो शब्दों की संख्या के अनुसार अन्त में वचन का प्रयोग होता हो अर्थात् दो वस्तुएँ हों, द्विवचन और अधिक वस्तुएँ हों, तो बहुवचन। इस समास में विग्रह करने पर प्रत्येक शब्द के बाद च लगता है। रामश्च कृष्णश्च का समस्तपद रामकृष्णौ होगा।

Q.97. भाषाशिक्षणे नियन्त्रणं नाम

- (a) लक्ष्यभाषायाः निरर्गलोपयोगः (b) परिवीक्षित-भाषाशिक्षणम्
(c) उपाध्यायनियन्त्रित-भाषाशिक्षणम् (d) यथार्थतां निर्धारयितुं व्याकरणस्योपयोगः

Ans : (d)

भाषा शिक्षण में नियन्त्रण का नाम इस प्रकार है “यथार्थतां निर्धारयितुं व्याकरणस्योपयोगः” अर्थात् यथार्थता निर्धारण करने के लिए व्याकरण का उपयोग किया जाता है।

Q.98. इतिवृत्ताभिलेखनस्योपयोगः

- (a) शैक्षणिकक्षेत्राणां प्रशस्यता
(b) जीवनस्य अभिवृत्तीनां मौल्यानां जीवनकौशलानाम् आकलनम्
(c) छात्राणां क्रियात्मकावश्यकतानां विश्लेषणम्
(d) भाषिकनैपुण्याकलने सहाय्यम्

Ans : (b)

इतिवृत्त अभिलेखन का उपयोग मौलिक जीवन में कुशलता के आंकलन से सम्बन्धित है।

Q.99. पठनपूर्वकार्यस्योद्देशः

- (a) कठिनानां शब्दानां पदपुञ्जानां च अर्थनिर्धारणम् (b) छात्राणां पठनकौशलमौल्याङ्कनम्
(c) पाठे व्याकरणांशानां विवरणम् (d) मुख्यविषयप्रस्तुतौ छात्राणां प्रेरणम्

Ans : (d)

पठनपूर्ण कार्य का उद्देश्य मुख्य विषय को प्रस्तुत करना होता है जिससे छात्रों को प्रेरणा मिल सके। अतः पठन से पहले यदि प्रमुख विषय का परिचय हो तो इससे छात्रों को प्रेरणा मिलती है।

Q.100. "छात्राः पाठ्यवस्तुनः भावम् अवगन्तुं समर्थाः सन्ति न वा, शब्दार्थान् अधिगन्तुं समर्थाः सन्ति न वा शब्दार्थं ज्ञातुम् अन्वेषणं कर्तुं समर्थाः असमर्थाः वा" इत्यर्थं कृतप्रयासाः केन सम्बद्धाः सन्ति।

- | | |
|--|-----------------------------|
| (a) मूलतथ्यं ज्ञातुं श्रवणात्मक-मूल्याङ्कनेन | (b) पठन-अवबोधन-मूल्याङ्कनेन |
| (c) संवेगात्मक-प्रतिक्रियात्मक-मूल्याङ्कनेन | (d) विचारोद्घाटनेन |

Ans : (b)

छात्र पाठ्यवस्तु के भावों को जानने में न तो समर्थ है, न तो शब्दों के अर्थ को समझने में समर्थ है और न ही शब्दार्थ को जानने व अन्वेषण करने में समर्थ अथवा असमर्थ है। यह भाव पठन-अवबोधन एवं मूल्यांकन से सम्बन्धित है।

Q.1. नाट्यं पाठयितुं किम् उत्कृष्टम्?

- (a) कथां व्याकरणं व अधिकृत्य विशिष्टप्रश्नावल्याः द्वारा छात्रपरीक्षणम्
- (b) कथायाः भावम् अवगन्तुं नाटकस्य मौनवाचनम्
- (c) छात्रैः भावानुगुणं नाटकस्य अभिनयनम्
- (d) नाटकम् अधिकृत्य प्रश्नोत्तरम्

Ans : (c)

नाटक पढ़ते समय सबसे जरूरी है कि छात्रों द्वारा भाव का अनुगणन होना चाहिए एवं नाटक का अभिनय भी यथा भाव निर्दिष्ट सम्यक होना चाहिए।

Q.2. 'द्वितीयभाषाशिक्षणसन्दर्भे छात्राः प्रदत्त-निर्देशान् अनुपालयितुं सक्षमाः भवेयुः' इत्यस्य मूल्याङ्कनार्थं किम् आवश्यकम्?

- (a) निर्देशानां विश्लेषणम्
- (b) अनुपालनीय-निर्देशानुगुणं भविष्यकथनम् (Prediction)
- (c) परिचर्चायां भागग्रहणम्

(d) प्रदत्तनिर्देशानां संरक्षणं प्रत्यस्मरणम् च

Ans : (d)

द्वितीय भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में छात्रों को दिये गये आदेश का पालन करने में समर्थ होना चाहिए। इस मूल्यांकन के लिए आवश्यक है- दिये गये निर्देशों का संरक्षण करना और उसका स्मरण करना।

Q.3. भाषायाः प्राथमिकरूपम् अस्ति

(a) लिखितभाषा

(b) मौखिकभाषा

(c) सङ्केतभाषा (Sign language)

(d) व्याकरणम्

Ans : (c)

भाषायाः प्राथमिकरूपम् सङ्केतभाषा अस्ति। भाषा का प्राथमिकरूप सांकेतिक भाषा है। व्यक्ति जब कुछ सीखना व जानना चाहता है तो पहले उसे संकेत के माध्यम से ही सिखाया जाता है। और फिर वह बोलने लगता है और अन्त में वह लिखना भी सीख जाता है।

Q.4. भाषायाः उपचारात्मकशिक्षणस्य (Remedial teaching) उद्देश्यः कः?

(a) विद्यार्थिनां प्रारम्भिकटीनां निवारणम्

(b) ज्ञानसम्बन्धित्रुटीनां परिष्करणम्

(c) विद्यार्थिषु आत्मविश्वासभावनायाः विकासः

(d) उपर्युक्तं सर्वमपि

Ans : (d)

अर्थात् - ये सभी भाषा के उपचारात्मकशिक्षण के उद्देश्य हैं - विद्यार्थियों के प्रारम्भिक त्रुटियों का निवारण करना, ज्ञान सम्बन्धी त्रुटियों का परीक्षण करना तथा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना को विकसित करना।

Q.5. एकः शिक्षकः 'बी' कक्षायाः ओडियाभाषीछात्रान् आंग्लभाषां शिक्षयति। तस्य कृते सः ओडियाभाषायाः भिन्नभिन्नप्रकारवाक्यानाम् आंग्लभाषायाम् अनुवाद कारयति। एतेन मार्गेण अधोगतकथनेषु किम् उचितम्?

- (a) एतेन रूढ्यात्मक-प्रयोगे समस्या भवति (Idiomatic expression)
- (b) आंग्लभाषायां सहजदक्षता लभ्यते
- (c) एषः मार्गः प्राथमिककक्षाणां कृते उचितः, न तु माध्यमिककक्षाणां कृते
- (d) एषः सम्प्रेषणात्मकः मार्गः वर्तते

Ans : (c)

एक शिक्षक 'बी' कक्षा में उड़ीसा भाषी छात्रों को अंग्रेजी शिक्षा देता है। वह इसके लिए उड़ीसा भाषा के भिन्न-भिन्न प्रकार के वाक्यों को अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करता है। ऐसा करना प्राथमिक कक्षा के छात्रों के लिए उचित है।

Q.6. प्राथमिकविद्यालयस्य शिक्षकः छात्रैः स्वपरिचितभाषया परिवारस्य तथा मित्राणां विषये कथोपकथनार्थम् अनुमति ददाति। तत्र शिक्षकस्य मुख्यम् उद्देश्यम् भवति

- (a) छात्राणां सामान्यज्ञानवर्धनम्
- (b) बहुभाषिकतां साधनरूपेण प्रयोगः
- (c) छात्राणां विषये समुचितं ज्ञानम्
- (d) छात्राणां सौविध्यम्

Ans : (b)

प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक छात्रों से भाषा परिवार एवं मित्रों के विषय में कथोपकथन की अनुमति देता है। उस शिक्षक का प्रमुख उद्देश्य बहुभाषिकता के साधन रूप का प्रयोग करना है।

Q.7. छात्राः गरुडविषये एकां कवितां पठितुम् आरभन्ते। पठनात् पूर्व शिक्षकस्य महत्त्वपूर्ण कार्यम् अस्ति

- (a) छात्रान् प्रति कठिनशब्दानाम् अर्थज्ञानाय कथनम्

- (b) गरुडविषये छात्रान् प्रति चर्चायाः कृते कथनम्
- (c) कवितायां विद्यमानान् कठिनशब्दान् रेखाङ्कितान् कर्तुं छात्रान् प्रति कथनम्
- (d) कवेः विषये अधिकं विवरणं छात्रेभ्यः दातव्यम्

Ans : (b)

छात्र गरुड विषय पर एक कविता पढ़ना शुरू करते हैं। पढ़ने से पूर्व शिक्षक का महत्वपूर्ण कार्य यह होना चाहिए कि वह गरुड विषय की कथा को छात्रों के बीच भलीभांति समझा दे।

Q.8. बहुभाषिकतायाः उपयोगः साधनरूपेण अनिवार्यतया क्रियते, येन

- (a) बहुभिः भाषाभिः बालाः अधिगमं कुर्युः
- (b) बालाः बहूनां भाषाणाम् अधिगमं कुर्युः
- (c) शिक्षिका बहूनां भाषाणाम् अधिगमं कुर्यात्
- (d) प्रत्येकबालः सौविध्ययुतः स्वीकृतः च इति अनुभवति

Ans : (d)

बहुभाषिकता का उपयोग साधन रूप से अनिवार्यतः प्रत्येक बालक सौविध्य रूप से स्वीकृत भावों का अनुभव करता है।

Q.9. भाषाशिक्षणे नैदानिकपरीक्षाया उद्देश्यम् अस्ति

- (a) शिक्षार्थिनां बोधे अभावं ज्ञातुम्
- (b) अभिभावकेभ्यः प्रतिपुष्टि प्रदातुम्
- (c) छात्राणं प्रगतिविवरणपत्रं पुरयितुम्
- (d) अन्तिममूल्याङ्कनकृते प्रश्नपत्रनिर्माणं योजनां च कर्तुम्

Ans : (a)

भाषा शिक्षण में नैदानिक परीक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थियों के प्रबोध के अभाव की जानकारी करना।

Q.10. रचनात्मकतावादस्य (Constructivism) सिद्धान्तोऽयं चत् भाषाशिक्षार्थी वर्तते

(a) ज्ञानस्य पुनः प्रस्तुतिकर्ता

(b) ज्ञानस्य ग्रहणकर्ता

(c) ज्ञानस्य निर्माणकर्ता

(d) शिक्षकस्य अनुसरणकर्ता

Ans : (a)

रचनात्मकतावाद सिद्धान्त यह है कि भाषा शिक्षार्थी ज्ञान का पुनः प्रस्तुतिकर्ता होता है जिससे नवीनता का विकास होता है।

Q.11. सृजनात्मकपठनस्य उदाहरणम्

(a) सम्बद्धसूचनार्थ अन्तर्जालदर्शनम्

(b) भिन्नदृष्टिकोणेन नाटकीकरणं भूमिका निर्वहणम् पुनर्लेखनं च

(c) अर्थप्राप्त्यर्थं वाचनम्

(d) परामर्शनकार्यं ग्रन्थालये अधिकं करणीयम्

Ans : (b)

सृजनात्मक पठन का उदाहरण भिन्न दृष्टिकोण से नाटकीकरण की भूमिका का निर्वहन और पुनर्लेखन है। सृजनात्मक पठन से व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास सम्भव होता है।

Q.12. श्रवणप्रेरकेन अभिप्रायः अस्ति

(a) निर्दिष्टसूचनानुगुणं छात्रवर्गीकरणम्

(b) समीक्षाटिप्पण्यर्थं श्रवणम्।

(c) कार्यस्य पूर्णतायाः प्रस्तुतेः च कृते छात्राणां श्रवणकौशलस्य क्षमतायाः विकासः

(d) श्रुतसामग्र्याः अवबोधनार्थं छात्रवर्गीकरणम्

Ans : (c)

श्रवण प्रेरक का अभिप्राय है- कार्य की पूर्णतया प्रस्तुति और छात्रों में श्रवण कौशल की क्षमता का विकास। इससे छात्रों में किसी भी विषय को समझने में सरलता रहती है।

Q.13. विशिष्ट-आवश्यकता-कक्ष्या इति सम्बद्धा भवति

- | | |
|--------------------------------------|---|
| (a) पृथक् व्यवस्थित-कक्ष्यया | (b) सुसज्जित-कक्ष्या-व्यवस्थया |
| (c) अतिरिक्त -अध्यापकयुक्त-व्यवस्थया | (d) विभिन्नयोग्यतायुक्तच्छात्र-कक्ष्यया |

Ans : (d)

विशिष्ट आवश्यकता कक्षा विभिन्न योग्यता युक्त छात्र की कक्षा से सम्बद्ध होता है। यह विदित है कि किसी भी कक्षा में छात्रों की योग्यता भिन्न-भिन्न होती है।

Q.14. उच्चप्राथमिकस्तरे पठनकौशलं परीक्षितुम् उत्तमोपायः

- (a) निगदितपाठ्यपुस्तकोपयोगः
- (b) कठिनतमपाठानुच्छेदानाम् उपयोगः
- (c) उचितकाठिन्यस्तरणां अदृष्टपूर्वाणाम् अनुच्छेदानाम् उपयोगः
- (d) अभिजातकाव्यानामेव संग्रहस्योपयोगः

Ans : (c)

उच्च प्राथमिक स्तर पर पठनकौशल के परीक्षण का सबसे उत्तम उपाय है-उचित एवं कठिन स्तरों का अदृष्टपूर्ण एवं अनुच्छेदों का उपयोग किया जाता है।

Q.15. पाठ्यस्य सवेगपरिसर्पणं नाम

- (a) निर्दिष्टसूचनान्वेषणम्
- (b) पाठ्यवस्तुनः प्रमुखोद्देशं द्रष्टुं शीघ्रावलोकनम्
- (c) असम्बद्धसूचनात्यजनम्
- (d) मन्दं मन्दं सावधानं च पाठ्यस्य पठनम्

Ans : (c)

पाठ के संवेगपरिसर्पण का नाम इस प्रकार है असम्बद्धसूचनात्यजनम् अर्थात् पाठ में जो भी सूचनाएं उससे असम्बद्ध हो अर्थात् उस पाठ से सम्बन्ध न रखती हो उनका परित्याग कर देना चाहिए। इसे ही पाठ का सवेगपरिसर्पण कहा गया है।

Q.16. छात्राः भाषाम् अधिग्रहणन्ति एवम्

- (a) भाषासंरचनाविश्लेषणेन
- (b) भाषासाहित्याध्ययनेन
- (c) तस्याः भाषायाः वाग्मिनां विषये ज्ञानप्राप्त्या
- (d) सहजान्तः क्रियापरिसरे भाषोपयोगेन

Ans : (b)

छात्र भाषाओं का अधिग्रहण करते हैं एवं भाषा साहित्य के अध्ययन के लिए भी भाषाओं का अधिग्रहण करते हैं।

Q.17. व्याकरणशिक्षणसन्दर्भे भ्रान्तिपूर्णा पूर्वधारणा अस्ति

- (a) समृद्धः-साहित्यिक-परिवेशे एवञ्च भाषिक-परिवेशे अपि व्याकरणस्य जटिल-नियमाः अधिग्रह्यन्ते।
- (b) वाचनद्वारा अथवा लेखनद्वारा व्याकरणात्मकानां विकल्पानां विस्तरणम् उत्तमरूपेण भवति।
- (c) व्याकरणतत्त्वानां शिक्षणं पृथक्पेण कृत्वा भाषणं लेखनं वा पाठयितव्यम्।
- (d) छात्रैः कृत-त्रुटीनां संशोधनात्मक-प्रक्रियया अपि लाभः भवति।

Ans : (c)

व्याकरण तत्त्वों का शिक्षण पृथक् रूप से करके भाषण और लेखन करना चाहिए। निश्चय ही व्याकरण शिक्षण के सन्दर्भ में यह भ्रान्तिपूर्ण अवधारणा है।

Q.18. कस्मिन् अपि पाठ्यवस्तुनःसन्दर्भे 'मूल्यम्' इति शब्देन कः अभिप्रायः?

- (a) शब्दस्य सन्दर्भगत-अर्थ-अभिव्यञ्जना (b) विशिष्ट-सन्दर्भे शब्दप्रयोगः
(c) शब्दस्य विभिन्नप्रकारकः प्रयोगः (d) शब्दस्य शब्दकोशीयः अर्थः

Ans : (a)

शब्द सन्दर्भगत और अर्थ अभिव्यञ्जना किसी भी पाठ्यवस्तु के सन्दर्भ में सही अभिप्राय निदर्शित करता है।

Q.19. निम्नलिखितेषु किं चतुष्टयं भिन्नप्रकारकं वाचनम्?

- (a) विहगावलोकनम्, अवलोकनम्, अन्वेषणम्, उद्घाटनम्
(b) प्रसन्नता, सूचना, विस्तृतवर्णनम्, विहगावलोकनम् (Skimming)
(c) अन्वेषणम्, उद्घाटनम् अवलोकनम्, व्यापकम्,
(d) विहगावलोकनम्, अवलोकनम् (Scanning), व्यापकम्, गहनम् (intensive)

Ans : (d)

उक्त वाक्यों में चतुष्टय भिन्न प्रकार का वाचन विहगावलोकनम्, अवलोकनम्, व्यापकम् और गहनम् है। इन सब के वाचन में भिन्नता होती है।

Q.20. शिक्षाधिकाराधिनियमानुसारं (RTE) प्रत्येकं छात्रस्य अधिकारः अस्ति

- (a) राजकीयभाषामाध्यमेन अधिगन्तुम्
(b) आधुनिकभारतीयभाषामाध्यमेन अधिगन्तुम्
(c) मातृभाषामाध्यमेन अधिगन्तुम्
(d) आङ्गलभाषाध्यमेन अधिगन्तुम्

Ans : (c)

शिक्षा अधिकाय अधिनियम (RTE) के अनुसार सभी छात्र को यह अधिकार प्रदान है कि वह शिक्षाध्ययन अपनी मातृभाषा के अनुसार ही करेगा।

Q.21. वर्णमालायाः अक्षराणां लेखनार्थं विद्यार्थिनः समर्थान् कर्तुं शिक्षकः तान् कथयति कथम् अक्षरनिर्माणार्थं रेखाङ्कनं करणीय वक्रं करणीय पाशं करणीयम् इति। एतद् अस्ति

- (a) लेखनयन्त्रम् (Mechanics of writing) (b) लेखनप्रक्रिया (Process of writing)
(c) प्रवाहीलेखनम् (Cursive writing) (d) रेखालेखनम् (Stroke writing)

Ans : (b)

बालकों के लेखन प्रक्रिया के निर्माणार्थ शिक्षक बालकों से अक्षर के रेखाङ्कन इत्यादि विधियों का पूर्वप्रयोग करता है। अतः वर्णमाला के अक्षरों के निर्माण हेतु उपर्युक्त कथनों के अनुसार यह प्रक्रिया लेखनप्रक्रिया के अन्तर्गत समाहित एवं सन्निहित होनी चाहिए।

Q.22. कवितापठनस्य उद्देश्यम् अस्ति

- (a) अनुभूतीनां विचाराणां च बोधः (b) धाराप्रवाहस्य शुद्धतायाः च विकासः
(c) कवितायाः कण्ठस्थीकरणम् (d) उच्चारणविकासः

Ans : (a)

कविता पठन का उद्देश्य अनुभूतों और विचारों के उद्देश्य से है।

Q.23. भाषाशिक्षणसन्दर्भे आगमनात्मकपद्धतेः (Inductive method) एषः लाभः अस्ति

- (a) कक्षायाम् अनुशासनं रक्षितं भवति
(b) विद्यार्थी अल्पे एव समये अधिकं पठितुं शक्नोति
(c) विद्यार्थिभिः गृहकार्य (Homework) करणस्य आवश्यकता नास्ति
(d) विद्यार्थिनः रटनाभ्यास न कुर्वन्ति

Ans : (d)

भाषाशिक्षणसन्दर्भे आगमनात्मकपद्धतेः विद्यार्थिनः रटनाभ्यास न कुर्वन्ति एषः लाभः अस्ति अर्थात् भाषा शिक्षण की आगमनपद्धति में विद्यार्थियों का रटनाभ्यास नहीं कराया जाता है।

Q.24. यदा छात्राः विरामादिचिह्नविषयककौशलवर्धनाथ शिक्षिताः भवन्ति, तदा ते ----

- (a) सम्भाषणकौशलं वर्धयिष्यन्ति
- (b) स्वस्य सृजनात्मकतां वर्धापयिष्यन्ति
- (c) स्वस्य अधिगमकौशलं सुदृढं करिष्यन्ति
- (d) लेखनशुद्धतां प्राप्स्यन्ति

Ans : (d)

यदा छात्राः विरामादिचिह्नविषयककौशलवर्धनार्थं शिक्षिताः भवन्ति, तदा ते लेखनशुद्धतां प्राप्स्यन्ति। अर्थात् जब छात्र विरामादिचिह्नों का प्रयोग भाषाकौशल के विकास हेतु करते हैं तब वे अपनी लेखन शुद्धता को प्राप्त करते हैं।

Q.25. प्राथमिक-विद्यालयस्य कस्यचन विद्यार्थिनः श्रवण वाचनकौशलयोः विकासनार्थं निम्नलिखितपद्धतिषु का वा पद्धतिः उपयुक्ता भवति?

- (a) अभिनयः तथा वार्तावाचनम् (News reading)
- (b) अभिनयः तथा संवादः (Interaction)
- (c) कथा श्रावणं तथा श्रुतलेखनम् (Dictation)
- (d) काव्यपाठः तथा भाषाप्रयोगशाला (Language laboratory)

Ans : (b)

प्राथमिक -विद्यालयस्य कस्यचन विद्यार्थिनः श्रवणवाचनकौशलयोः विकासनार्थं अभिनयः तथा संवादः पद्धतिः उपयुक्ता भवति अर्थात्- प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के श्रवण

वाचनकौशल के विकास के लिए अभिनय तथा संवाद पद्धति उपयुक्त होती है। अभिनय तथा संवाद से विद्यार्थियों में श्रवण और वाचन कौशल का विकास होता है।

Q.26. सप्तमकक्षायाः छात्रः कथयति यत् सः तस्य मित्रेण सह शब्दवर्गसमस्या (Crossword puzzle) खेल-माध्यमेन आनन्दम् अनुभवति यः किञ्चित् अधिकः दक्षः, येन कारणेन तस्य कौशलज्ञाने वृद्धिः भवेत्। एतेन कस्य शिक्षणमनोवैज्ञानिकस्य (Education psychologist) मन्तव्यं दृश्यते?

- | | |
|----------------------------|-----------------------|
| (a) स्किनर (Skinner) | (b) पियाजे (Piaget) |
| (c) वायगोत्स्की (Vygotsky) | (d) गार्डनर (Gardner) |

Ans : (c)

सातवीं कक्षा का छात्र कहता है कि वह उसके मित्र के साथ शब्द वर्ग समस्या खेल के माध्यम से आनन्द का अनुभव करता है जो अधिक कुशल होता है, जिसके कारण उसके कौशल ज्ञान में वृद्धि होती है। इसमें वायगोत्स्की का शिक्षण मनोवैज्ञानिक मन्तव्य दिखता है।

Q.27. विद्यालयं प्रति आगमनेन बालाः स्वमूलभाषां कक्षायाम् आनयन्ति। बहुभाषिके देशे, विद्यालयेन तेषां गृहभाषायाः सम्मानं करणीयं यतो हि

- (a) बालाः अबाधरीत्या अस्यां वदन्ति
- (b) तेषाम् अभिज्ञानस्य (identity) इदं महत्वपूर्णम् अङ्गम्
- (c) भारतेऽस्मिन् द्विसहस्राधिकाः (2000) भाषाः सन्ति
- (d) विद्यालयस्यापि इयं भाषा अस्ति

Ans : (b)

प्रतिदिन विद्यालय की ओर आने वाली कोई बालिका जब कक्षा में प्रवेश करती है तो वह अपने मूल भाषा में ही प्रवेश करती है। अर्थात् उस बालिका को कक्षा में अध्ययन हेतु लाया जाता है।

हमारे बहुभाषिक देश में विद्यालय के द्वारा उसकी गृह भाषा का सम्मान किया जाता है। जो कि- “उसके अभिज्ञान (पहचान) का यह महत्वपूर्ण अंग है।” अतः विकल्प दूसरा सही है।

Q.28. 'मम माता' इति विषयम् अधिकृत्य एकं निबन्ध लेखितुं शिक्षिका छात्रान् प्रेरयति। एतस्मिन् प्रसङ्गे सा मुख्तया छात्रेभ्यः किं निर्दिशेते?

- (a) मार्गदर्शकपुस्तकम् उदाहरणरूपेण व्यवहरन्तु
- (b) व्यवस्थिततया शुद्धतया च लिखन्तु
- (c) स्वानुभवाधारेण लिखन्तु
- (d) वर्तनीविषये जागरूकाः भवन्तु

Ans : (c)

(मेरी माता-मम माता) सम्प्रति विषय पर शिक्षिका छात्रों को एक निबन्ध लिखने को प्रेरित करती है। इस प्रसंग में वह छात्रों से कहती है कि वे इस विषय पर अपने अनुभव को लिखें।

Q.29. भाषाशिक्षकः छात्राणां दोषान् पश्येत्

- (a) छात्रसंशोधनसङ्केतरूपेण
- (b) अधिगमे समस्यारूपेण
- (c) अधिगमस्य बाधकरूपेण
- (d) अधिगमस्य सङ्केतरूपेण

Ans : (d)

भाषा शिक्षक छात्रों के दोषों को अधिगम के संकेत रूप से देखता है। इससे छात्रों के ज्ञान की सीमा निरूपित होती है। छात्रों के इस कमी को दूर करने के विषय में प्रयास करता है।

Q.30. सुरेशः एक भाषाशिक्षकः अस्ति। सः छात्रान् एकस्मिन् ग्रामे परिभ्रमितुं निर्दिशति। तत्र आपणानां सूचनापट्टान् पठित्वा तदुपरि विवरणं दातुं कथयति च। एवंविधः गतिविधिः किं कथ्यते?

- (a) परियोजनाकार्यम्
- (b) पठनम्
- (c) लेखनम्
- (d) भाषणम्

Ans : (a)

सुरेश एक भाषा शिक्षक है। वह छात्रों को एक गांव में परिभ्रमण का निर्देश देता है। वहां बाजार में सूचनापट्ट पढ़कर अनन्तर विवरण देने को कहता है। इस प्रकार की गतिविधि परियोजना कार्य कहलाती है।

Q.31. भाषादक्षतायाः कृते अधोलिखितेषु कस्य महत्त्वं सर्वाधिकम्?

- (a) न्यूनमूल्यशिक्षणसहायकसामग्रीणां प्रयोगः
- (b) शुद्धोच्चारणेन सह वाचनम्
- (c) सुन्दरहस्ताक्षरैः अभ्यासकार्यलेखनम्
- (d) शुद्धतायाः धाराप्रवाहस्य च विकासः

Ans : (b)

भाषा दक्षता के लिए शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ वाचन का सर्वाधिक महत्व होता है।

Q.32. विहङ्गम-दृष्ट्या (skimming) पठनेन अभिप्रायःअस्ति

- (a) विशिष्टम् अर्थम् अथवा सूचनां प्राप्तुं सम्पूर्णपाठ्यवस्तुनः गम्भीरतया पठनम्
- (b) लिखितसामग्र्या सार्थकसूचनां प्राप्तुं पठनम्
- (c) पठितसामग्र्या विचारार्थं निहितार्थं सूचनार्थं च निर्णयः
- (d) सामान्य-भावार्थं विचारम् अथवा सारं प्राप्तुं पाठ्यवस्तुनः शीघ्रतया पठनम्

Ans : (a)

विहंगम दृष्टि से पढ़ने का आशय विशिष्ट अर्थ अथवा सूचना प्राप्त करने हेतु सम्पूर्ण पाठ्य वस्तुओं का गम्भीरता पूर्वक पठन से है।

Q.33. भाषा-अधिगमनार्थं अभिवृद्धिनिर्माणहेतोः आवश्यकमस्ति

- (a) प्रायोजनात्मकं कार्यं तदधिकृत्य परिचर्चा अनुभवानां च मित्रैः सह आदानं प्रदानं च
- (b) विषमपरिस्थितीनां निर्माणं तस्मिन् च सामूहिकं कार्यम्

(c) संस्कृतकालांशे प्रधानाचार्यस्य अनुमत्या उद्यानविहारः

(d) गीतगायनम् कलात्मकं कार्यं च

Ans : (d)

भाषा -अधिगमन के लिए अभिवृद्धि निर्माण हेतु गीत गायन और कलात्मक कार्यों का अनुगमन आवश्यक होता है। गीत गायन तथा अनुगमन अभिवृद्धि निर्माण हेतु महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे भाषागत विकास होता है।

Q.34. वैविध्यपूर्णानुभवानां कृते कः उत्तमः मार्गः?

(a) काल्पनिकः शब्दः

(b) प्रदर्शनफलकं छायाचित्रं च

(c) अधिकाधिकम् अतिरिक्त-पठनसामग्री

(d) वास्तविकानि वस्तूनि

Ans : (d)

वैविध्यपूर्ण अनुभव करने का उत्तम मार्ग वास्तविक वस्तुएं हैं। वास्तविक वस्तुएं वैविध्यपूर्ण अनुभव को जानने का सर्वोत्तम साधन है।

Q.35. चित्राङ्कने 'पैचार्ट' (pie-chart) मध्ये च प्रदत्तं विषयम् उपयुज्य प्रबन्धं रचयितुं यदा छात्राः निर्दिष्टाः तदा प्रधानोद्देशोऽयं भवति

(a) विविधतन्त्रैः विस्तृताध्ययनम्

(b) प्रशंसाद्वारा सर्जनात्मकतायाः पोषणम्

(c) शब्दावल्याः पोषणाय साहित्यिककौशलानां प्रवृद्धिः

(d) चित्राङ्कनतः शब्दरूपेण विषयाणां परिवर्तनम्

Ans : (d)

चित्राङ्कन में विषय से सम्बद्ध 'पैचार्ट' उनके मध्य प्रदान करके तथा उनके उपयोग का प्रबन्ध या उपाय करके जब छात्रों को निर्देशित किया जाता है तब उनका प्रमुख उद्देश्य चित्राङ्कन का शब्द के रूप में विषयों का परिवर्तन होता है।

Q.36. यदा अध्यापिका पत्रं लेखितुं गोष्ठीचर्चानन्तरम् आदिशति तदा सा

- | | |
|---------------------------------------|--|
| (a) बहुविधभाषा-कौशलानि एकत्रीकरोति | (b) पारम्परिकविधानम् अनुसरति |
| (c) प्रायः छात्राणां भ्रमम् उत्पादयति | (d) भाषाबोधने प्रत्यक्षविधानम् अनुसरति |

Ans : (d)

जब अध्यापिका पत्र लिखकर सभा में वार्तालाप के बाद आदेश देती है तब वह भाषा के ज्ञान के लिए या समझ के लिए प्रत्यक्ष विधान का अनुसरण करती है।

Q.37. पठितग्रहणपरीक्षायाम् ईदृशाः प्रश्नाः भवन्ति

- (a) ये पाठ्यज्ञानं सामग्रयेण परीक्षन्ते
- (b) ये छात्रान् निर्दोषाणि उत्तराणि लेखितुं प्रोत्साहयन्ति
- (c) ये अवधारणेन साकम् अनुमानं व्याख्यानं मौल्याङ्कनं च परीक्षन्ते
- (d) ये पाठ्यगतान् शब्दान् संरचनाश्च प्रमुखतया केन्द्रीकुर्वन्ति

Ans : (c)

पठित ग्रहण परीक्षाओं के प्रश्नों के अन्तर्गत वे प्रश्न होते हैं जिसमें अवधारणा अर्थात् ज्ञान के साथ अनुमान की व्याख्या का मूल्यांकन किया जाता है।

Q.38. प्रायः केचन छात्राः भाषण-लेखन-प्रक्रिया-सन्दर्भ केषाञ्चित् शब्दानां प्रयोगसन्दर्भे अथवा अर्थभेदं कर्तुं समर्थाः न भवन्ति। यथा- वदतु, कथयतु, स्पष्टीकरोतु इत्यादयः। किं करणीयम्?

- (a) भाषण-लेखन-कौशलम् अधिकृत्य विशिष्ट-कक्ष्याप्रबन्धनम्।
- (b) त्रुटीनां संशोधनार्थं लेखनाभ्यासः।
- (c) आधारभूत-सिद्धान्तान् अधिकृत्य विभिन्नसन्दर्भेषु शब्दानां प्रयोगाभ्यासः
- (d) शब्दार्थ-स्पष्टीकरण-द्वारा शब्दप्रयोगः

Ans : (c)

कुछ छात्र भाषण-लेखन-प्रक्रिया के सन्दर्भ में, कुछ शब्दों के प्रयोग के सन्दर्भ में अथवा अर्थ भेद करने में समर्थ नहीं होते। जैसे-बोलना, कहना, स्पष्टीकरण करना इत्यादि। इसके लिए आवश्यक है कि आधारभूत सिद्धान्तों को अधिकृत्य कर विभिन्न सन्दर्भों में शब्दों के प्रयोग का अभ्यास करना।

Q.39. गतिबोधक-छात्राणां (Kinesthetic learners) मूल्याङ्कनार्थं किम् अनुपयुक्तम्?

- (a) भूमिका-निर्वहणम्, सामूहिकं कार्यम् (b) बहुविकल्पात्मकाः प्रश्नाः
(c) दीर्घ-परीक्षणं निबन्धः वा (d) आरेख-शीर्षकदानम्

Ans : (c)

गतिबोधक छात्रों का दीर्घ परीक्षण अथवा निबन्ध लेखन द्वारा मूल्यांकन अनुपयुक्त होता है। जबकि भूमिका निर्वहन, बहुविकल्पात्मक और आरेख-शीर्षक परीक्षण ऐसा छात्रों के लिए उपयुक्त होता है।

Q.40. 'कोऽपि छात्रः अधिगन्तुं किञ्चित् काठिन्यम् अनुभवति। अन्य-सामान्य-छात्राणां कृते निर्मित-वाचनसामग्रीम् अधिकृत्य सः अपि निपुणः भवेत्' इत्यर्थं कृतउपचारात्मक-शिक्षणस्य कृते किम् अत्यधिकम् आवश्यकम् ?

- (a) पाठ्यवस्तुनः सारप्रदानम् अथवा सरल-पठन-निवेशप्रदानम् (Reading inputs)
(b) सङ्गणक-माध्यमेन शिक्षणार्थम् 'आङ्गुलिक-पाठ्य सामग्री' (Digital Reading Material)
(c) अपरिचितशब्दानाम् अभिज्ञानम् एचञ्च छात्रभेय सहयोगदानं यत् ते शब्दार्थं द्रष्टुम् अवगन्तुं च समर्थाः भवेयुः।
(d) निर्धारित-पाठ्यसामग्र्याः केन्द्रीकरणम्

Ans : (c)

कुछ छात्र आसानी से समझ जाते हैं और कुछ कठिनता का अनुभव करते हैं। अन्य सामान्य छात्र निर्मित वाचन सामग्री को अधिकृत्य कर कुशलता को प्राप्त हो इसके लिए उपचारात्मक शिक्षण अत्यधिक आवश्यक है, वह यह कि छात्र अपिरिचित शब्दों की जानकारी प्राप्त करें और उन शब्दों के अर्थ को समझ सकने में समर्थ हों।

Q.41. अधोलिखितेषु कस्मिन् कार्ये सूक्ष्मपेशीयकौशलस्य (Fine motor skill)

आवश्यकता अस्ति?

- (a) आरोहणे (b) लेखने (c) कूर्दने (d) पठने

Ans: (b)

लेखन कार्य में सूक्ष्मपेशीय कौशल की अति आवश्यकता होती है। 'सूक्ष्मपेशीय कौशल' वह कौशल है जो लेखन की प्रमाणिकता तथा कुशलता पर निर्भर करता है इस कौशल में छात्र अपनी लेखनी के माध्यम से अपने आत्मशक्ति कौशल को भी परखता एवं समझता है।

“मनोवैज्ञानिकों ने इस कौशल को 'छात्रपेशीय' कौशल भी बताया है।”

Q.42. मूल्याङ्कनसमये अधोलिखितेषु कस्मिन् विषये शिक्षकस्य ध्यानं स्यात्?

- (a) धाराप्रवाहीवक्तृभिः सह तस्य छात्रस्य विकासस्य तुलना
(b) सर्जनात्मकलेखकैः सह तस्य छात्रस्य विकासस्य तुलना
(c) एकस्य छात्रस्य विकासस्य अन्यच्छात्राणां विकासैः सह तुलना
(d) एकस्य छात्रस्य विकासस्य तस्य पूर्वस्थित्या सह तुलना

Ans : (d)

मूल्याङ्कन के समय पर शिक्षक का आवश्यक ध्यानाकर्षण एक छात्र के विकास तथा उसके पूर्व स्थित कार्य की तत्क्षण तुलना करना अर्थात् कक्षा में शिक्षण मूल्याङ्कन पर शिक्षक प्रति-प्रति छात्र के हिसाब से एक ही छात्र पर ध्यान को अंकित करेगा तभी 'एकांगी मूल्याङ्कन

शिक्षण प्रणाली पद्धति' पूर्ण भी होगी साथ ही साथ मूल्याङ्कन भी एक छात्र का आसानी से हो जायेगा।

क्योंकि 'मूल्याङ्कन' का तात्पर्य यही है कि मूलता का अङ्कन करना।

Q.43. शिक्षिका केनापि शब्देन बिना छात्रैः सह सम्प्रेषणं करोति। एवं सा उपयोगं करोति

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| (a) शाब्दिकसम्प्रेषणस्य | (b) शब्देतरसम्प्रेषणस्य |
| (c) मौखिकसम्प्रेषणस्य | (d) लिखितसम्प्रेषणस्य |

Ans : (b)

शब्देतरसम्प्रेषण के बिना शिक्षिका छात्रों के साथ सम्प्रेषण (वाक्य आदान-प्रदान करती है और उसका शिक्षण कार्य के समय कक्षा में उपयोग भी करती है। 'शब्देतरसम्प्रेषण' का तात्पर्य शब्दों के अतिरिक्त सम्प्रेषण से है। जिसे हम व्यावहारिक ज्ञान भी कह सकते हैं।

Q.44. भाषा तावत् अभिव्यक्तेः, स्वमतव्यक्तीकरणस्य सर्वश्रेष्ठ -----माध्यमम् अस्ति।

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| (a) प्रचार (Propagation) | (b) संग्रह (Collection) |
| (c) विनिमय (Exchange) | (d) उपर्युक्तं सर्वमपि |

Ans : (c)

भाषा तावत् अभिव्यक्तेः, स्वमतव्यक्तीकरणस्य सर्वश्रेष्ठ विनिमय माध्यमम् अस्ति। अर्थात् भाषा अभिव्यक्ति तथा अपने मत के अभिव्यक्तीकरण के सर्वश्रेष्ठ विनिमय (आदान-प्रदान) का माध्यम है।

Q.45. उपचारात्मक-शिक्षणपद्धतिः (Remedial coaching) इति

- (a) व्यतिक्रमेण समस्यानां प्रस्तुतिं करोति
- (b) समस्यानां समाधाने साफल्यं प्रति प्रापयति
- (c) समस्या अभिज्ञानार्थम् अपेक्षित-काठिन्यस्य स्तरं वर्धयति

(d) समस्या: प्रति भाषासिद्धान्तज्ञानं प्रददाति

Ans : (b)

उपचारात्मक-शिक्षणपद्धति: समस्यानां समाधाने साफल्यं प्रति प्रापयति। अर्थात् उपचारात्मक शिक्षण पद्धति समस्या समाधान के लिए सफलता को प्राप्त करती है।

Q.46. भाषायां व्याकरणशिक्षणं कस्य समीकरणाय सहायकं भवति?

(a) सङ्ख्यात्मकतायाः (Numeracy)

(b) साक्षरतायाः (Literacy)

(c) शुद्धतायाः (Accuracy)

(d) वाक्प्रवाहस्य (Fluency)

Ans : (c)

भाषायां व्याकरणशिक्षणं शुद्धतायाः समीकरणाय सहायकं भवति। व्याकरण शिक्षण के लिए शुद्धता का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके आभाव में व्याकरण शिक्षण सम्भव नहीं होता।

Q.47. 'परीक्षणं प्रामाणिकं भवति यदि परीक्षणीयस्य सम्यक् परीक्षणं भवेत्। परीक्षणं विश्वसनीयं भवति यदा तत्र सातत्यं भवेत् । कदाचित् परीक्षणेन परीक्षणीयस्य सम्यक् परीक्षणं नापि भवेत् तथापि परीक्षणस्य सातत्यं मन्यते।। एतैः वाक्यैः लेखकस्य मुख्यम् उद्देश्यम्

(a) प्रामाणिकता विश्वसनीयता इत्येतयोः भेदस्य वर्णनम्

(b) साम्प्रतिकशोधकार्येषु प्रामाणिकतायाः विश्वसनीयतायाः च परीक्षणे योगदानम्।

(c) अस्माभिः प्रामाणिकं विश्वसनीयम् इति पदाभ्याम् परीक्षणानां वर्णनं करणीयं न वा इति सन्देहोपस्थापनम् ।

(d) सर्वेषु परीक्षणेषु प्रामाणिकता विश्वसनीयता च स्याताम् इति आग्रहः

Ans : (a)

परीक्षण तभी प्रामाणिक होता है, यदि परीक्षण का सम्यक परीक्षण हो। परीक्षण विश्वसनीय होता है, जब उसमें सत्यता होती है। कभी परीक्षण से परीक्षण का सम्यक परीक्षण नहीं होता

फिर भी परीक्षण की सत्यता मानी जाती है। इस वाक्य में लेखक का मुख्य उद्देश्य प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता के बीच विभेद का वर्णन है।

Q.48. षष्ठकक्षायाः शिक्षिका स्वच्छात्रान् उत्तमलेखकान् कर्तुम् इच्छति। सा बिन्दूनाम् आधारेण लेखनकार्यस्य आरम्भं कर्तुं प्रेरयति। अनन्तरम् एकम् असम्पूर्णम् अपरिमार्जितं लेखं प्रस्तूय तदुपरि सहपाठीभिः सह चर्चा कर्तुं प्रेरयति। शिक्षिका लेखनम् एवंप्रकारेण पश्यति

(a) चर्चा (b) परिणामः (c) प्रक्रिया (d) निबन्धः

Ans : (c)

छठी कक्षा की शिक्षिका अपने छात्रों को अच्छा लेखन कराने को सोचती हैं वह महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर लेखन आरम्भ करने को प्रेरित करती है। अनन्तर एक असम्पूर्ण और अपरिमार्जित लेख प्रस्तुत कर उस पर अपने मित्रों के साथ चर्चा करने को कहती है। शिक्षिका इस प्रकार के लेखन को एक प्रक्रिया मानती है।

Q.49. पठनकौशलं नाम

- (a) पाठस्य अर्थकरणम्
- (b) पाठस्य कण्ठस्थीकरणम्
- (c) पाठस्य अभिज्ञानम्
- (d) अबाधगतिना शुद्धोच्चारणेन सह पाठस्य उच्चैः पठनम्

Ans : (a)

पाठ के भावों को स्पष्ट करना (पाठस्य अर्थकरणम्) पठन कौशल का नाम है। अतः पठन कौशल द्वारा पाठ के अर्थ ग्रहण करने का सबसे उपयोगी गुण है।

Q.50. शिक्षिका खाद्यविषयकपाठस्य पठनार्थं निर्देशनात् पूर्वस्वस्वभोजनप्रवृत्तिविषये समूहेषु वार्तालापं कर्तुं छात्रान् निर्दिशति। एवं सा किं करोति?

- (a) पाठस्य बोधपूर्वकं पठनार्थं तान् समर्थान् करोति
- (b) कक्षागतज्ञानेन सह विद्यार्थिनां जीवनानुभवस्य सम्बन्धं स्थापयति
- (c) तेषां भाषणकौशलस्य संवर्धनं करोति
- (d) पाठस्य उच्चैः पठनार्थं छात्रान् समर्थान् करोति

Ans : (b)

एक शिक्षिका खाद्य विषयक पाठ के पढ़ने हेतु निर्देश से पूर्व अपने-अपने भोजन विषयक प्रवृत्ति के विषय में छात्रों से समूह में वार्ता करने को कहती है। इस प्रकार वह कक्षागत ज्ञान के साथ विद्यार्थियों के जीवन अनुभव से सम्बन्ध स्थापित करती है।

Q.51. गीता एक कथासंग्रहं पठति। एवम्प्रकारकं पठनं कथ्यते

- (a) परीक्षार्थं पठनम् इति
- (b) आनन्दार्थं पठनम् इति
- (c) विशदार्थं पठनम् इति
- (d) सूचनाप्राप्तीच्छा इति

Ans : (b)

गीता एक कथा संग्रह पढ़ती है। इस प्रकार का पठन आनन्द हेतु पठन कहा जाता है। क्योंकि कथा संग्रह का अध्ययन अत्यधिक रुचिकर होता है।

Q.52. यदा छात्राः कालस्य अवधारणं अवगन्तं समर्थाः न भवन्ति तदा उपचारात्मकं कार्यं किं भविष्यति?

- (a) लकारानुगुणं रूपाणां पुनः पुनः स्मरणम्
- (b) सम्बद्धलकाराणाम् अभ्यासः
- (c) सन्दर्भानुगुणं भाषाभ्यासः
- (d) सम्बद्धसूत्राणां रटनम्

Ans : (a)

जब छात्र काल को अवधारण करने में समर्थ नहीं होते तब उपचारात्मक कार्य लकार सम्बन्धी रूपों का बार-बार स्मरण कराया जाना उचित होगा।

Q.53. लेखनकौशलस्य अभ्यासार्थं महत्वपूर्णमस्ति

- (a) वाचनाभ्यासः (b) व्याकरणाभ्यासः
(c) सारांशलेखनम् (d) टिप्पणीस्वीकरणम्

Ans : (c)

लेखन कौशल के अभ्यास के लिए सारांश लेखन महत्वपूर्ण होता है। इससे सम्पूर्ण अनुच्छेद का कम शब्दों में भाव स्पष्ट हो जाता है।

Q.54. पूर्ववाचनगतिविधिः इत्यस्य प्रमुखोद्देशः अस्ति

- (a) छात्राणां ज्ञानवृद्धिः (b) पाठे रुचिवर्धनम्
(c) आनन्दप्रदानाम् अनुभवानां ज्ञानम् (d) नूतनशब्दानां पाठनम्

Ans : (b)

पूर्ववाचन गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यान्तर्गत रुचि वर्धन है। पूर्ववाचन से पाठ के भावों का स्पष्टीकरण होने लगता है। और जब अध्यापक पाठ के तथ्य को समझाते हैं तो बड़ी सहजता से छात्र उसे समझ लेता है।

Q.55. छात्रैः कृताः सर्वे भाषादोषाः अध्यापकेन नैव शोधनीयाः यतः

- (a) तदत्यन्तदुष्करम्
(b) प्रायो दोषाः भाषावबोधनमं सूचयन्ति
(c) दोषशोधनं भाषाबोधनस्य भागो न
(d) छात्राः शिक्षकान् परीक्षितुं सोद्देशं दोषान् कुर्वन्ति

Ans : (b)

छात्रों द्वारा भाषा दोष प्रायः भाषा के स्पष्टीकरण में विसंगति प्रकट करता है। अतः इस पर अध्यापक द्वारा विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

Q.56. रचनात्मकाकलनस्य प्रधानोद्देशः

- (a) उत्तीर्णतायाः अनुत्तीर्णतायाश्च निर्धारणम् (b) उपलब्धिमापनम्
(c) बोधनाध्ययनोन्नतीकरणम् (d) छात्रदोषान्वेषणम्

Ans : (c)

रचनात्मक आकलन का प्रधान या प्रमुख उद्देश्य बोधन (ज्ञान) के अध्ययन की उन्नति करना है। अर्थात् ज्ञान के अध्ययन का ज्ञान के आकलन रचनात्मकता द्वारा किया जाता है।

Q.57. यत्किञ्चित्पाठ्यते सदैव एव अवगम्यते यतः?

- (a) छात्राःभिन्न-योग्यता-व्यक्तित्व-सामाजिकपृष्ठभूमियुक्ताः भवन्ति
(b) कोऽपि अध्यापकः अथवा अधिगन्तकः संस्कृतविषये पूर्णतया न निपुणः
(c) अनौपचारिक-वार्तालापसमये छात्राः सावधानाः भवन्ति
(d) शिक्षकस्य सामाजिकस्तरः, आर्थिकस्तरः भिन्नः भवति

Ans : (a)

यदि निरन्तर थोड़ा-थोड़ा अभ्यास करके छात्र पढ़ता है तो वह छात्र अन्य छात्रों से भिन्न योग्यता, व्यक्तित्व तथा सामाजिक पृष्ठभूमि युक्त हो जाता है।

Q.58. एका शिक्षिका स्वशिक्षार्थिभ्यःरेल-समयसारिणीं प्रदाय तान् तिथि-स्थान-श्रेण्यनुसारम् आरक्षणप्रपत्रं पूरयितुं कथयति। अस्यां गतिविधौ वाचनस्य किम् उपकौशलं निहितम्?

- (a) विभिन्न-पाठ्यसामग्र्यर्थं विभिन्न-युक्तीनां परिपालनम्।
(b) मौखिकरूपात् रेखाचित्रात्मकरूपेण सूचनायाः परावर्तनम्।
(c) अन्यसामग्र्या सह सम्बन्धद्वारा पाठ्यवस्तुनः स्पष्टीकरणम्
(d) अवलोकनेन सूचना कथं प्रापणीया।

Ans : (c)

“एक शिक्षिका ने अपने छात्रों से रेल समय सारणी देकर उनसे तिथि, स्थान और श्रेणी के अनुसार आरक्षण प्रपत्र पूरा करने को कहा” सम्प्रति विधा में वाचना का अन्य सामग्रियों सहित पाठ्यवस्तुओं के स्पष्टीकरण का उपकौशल निहित है।

Q.59. अष्टमकक्षायाः एकः अध्यापकः एकस्य गद्यपाठस्य विभाजनं चतुर्षु भागेषु कृत्वा प्रत्येकं छात्राय एकं भागं प्रयच्छति। छात्राः, चतुर्षु समूहेषु स्वभागस्य वाचनं कृत्वा गद्यात् प्राप्तसूचनायाः परस्परम् आदान-प्रदानं कुर्वन्ति। तत्पश्चात् ते सम्पूर्णगद्याधारिताम् एकां सारिणी (Table) पूरयन्ति। एतया रीत्या, या 'Jigsaw Reading' इति मन्यते, छात्रेषु केषां कौशलानां विकासस्य सम्भावना दृश्यते?

- (a) वाचन-भाषण-कौशलयोः (b) वाचन-श्रवण-लेखन-कौशलानाम्
(c) वाचन-श्रवण-भाषण-कौशलानाम् (d) वाचन-लेखन-भाषण-कौशलानाम्

Ans : (b)

आठवीं कक्षा का एक अध्यापक एक गद्य पाठ का विभाजन चार भागों में करके प्रत्येक छात्र को एक भाग प्रदान करता है। छात्र चार समूहों में अपने भाग का वाचन करके गद्य से प्राप्त सूचना का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। तत्पश्चात् वे सम्पूर्ण गद्य आधारित एक सारणी बनाते हैं। इससे छात्रों के वचन, श्रवण, लेखन, कौशल के विकास की सम्भावना दिखती है।

Q.60. कक्ष्यायां शिक्षिका विविधान् उपायान् प्रक्रियाश्च एतदर्थम् उपयुञ्जीत

- (a) स्ववैदग्ध्यं प्रदर्शयितुम्
(b) परिणामकारितया छात्रान् आकलयितुम्
(c) शीघ्रं पदोन्नतिं स्थिरीकर्तुम्
(d) विविधच्छात्रप्रकाराणाम् आवश्यकताः पूरयितुम्

Ans : (d)

कक्षा में शिक्षिका अनेक प्रकार के उपायों व प्रक्रियाओं का प्रयोग करती है जो इस प्रकार हैं-
कक्षा में अनेक प्रकार के छात्र रहते हैं, शिक्षिका उन सबकी आवश्यकताओं को पूरा करती है।

Q.61. 'यत्किञ्चित् पाठ्यते तदेव तदनुगुणां वा अवगम्यते इति आवश्यकम् न'। किं कारणम्?

- (a) छात्राः भिन्नक्षमतायुक्ताः भवन्ति। तेषां व्यक्तित्वं पृष्ठभूमिः चापि भिन्नरूपेण भवति।
- (b) कोऽपि अध्यापकः छात्रः वा कदापि सम्पूर्णम् अवगन्तुं समर्थाः न भवन्ति
- (c) छात्राः केवलम् अनौपचारिक-चर्चा प्रति एव अवधानयुक्ताः भवन्ति
- (d) अध्यापकानाम्/अध्यापिकानां सामाजिक-आर्थिक-स्तरे अत्यधिकः भेदः भवति

Ans : (a)

जो भी पाठ कक्षा में पढ़ाया जाय, उसका अनुगमन भी उतना ही आवश्यक नहीं है। ऐसा इसलिए कि छात्रों की क्षमता पृथक-पृथक होती है। उनके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि अलग-अलग होती है।

Q.62. प्रतिपुष्टिः (Feedback) अस्ति

- (a) उभयशिक्षकशिक्षार्थिनां कृते स्वस्वविकासाय
- (b) मातृणां पितृणां कृते तेषां बालानां गृहकार्यकरणाय परीक्षाप्रस्तुत्यर्थं च
- (c) शिक्षार्थिनां कृते अधिगमविकासाय
- (d) शिक्षकाणां कृते अध्यापनविकासाय

Ans : (a)

प्रतिपुष्टि को अनेक वैज्ञानिकों ने 'स्वस्थ छात्रस्य च शिक्षकस्य विकासः' के रूप में भी परिभाषित किया है। क्योंकि प्रतिपुष्टि के अन्तर्गत शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के द्वारा स्व विकास कार्य किया जाता है।

Q.63. बालानां पठनस्य लेखनस्य च विकासाय आद्यं चरणं किम् अस्ति?

(a) नवसाक्षरता (Neo-literacy)

(b) प्राक्साक्षरता (Pre-literacy)

(c) साक्षरता (Literacy)

(d) उद्गामी साक्षरता (Emergent)

Ans : (d)

बालकों के पढ़ने और लिखने के विकास के लिए प्रारम्भ का चरण 'उद्गामी साक्षरता' ही होती है। उद्गामी साक्षरता का अर्थ होता है- स्फुटित साक्षरता

Q.64. विद्यालये यथार्थतया आंग्लभाषायाः शिक्षणार्थं महत्वपूर्णम् अङ्गम् अस्ति

(a) तत्स्थानीयशिक्षकस्य उपस्थितिः

(b) आनुपूर्येण व्याकरणनियमानां शिक्षणम्

(c) शुद्धोच्चारणस्य शिक्षणम्

(d) भाषायाः प्रयोगार्थम् अवसरः

Ans : (d)

विद्यालय में यथार्थ रूप से अंग्रेजी भाषा के शिक्षण का महत्वपूर्ण भाग है- भाषा के प्रयोग का अवसर प्रदान किया जाये। क्योंकि भाषा का जितना अधिक प्रयोग होगा उस विषय में ज्ञान उतना ही अधिक बढ़ता है।

Q.65. श्रवणबोधे सामर्थ्यम् अस्ति चेत्

(a) श्रुत्वा शुद्धतया लेखितुं प्रभवति

(b) अपरं जनं शान्तचित्तेन शृश्यात्

(c) कथिते विषये रुचिं स्वविचारं च प्रकटयति

(d) कथितं विषयं पुनः उपस्थापयितुं समर्थः भवति

Ans : (c)

हम भाषा का उपयोग भावविनिमय के लिए करते हैं। भाषा हमारे विचारों के आदान प्रदान का साधन है। श्रवण बोध में सामर्थ्य है कि कहे गये विषय पर अपनी रुचि और विचार को प्रकट करने का साधन है।

Q.66. भाषापाठ्यपुस्तकेषु प्रत्येकं पाठान्ते/अध्यायान्ते प्रदत्तानां क्रियाकलापानाम् अभ्यासप्रश्नानां च मुख्यम् उद्देश्यम् एतद् न स्यात्

- (a) पाठस्य सामान्य-अर्थकरणे सामर्थ्यवृद्धिः (b) कण्ठस्थीकरणस्य सामर्थ्यवृद्धिः
(c) चिन्तनस्य तथा विचारस्य सामर्थ्यवृद्धिः (d) चिन्तनपरक-सम्प्रेषणे सामर्थ्यवृद्धिः

Ans : (b)

भाषा पाठ्य पुस्तकों के प्रत्येक पाठ में प्रदत्त क्रियाकलापों एवं अभ्यास प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य कण्ठस्थीकरणस्य सामर्थ्य वृद्धि अर्थात् याद करने की सामर्थ्य में वृद्धि होती है।

Q.67. भाषाशिक्षणार्थम् अधस्तनेषु कतमं व्यवहारवादस्य सिद्धान्तं न अनुसरति?

- (a) भाषाशिक्षणार्थम् अन्तर्निहितयन्त्रम् (b) अनुकरणं दृढीकरणं च
(c) कण्ठस्थीकरणम् अभ्यासश्च (d) अभ्यासनिर्माणप्रक्रिया

Ans : (a)

भाषा शिक्षण हेतु अन्तर्निहित यंत्र व्यवहारवादी सिद्धान्त का अनुसरण नहीं करता। अनुकरण और दृढीकरण, याद करना एवं अभ्यास करना के साथ-साथ अभ्यास निर्माण प्रक्रिया भाषा शिक्षण का व्यवहारवादी सिद्धान्त है।

Q.68. अधस्तनेषु किं श्रवणपूर्वगतिविधिः अस्ति?

- (a) परिच्छेदस्य भावम् आदाय तद्गत-प्रश्नानाम् उत्तरं लिखित छात्रान् निर्दिशति
(b) शिक्षकः प्रस्तुतविषये जीवनानुभवविषये च छात्रः किं जानन्ति इति प्रश्नं कुर्यात्
(c) परिच्छेदस्य विषये प्रश्नं कुर्यात्
(d) शब्दान् वाक्यांशान् च संगृह्य तदुपरि पूर्व चर्चा कुर्यात्

Ans : (b)

शिक्षक प्रस्तुत विषय में और जीवन अनुभव के विषय में छात्र क्या जानता है, इस प्रकार प्रश्न करना चाहिए। यह श्रवण पूर्व गतिविधि है।

Q.69. सर्वेषां बालानां जन्मन एव भाषाधिग्रहणस्य अन्तर्निहितशक्तिः विद्यते।

- (a) सार्वत्रिकव्याकरणविशिष्टस्य (b) सार्वत्रिकमार्गविशिष्टस्य
(c) सार्वत्रिकमार्गविशिष्टस्य (d) सार्वत्रिकशब्दकोषविशिष्टस्य

Ans : (c)

सभी बालकों के जन्म से सार्वत्रिकमार्ग की विशिष्टता से ही भाषाग्रहण की अन्तर्निहित शक्ति है।

Q.70. छात्राणां भाषणकौशल-विकासार्थं ध्वनिक्रमस्य उपयोगः कथं करणीयः?

- (a) भाषणयुक्त-श्रुतलेखद्वारा
(b) व्यंग्यचित्राणां अथवा अन्य-दृश्यसामग्र्याः प्रयोगद्वारा
(c) मूलतत्त्वाधारित-कथायाः विवरण-कथा द्वारा
(d) अभिसंचित-ध्वनि-श्रवण-पश्चात् श्रुतसामग्रीमाधारीकृत्य व्याख्याद्वारा अथवा कथाकथनद्वारा

Ans : (d)

छात्रों के बीच भाषा कौशल के विकास के लिए ध्वनि क्रम का उपयोग अभिसंचित ध्वनि-श्रवण के उपरान्त सुनी गई (श्रुत) सामग्री को आधार बनाकर व्याख्या द्वारा अथवा कथाकथन द्वारा उपयोग करना चाहिए।

Q.71. पाठ्यचर्याविकासस्य सोपानक्रमः अस्ति

- (a) पाठ्यवस्तुचयनं, आवश्यकतायाः आकलनम् लक्ष्यनिर्धारणं, मूल्याङ्कनं च
(b) उद्देश्यनिर्धारणम्, आवश्यकतायाः आकलनम्, पाठ्यवस्तुचयनं मूल्याङ्कनम् च
(c) लक्ष्यनिर्धारणम् आवश्यकतायाः आकलनं, मूल्यांकनं, पाठ्यवस्तुचयनम्
(d) आवश्यकताविश्लेषणं, लक्ष्यनिर्धारणं, पाठ्यवस्तु चयनम् आकलनं च

Ans : (d)

पाठ्यचर्या के विकास का सोपान क्रम है- आवश्यकता विश्लेषण, लक्ष्य निर्धारण और पाठ्यवस्तु के चयन का आकलन करना।

Q.72. भर्तृहरिरचितं वाक्यपदीयं सम्बद्धमस्ति

- (a) अष्टाध्यायी-सूत्रव्याख्यया (b) महाभाष्यस्य व्याख्यया
(c) व्याकरणदर्शनेन (d) काव्यशास्त्र-सिद्धान्तेन

Ans : (c)

भर्तृहरि रचित वाक्यपदीय सम्बद्ध है- व्याकरण दर्शन से। यह अष्टाध्यायी सूत्र व्याख्या या महाभाष्य व्याख्या से सम्बन्धित नहीं है।

Q.73. मानवतावादी उपागमः इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति

- (a) नूतनसन्दर्भेषु अधिगत-सामग्रीणां-संकल्पनानां-सिद्धान्तानां अनुप्रयोगः
(b) अन्वेषणात्मकी प्रक्रिया
(c) अधिगत-संकल्पनानां प्रस्तुतीकरणम्
(d) विशिष्टलक्षणयुक्त-विभिन्न-शैक्षिक-विषयेषु नैपुण्यम्

Ans : (a)

मानवतावादी उपागम का अभिप्राय है- नूतन सन्दर्भ में अधिगत सामग्री के संकल्प के सिद्धान्त का अनुप्रयोग। इससे संकल्पों और सिद्धान्तों में विशिष्टता दर्शित हो जाती है।

Q.74. व्याकरण-बोधनस्योत्तमोपायः

- (a) सविवेकं व्याकरणांशाभ्यासस्योपयोगः (b) अलङ्कारबोधने केन्द्रीकरणम्
(c) व्याकरणकार्याणाम् एकीकृतोपयोगः (d) व्याकरणसूत्राणां छात्रैः कण्ठस्थीकरणम्

Ans : (c)

व्याकरण के ज्ञान का सबसे उत्तम उपाय है-" व्याकरणकार्याणाम् एकीकृतोपयोगः।" अर्थात् व्याकरण के ज्ञान के लिए क्रियात्मक व्याकरण की एकीकृत उपयोग अनिवार्य है। मातृभाषा के लिए क्रियात्मक व्याकरण उपयुक्त हो सकता है अर्थात् छात्र को उस भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान कराना चाहिए।

Q.75. यदा अध्यापिका अवगमने क्लेशान् न्यूनतां च ज्ञातुं परीक्षां करोति, तादृशी परीक्षा एवं भवति

- (a) सिद्धिपरीक्षा (b) नैपुण्यपरीक्षा
(c) निदानात्मिका परीक्षा (d) उपचारात्मकपरीक्षा

Ans : (d)

जब अध्यापिका आती है या आगमन पर कष्ट (क्लेश) और न्यूनता के ज्ञान की परीक्षा करती है तो उसे उपचारात्मक परीक्षा कहा जाता है अर्थात् इसमें छात्रों की कमियों का उपचार किया जाता है।

Q.76. संमिश्रशक्तिमत्समूहः अस्मिन्नसमानो भवति

- (a) लिङ्गे वयसि च (b) सामाजिकस्तरे (c) ज्ञानकौशलयोः (d) आर्थिकस्तरे

Ans : (b)

संमिश्रित शक्तियों का समूह सामाजिक स्तर के समान होता है। सामाजिक स्तर में समग्र शक्तियों का मिश्रण होता है। इसमें हर क्षेत्र के विषय का ज्ञान होता है।

Q.77. प्रारम्भिकस्तरे पठनं शिक्षयितुम् अधस्तनेषु कस्य उपादयता अधिका भवति?

- (a) पुस्तकानाम् (b) प्रकृतवस्तूनाम् (Realia)
(c) बोधपट्टानाम् (Flash cards) (d) द्विपार्थीयरेखाचित्राणाम् (Flip charts)

Ans : (c)

निश्चित रूप से शिक्षण कार्य में प्रारम्भिक स्तर को पढ़ाने हेतु शिक्षक को बोधपट्टानाम् (फ्लैश कार्ड) की उपादेयता अधिक रखनी चाहिए। 'फ्लैश कार्ड' एक पाठन सामग्री होती है।

Q.78. शिक्षिका स्वकक्षायाः बालान् युगलेषु विभजति। तान् युगलान् स्वस्वपुस्तिकानां विनिमयं कृत्वा निर्देशानुसारं संशोधनं कर्तुं सूचयति। एवं सा किं कर्तुम् इच्छति?

- (a) समकक्षीयमूल्याङ्कनम् (Peer assessment)
- (b) सामूहिकमूल्याङ्कनम् (Group assessment)
- (c) संशोधनम् (Correction)
- (d) स्वयं मूल्याङ्कनम् (Self-assessment)

Ans : (a)

प्रश्नानुसार, कोई शिक्षिका/अध्यापिका अपनी कक्षा के बालकों को जोड़ों में विभाजित करती है तथा उन युगलों को स्वयं उन्हीं की किताबों को प्रदत्त (प्रदान) करके शिक्षिका जब अपने निर्देश के अनुसार उन छात्रों को संशोधन (टि संशोधन) के लिए सूचित करती है। तब इस प्रकार का शिक्षिका का कार्य 'समकक्षीयमूल्यांकन' (Peer assessment) कहलाता है।

Q.79. वयं भाषायाः उपयोगं कुर्मः

- (a) लेखनार्थम्
- (b) भावविनिमयार्थम्
- (c) श्रवणार्थम्
- (d) पठनार्थम्

Ans : (b)

हम भाषा का उपयोग भावविनिमय के लिए करते हैं। भाषा हमारे विचारों के आदान प्रदान का साधन है। अतः भाषा भावविनियम का साधन है।

Q.80. अधिकांशाः शिक्षकाः छात्राणां शब्दज्ञानवृद्ध्यर्थं कस्य महत्त्वम् आमनन्ति?

- (a) शब्दकोषस्य
- (b) वर्तन्याः
- (c) प्रसङ्गस्य
- (d) शब्द-सूचीनाम्

Ans : (c)

प्रायः अधिकांश शिक्षिका छात्रों के शब्द ज्ञान की वृद्धि हेतु प्रसङ्ग के महत्व को निर्दिष्ट करते हैं। प्रसङ्ग से कथ्य के सम्पूर्ण भावों का स्पष्ट निदर्शन हो जाता है।

Q.81. अधस्तनेषु केन त्रिभाषासूत्रं संस्तुतम्?

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| (a) भारतीयशिक्षण-आयोगः | (b) चट्टोपाध्याय-आयोग |
| (c) कोठारी-आयोगः | (d) हन्टर-आयोगः |

Ans : (c)

दिये गये उक्त विकल्पों में कोठारी आयोग ने त्रिभाषा सूत्र की संस्तुति की है। त्रिभाषासूत्र के अन्तर्गत तीन भाषायें- हिन्दी, अंग्रेजी एवं एक स्थानीय भाषा है।

Q.82. शिक्षिका छात्रेभ्यः कस्याश्चित् घटनायाः विवरणं कर्तुं निर्दिशाति यस्यां ते आनन्दं प्राप्तवन्तः, उत्साहम् अथवा आश्चर्यम् अनुभूतवन्तः। तस्य कृते सा छात्रेभ्यः सङ्केतान् ददाति, यथा-केन सह, कदा घटिता इत्यादि। एवं सा प्रयत्न करोति

- | | |
|---------------------------|-----------------------------|
| (a) लेखनगतिविकासाय | (b) छात्राणां स्मृतिवर्धनाय |
| (c) सर्जनात्मकलेखनविकासाय | (d) सुन्दरहस्ताक्षरविकासाय |

Ans : (b)

शिक्षिका छात्रों से किसी घटना का चित्रण करने को कहती है जिसमें उन्हें आनन्द प्राप्त हुआ है। उत्साह अथवा आश्चर्य की अनुभूति हुई हो। उनके इस कार्य में वह शिक्षिका छात्रों को कुछ संकेत देती है। जैसे किसके साथ छात्रों की स्मृतिवर्धन हुआ है, कोई घटना कब घटित हुई है इत्यादि।

Q.83. द्वन्द्वसमासस्य उदाहरणम्

- | | | | |
|---------------|---------------|----------------|---------------|
| (a) पीताम्बरः | (b) रामकृष्णौ | (c) नीलोत्पलम् | (d) राजपुरुषः |
|---------------|---------------|----------------|---------------|

Ans : (b)

द्वन्द्व समास का उदाहरण दिये गये विकल्पों में है रामकृष्णौ/ जहां पर दोनों पद प्रधान हो तथा उनके मध्य में 'और' शब्द का लोप हो, द्वन्द्व समास होता है। अन्य उदाहरण हैं- लाभालाभ, रामलक्ष्मण, लवकुश आदि। चार्थ द्वन्द्वः, उभयपदार्थ प्रधानों द्वन्द्वः, जिस समास में सभी पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'च' (और) से जुड़ते हैं उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इस समास में बाद वाले पद का लिङ्ग होता है। यदि संपूर्ण पद के द्वारा दो को कहा जाता है तो द्विवचन और दो से अधिक का बोध होने पर बहुवचन होते हैं।

Q.84. व्याकरणक्रीडासुजागरूकता-उद्बोधनार्थकिमावश्यकम् ?

- (a) प्रदत्त-गतिविधि-समापनार्थ परस्पर सहयोगः
- (b) विभिन्नसन्दर्भेषु भाषाप्रयोगस्य अवसरः
- (c) निर्दिष्टलक्ष्यमधिकृत्य संप्रेषणात्मकं कार्यम्
- (d) पठित-भाषासंरचनासन्दर्भे गहनचिन्तम्

Ans : (c)

व्याकरण क्रीडा की जागरूकता उद्बोधन के लिए निर्दिष्ट लक्ष्य को अधिकृत कर संप्रेषणात्मक कार्य आवश्यक है।

Q.85. पाठ्यचर्यायाः "ऊर्ध्वगामि प्रतिमानम्" इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति

- (a) छात्राः मुक्तवातावरणे वैविध्यपूर्णगतिविधिषु भागं स्वीकृत्य पठेयुः
- (b) छात्राः भविष्योन्मुखि-विषयान् पठेयुः
- (c) आवश्यकता-आधारित-दूरगामि शिक्षणम्
- (d) छात्राः मुक्ततया आनन्दपूर्वकं किमपि पठेयुः

Ans : (a)

पाठ्यचर्या के अन्तर्गत "ऊर्ध्वगामि प्रतिमानम्" का अभिप्राय है- छात्र मुक्तवातावरण में वैविध्यपूर्ण गतिविधियों में भाग लेकर पढ़ें।

Q.86. व्यापकमूल्यांकनं नाम

- (a) विद्याविषयाकलनम्
- (b) शैक्षणिक-सहशैक्षणिकक्षेत्रेषु आकलनम्
- (c) साराङ्कनद्वारा संज्ञानकौशलानाम् आकलनम्
- (d) गृहाध्ययन-योजनाकार्यद्वारा संसाधनात्मकतायाः आकलनम्

Ans : (b)

शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक क्षेत्र के आकलन को व्यापक मूल्यांकन का नाम दिया जाता है अर्थात् व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षा तथा उससे जुड़े हुए सहशिक्षा के क्षेत्र का आकलन किया जाता है।

PAPER 2

Q.1. "बुद्धिमतां विद्यार्थिनाम् उच्चारणं तथा शब्दज्ञानम् उत्तमं भवति"-केनोक्तम्?

- (a) टर्मनेन (Terman)
- (b) फिशरेण (Fisher)
- (c) थांबया (Thamba)
- (d) एतैः सर्वैरपि

Ans : (d)

“बुद्धिमतां विद्यार्थिनाम् उच्चारणं तथा शब्दज्ञानं उत्तमं एतै सर्वैरपि भवति।” अर्थात् बुद्धिमान् विद्यार्थियों का उच्चारण तथा शब्द ज्ञान उत्तम होता है यह उक्ति टर्मनेन, फिशरेण तथा थांबया आदि की है।

Q.2. भाषाविकासं प्रभावयितुं कारकम् (Factor) अस्ति

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| (a) स्वास्थ्यम् | (b) बुद्धिः |
| (c) वैयक्तिक-असमानताः | (d) उपर्युक्तं सर्वमपि |

Ans : (d)

भाषाविकासं प्रभावयितुं कारकम् उपर्युक्तं सर्वमपि। अर्थात् - भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक स्वास्थ्य, बुद्धि तथा वैयक्तिक-असमानता आदि हैं।

Q.3. भाषाशिक्षणे भाषायाः आत्मसाक्षात्कारस्य (Internalization) सर्वाधिकमहत्त्वपूर्णः अंशः अस्ति

- | | |
|-----------------------|-------------------|
| (a) केवलं पठनम् | (b) केवलं लेखनम् |
| (c) श्रवणम् एवं पठनम् | (d) केवलं श्रवणम् |

Ans : (c)

भाषाशिक्षणे भाषायाः आत्मसाक्षात्कारस्य सर्वाधिकमहत्त्वपूर्णः अंशः श्रवणम् एवं पठनम् अस्ति। अर्थात् - भाषा शिक्षण में भाषाओं का आत्मसाक्षात्कार करने में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंश (भाग) सुनना तथा पढ़ना है।

Q.4. समुचितः भाषाकौशल-क्रमः मन्यते

- | | |
|-------------------------------|-------------------------------|
| (a) श्रवणं पठनं भाषणं लेखनम् | (b) भाषणं श्रवणं पठनं लेखनम् |
| (c) श्रवणं भाषणं लेखनं पठनं च | (d) श्रवणं भाषणं पठनं लेखनञ्च |

Ans : (d)

सही भाषा कौशल क्रम में आता है- श्रवण → भाषण → पढ़ना → लिखना। पहले हम किसी बात को सुनते हैं, सुनकर तब बोलते हैं उसके बाद पढ़ते हैं और अंत में लिखते हैं।

Q.5. मानवस्य विचाराणां प्रभावि-सम्प्रेषणस्य (लिखितमौखिक-रूपेण) च मध्ये परस्परं सम्बन्धस्य आधारभूतम् अथवा प्रमुखं तत्त्वं किम्?

- (a) व्याकरणात्मक-संरचना (b) उच्चारणम्
(c) बृहद्-अक्षरीकरणं लेखन-चिह्नाङ्कनं च (d) स्वरीकरणं बलाघातः च

Ans : (a)

मनुष्य के विचार से प्रभावी सम्प्रेषण (लिखित एवं मौखिक रूप से) के बीच परस्पर सम्बन्ध का आधारभूत अथवा प्रमुख तत्त्व व्याकरणात्मक संरचना है।

Q.6. कोऽपि छात्रः/कापि छात्रा अधिगतज्ञानं प्रयोक्तुम् असमर्थः/असमर्था। यथा, अनुवादप्रक्रियार्थम् उपयुक्तशब्दचयन-सन्दर्भः। किं समाधानम्?

- (a) अधिक-अवधि-दानम्
(b) अभिप्रेरणार्थं सर्वदा सरल-अभ्यास-कार्यम्
(c) उच्चस्तरीयैः छात्रैः सह मेलनम्
(d) उपयुक्त-रूपेण निर्मित-श्रेणीकृत-अभ्यासपत्रैः अभ्यासकार्यम्

Ans : (d)

कोई भी छात्र अधिगत ज्ञान प्रयोग करने में असमर्थ हैं जैसे अनुवाद प्रक्रिया में उपयुक्त शब्दों के चयन में उपयुक्त रूप से निर्मित श्रेणीकृत अभ्यास पत्र से अभ्यास करना इसका समाधान है।

Q.7. व्याख्यानात्मकपाठने एतच्चयनमन्तर्भवति

- (a) साहित्यिककल्पनानां लोकोक्तीनाम् अलङ्काराणां च द्वारा अभिव्यक्तानामर्थानाम्
(b) पाठ्ये साक्षादुक्तानाम् अर्थानाम्

(c) वास्तवांशानां घटनासरणीनां प्रधानविचाराणां सामान्यीकरणनाम्

(d) मौखिकसंरचनानां, चित्रणस्य, समान-रचनाभिः अथवा समान-शब्दैः कथालेखनस्य

Ans : (a)

व्याख्यात्मक पाठन में साहित्यिक कल्पना, लोकोक्तियाँ और अलङ्कारों की अभिव्यक्ति होती है। व्याख्यात्मक भाषण में भावों के संवर्द्धन हेतु उक्त विधाओं के प्रतिपादन से भाषागत चारुता में अभिवृद्धि होती है।

Q.8. युवच्छात्राःभाषाम् अर्जयन्ति अनेन विधानेन

(a) वास्तवजीवनसन्दर्भेषु तस्यां भाषायां व्यवहरन्ति

(b) पाठ्यपुस्तकपठनं तथा उत्तरलेखनं कुर्वन्ति

(c) व्याकरणपरीक्षासु उत्तमाङ्कार्जनम्

(d) प्रश्नोत्तरकण्ठस्थीकरणम्

Ans : (a)

युवा छात्रों में भाषा को अर्जित करने के अनेक विधान हैं। जिसमें वास्तविक जीवन के संदर्भ में उस भाषा का व्यवहार करना। सर्वोत्तम है। युवा छात्र भाषा का अर्जन जीवन सन्दर्भ में उस भाषा को व्यवहरित करते हैं।

Q.9. कण्ठशुद्धिःसुष्ठूच्चारणं लयः वेगः निर्गलता चैते कस्यांशाः?

(a) लेखनकौशलस्य

(b) पठनकौशलस्य

(c) वाचनकौशलस्य

(d) कोशोपयोगकौशलस्य

Ans : (c)

कण्ठशुद्धि से शुद्ध उच्चारण में लय, वेग की निर्गलता वाचन कौशल के लिए आवश्यक है।

Q.10. 'अभिप्रेरक-लेखन' (Persuasive Writing) निम्नलिखितेषु कुत्र अन्तर्निहितम् अस्ति?

- (a) कार्य-मूल्याङ्कनम्, सम्पादकं प्रति पत्राणि
- (b) चरितम्, आत्मचरितम्
- (c) विश्वकोषः लेखाः/रेखाचित्राणि
- (d) समाचाराः, प्रतिवेदनानि, पाठ्यपुस्तकानि

Ans : (a)

अभिप्रेरक-लेखन' (Persuasive Writing) कार्यमूल्याङ्कनम्, सम्पादकं प्रति पत्राणि अन्तर्निहितम् अस्ति। तात्पर्य है - एक ऐसा लेख जो अभिप्रेरित (बल) प्रदान करता हो अन्तर्निहित है - कार्य-मूल्याङ्कन में और सम्पादकीय पत्रों में।

Q.11. 'अवबोधनात्मक परीक्षणम्' इत्थर्थं किं सर्वाधिक महत्वपूर्णम्?

- (a) पाठ्यस्य शीर्षकम्
- (b) सन्दर्भस्य ज्ञानम्
- (c) पाठेषु उपशीर्षकाणि
- (d) लेखनाभ्यासः

Ans : (b)

तात्पर्य है - पाठ के सन्दर्भ का ज्ञान अवबोधन परीक्षण के लिए आवश्यक है। जिससे विद्यार्थी पाठ को भली-भाँति समझ सके, तभी अवबोधन परीक्षण किया जा सकता है।

Q.12. प्रतिभालक्षणानि प्रमुखतया सम्यक् रूपेण प्रकटीक्रियन्ते

- (a) बुद्धिपरीक्षणद्वारा (IQ Tests)
- (b) भावात्मकपरीक्षणद्वारा (EQ Tests)
- (c) अध्यापक-अभिभावक द्वारा
- (d) सञ्चित-विद्यालय-अभिलेख द्वारा

Ans : (a)

प्रतिभालक्षणानि प्रमुखतया सम्यक् रूपेण बुद्धिपरीक्षणद्वारा (IQ Tests) प्रकटीक्रियन्ते। तात्पर्य है - प्रतिभालक्षण के धनी छात्रों का समान रूप से ज्ञात किया जा सकता है, बुद्धिपरीक्षण के माध्यम से।

Q.13. वक्ता -1 तब माता गृहम् इदानीं पर्यन्तम् आगतवती वा? वक्ता -2 आम् भाषण-श्रवणकौशले अत्रकस्य दोषः?

- (a) प्रथमवक्ता (b) द्वितीयवक्ता (c) द्वयोः (d) न कस्यापि

Ans : (a)

वक्ता -1-तब माता गृहम् इदानीं पर्यन्तम् आगतवती वा? वक्ता -2 - आम्। यहाँ पर भाषण-श्रवण कौशल के कारण प्रथम वक्ता का दोष है।

Q.14. भाषावगमने परीक्षणे च पत्राधारः (portfolio) इदं निर्दिशति?

- (a) प्रति अवधौ शिक्षकेन कृतः विद्यार्थि-स्वभावलेखः
(b) कालकाले लेखनपरीक्षा
(c) मौखिकी परीक्षा
(d) विद्यार्थिनाम् अवगमनाभिवृद्धिसूचककार्यसंग्रहणं निश्चितकाले

Ans : (d)

भाषा के अवगमन (आना) और परीक्षण का पत्राधार यह निर्दिष्ट करता है कि इससे विद्यार्थियों के आगमन में वृद्धि होती है और निश्चित समय पर कार्यों का संग्रहण होता है

Q.15. अध्ययनसमये विशेषणपदं (Modifier) 'शक्यते', 'शक्यते स्म', शक्यः, संभावनम् अत्रायं केन्द्रीकरोति?

- (a) तेषां वाक्यात्मकं स्थानम् (b) तेषाम् अयम्
(c) सन्दर्भानुगुणमर्थम् (d) पूर्वपदार्थम्

Ans : (c)

अध्ययन समये विशेषण पद 'शक्यते' शक्यतेसम; शक्यः संभावनम् यहाँ पर यह सन्दर्भानुगुण अर्थ को केन्द्रीकृत करता है।

Q.16. भाषाकक्षायां प्रवाहस्य विकासः तदैव भवति यदा सम्पूर्णकक्षा मिलित्वा स्वतन्त्ररूपेण कार्यं करोति, यतो हि

- (a) छात्राः जानन्ति यत् अध्यापकः तान् शृणोति।
- (b) अध्यापकः त्रुटीः ज्ञातुं शुद्धीकर्तुं च सज्जितः भवति।
- (c) ये छात्राः आत्मविश्वस्ताः न सन्ति ते मौनं धर्तुं स्वतन्त्राः भवन्ति।
- (d) छात्राः सम्प्रेषणार्थं लक्ष्यभाषायाः प्रयोगं कर्तुं प्रचुरमात्रया अवसरान् प्राप्नुवन्ति।

Ans : (d)

भाषाकक्षा के प्रवाह या गति का विकास तभी सम्भव होता है जब सम्पूर्ण कक्षा मिलकर स्वतन्त्रतापूर्वक कार्यों का संचालन करता है, यथा-छात्रों में सम्प्रेषण के लिए लक्ष्यभाषा का प्रयोग करने का पर्याप्त मात्रा में अवसर प्राप्त हो।

Q.17. प्रभावि-अधिगमनाय छात्राः कीदृशाः भवेयुः?

- (a) जिज्ञासापूर्णाः सक्रियाः च
- (b) आज्ञाकारिणः
- (c) परीक्षाकृते सज्जिताः
- (d) मौनव्रतधारिणः निष्क्रियाः च

Ans : (a)

प्रभावी अधिगमन के लिए छात्रों की जिज्ञासापूर्ण क्रियाओं के साथ होना चाहिए। अर्थात् छात्रों में सदैव सीखने के प्रति जिज्ञासा होनी चाहिए तभी वह प्रभावी अधिगमन प्राप्त कर सकता है।

Q.18. एकः आङ्गल-भाषाध्यापकः प्रथमकक्षायां छात्रान् जनैः वस्तुभिः च सम्बद्ध-शब्दानां परिचयं कारयति। निम्नलिखितेषु शब्दशिक्षण-सिद्धान्त-सन्दर्भे किं परिस्थित्यनुगुणम् असमीचीनम्?

- (a) छात्राः स्थूलवस्तु-सम्बद्धशब्दान् सम्यक् पठन्ति
- (b) यथार्थ-वस्तूनि दृष्ट्वा छात्राः शब्दार्थान् स्पष्टरूपेण अवगच्छन्ति।
- (c) विभिन्न-इन्द्रियाणां सहाय्येन अधिगमनं प्रभावात्मकं भवति।
- (d) छात्राः वर्तनीम् आश्रित्य नवीनशब्दान् शीघ्रम् अधिगच्छन्ति।

Ans : (d)

एक अंग्रेजी भाषा अध्यापक पहली कक्षा के छात्रों को कुछ वस्तुओं को दिखाकर उनसे बने अंग्रेजी शब्दों का परिचय कराता है। इससे छात्र उस वस्तु के शब्द को आसानी से समझ जाता है। चौथा वाक्य असमीचीन है।

Q.19. पञ्चम्याः कक्षायाः छात्राणाम् अवबोधनक्षमतायाः विकासाय कः प्रविधिः न्यूनतया प्रभावशाली?

- (a) अध्यापकः नवीन-शब्द-संरचनां परिचर्य छात्रान् मौनवाचनार्थं प्रेरयति।
- (b) अध्यापकः गद्यांशस्य शीर्षकं विलिख्य परिचर्य च आयोज्य छात्रान् मौनवाचनार्थं प्रेरयति।
- (c) अध्यापकः छात्रान् मौनवाचनार्थम् अभिप्रेर्य तथ्याधारितान् निर्णयात्मकान् च प्रश्नान् पृच्छति।
- (d) अध्यापकः गद्यांशम् उच्चैः सम्पठ्य विस्तृतं व्याख्यानं करोति, अत्यन्त-कठिन पङ्क्तीनां च मातृभाषया अनुवादं करोति।

Ans : (d)

पांचवी कक्षा के छात्र के लिए अवबोधन क्षमता के विकास के लिए सामान्य प्रभावशाली प्रविधि है कि अध्यापक गद्यांश को ऊँचे स्वर में पढ़कर उसकी विस्तृत व्यवस्था करे और जो भी कठिन पंक्तियाँ हों उन्हें मातृभाषा में अनुवाद करे।

Q.20. निम्नलिखितेषु अवबोधनप्रक्रियासन्दर्भे वाचनकौशलस्य विकासार्थं किं सर्वाधिक-प्रभावपूर्णम्?

- (a) वाचनसमये छात्राः पाठे आगतशब्दान् कथयितुं समर्थाः भवेयुः इत्यर्थं तेषां साहाय्यम्।
- (b) छात्राः पाठितपङ्क्तिं सङ्केतद्वारा स्पष्टीकर्तुं समर्थाः भवेयुः इत्यर्थं शिक्षणम्।
- (c) छात्राः पाठ्यवस्तु उच्चैः पठितुं समर्थाः भवेयुः।
- (d) छात्राः मौनवाचने कुशलाः भवेयुः अवबोधनात्मकप्रश्नान् अपि पृच्छेयुः।

Ans : (d)

वाचन कौशल के विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि छात्रों को मौनवाचन में कुशल होना चाहिए एवं साथ ही साथ अवबोधनात्मक प्रश्नों को भी पूछा जाना चाहिए।

Q.21. निदानपरीक्षा (Diagnostic test) क्रियते

- (a) रचनात्मकपरीक्षाकृते
- (b) सततपरीक्षाकृते
- (c) विद्यार्थिनः स्तरं ज्ञातुम्
- (d) अन्तिमपरीक्षाकृते

Ans : (c)

निदान परीक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के स्तर को जाना जाता है। इस प्रणाली से एक तरह से छात्रों के बुद्धिलब्ध का मूल्यांकन होता है।

Q.22. डिसग्राफिया वर्तते

- (a) अवधारणायाः बोधे संज्ञानात्मकन्यूनता
- (b) कस्यचित् पाठस्य पठने काठिन्यम्
- (c) लिखितभाषायाः बोधे भाषागतन्यूनता
- (d) संख्यानां बोधे अङ्कगणितीयन्यूनता

Ans : (c)

डिसग्राफिया लिखित भाषा के बोध से भाषागत न्यूनता को स्पष्ट करती है। क्योंकि भाषागत न्यूनता से लिखित भाषा की न्यूनता होती है।

Q.23. शिक्षितनिष्कर्ष प्राप्तुं पठनार्थं चर्चार्थं चिन्तनार्थं तर्कवितर्कार्थं च विचारान् दातुं छात्राः आहूताः। किम् एतत् कथयितुं शक्यते?

- (a) गम्भीरचिन्तनम् (Reflection)
- (b) आदानप्रदानम् (Interaction)
- (c) नकारात्मकसमीक्षा (Negative Criticism)
- (d) समीक्षात्मक-शिक्षणप्रविधिः (Critical Pedagogy)

Ans : (d)

शिक्षितनिष्कर्ष, पढ़ने और चिन्तन, तर्क-वितर्क और विचार देने के लिए छात्र बुलाए गए हैं। यह समीक्षात्मक शिक्षण प्रविधि है।

Q.24. शब्दावलीज्ञानार्थम् अधोलिखितेषु कतमं न आदर्शभूतम्?

- (a) समानविषयकशब्दानाम् एकत्र अधिगमः
- (b) सन्दर्भानुसारं नवीनशब्दानाम् अर्थानुमानम्
- (c) शब्दानाम् अर्थरूपेण कूटाधिगमः
- (d) पृथक्तया कठिनशब्दानाम् अधिगमः

Ans : (d)

शब्दावली (शब्द ज्ञानावली) के निमित्त अलग-अलग कठिन शब्दों के अध्ययन से सम्बन्धित होता है। अर्थात् शब्दावली ज्ञान तभी पृष्ठ होता है जब कठिन शब्दों के ज्ञान को संग्रहित कर लिया जाये।

Q.25. अधस्तनेषु कतमं व्यापकश्रवणस्य (Extensive listening) उदारहणं स्यात्?

- (a) कस्याश्चित् विशिष्टसूचनायाः कृते दूरदर्शनस्य वार्तावलीश्रवणम्
- (b) वेतारयन्त्रेण प्रसारितस्य नाटकस्य श्रवणम्
- (c) सावधानं मित्रमुखात् श्रवणम्

(d) कक्षायां शिक्षिकायाः ध्यानपूर्वकं श्रवणम्

Ans : (b)

“वेतारयन्त्रेण प्रसारितस्य नाटकस्य श्रवणम्” व्यापक श्रवण का उदाहरण है। व्यापक श्रवण वह स्वकार्य पद्धति है जो नाटक के श्रवण के साथ मग्नबद्धता को सिद्ध करती है।

Q.26. भाषाशिक्षणे बलहीनविद्यार्थिनां कृते अत्यन्तम् उपयुक्ता पद्धतिः का?

(a) व्यक्तिगतशिक्षणम्

(b) समूहशिक्षणम्

(c) युग्मशिक्षणम् (Peer teaching)

(d) उपर्युक्तं सर्वमपि

Ans : (a)

भाषाशिक्षणे बलहीनविद्यार्थिनां कृते अत्यन्तम् उपयुक्ता पद्धति व्यक्तिगत शिक्षणम्। अर्थात् - भाषा शिक्षण में बलहीन विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयुक्त पद्धति व्यक्तिगत शिक्षण है।

Q.27. निम्नलिखितेषु मुद्रितपाठ्यपुस्तकप्रयोगापेक्षया द्वितीय भाषाध्ययनार्थ सहायकं किम्?

(a) व्याकरणानुवादपद्धतिः

(b) भाषाप्रवाहः (Language immersion)

(c) प्राकृतिक-अभिगमः (Natural approach)

(d) सन्दर्भोचित-अभिगमः (Situational approach)

Ans : (b)

मुद्रितपाठ्यपुस्तकप्रयोगापेक्षया द्वितीय भाषाध्ययनार्थ सहायकं भाषा प्रवाहः। अर्थात् - मुद्रित पाठ्य पुस्तक प्रयोग की अपेक्षा द्वितीय भाषा के अध्ययन के अर्थ में भाषा प्रवाह सहायक है।

Q.28. मौखिकप्रस्तुतीकरणार्थं निम्नलिखितेषु का वा पद्धतिः योग्या नास्ति?

- (a) मुखामुखिप्रस्तुतिः (Face-to face presentation)
- (b) काव्यपाठः (Poetry recitation)
- (c) स्वरप्रस्तुतिः (Voice presentation)
- (d) सङ्केतभाषामाध्यमेन प्रस्तुतिः (Presentation through sign language)

Ans : (d)

मौखिकप्रस्तुतीकरणार्थं वा पद्धतिः योग्या सङ्केतभाषामाध्यमेन प्रस्तुतिः नास्ति। अर्थात् - मौखिकप्रस्तुतीकरण के अर्थ को अथवा पद्धति योग्य सङ्केतभाषा के माध्यम से प्रस्तुतीकरण नहीं की जा सकती है। जबकि मुखप्रतिमुख प्रस्तुती, स्वरप्रस्तुती के माध्यम से तथा काव्य पाठ के माध्यम से मौखिक प्रस्तुतीकरण की पद्धति योग्य है।

Q.29. समुचितं भाषाधिगमनं तदैव भवति यदा

- (a) महाविद्यालयं प्रवेष्टुं संशोधितया भाषया साहाय्यं प्राप्यते
- (b) भाषाधिगमनं कक्ष्या-नियन्त्रित-परिवेशे कार्यते
- (c) लक्ष्यभाषायाः ध्वन्यात्मकता स्वरूपं च मातृभाषानुगुणं भवतः
- (d) जीवन-लक्ष्य-मूल्यानि प्राप्तुं भाषा व्यावहारिकी भवति

Ans : (d)

सही भाषा अधिगमन तभी होता है जब हम जीवन लक्ष्य के मूल्यों को प्राप्त करने में भाषा व्यवहार का काम करते हैं। क्योंकि बिना इसके समुचित भाषा अधिगम नहीं हो सकता है।

Q.30. छात्राणां लिखितकार्यसम्बद्ध-त्रुटि-संशोधनार्थं प्रभाविप्रक्रिया अस्ति

- (a) कृष्णफलके उपयुक्त-उत्तरलेखनम्
- (b) समीचीनानि उत्तराणि प्राप्तुं पुनः पुनः लेखनम्
- (c) सङ्केतद्वारा टि-निदर्शनं छात्रेभ्यः च संशोधनार्थम् अभिप्रेरणादानम्

(d) अशुद्धीनां पुनः पुनः अवलोकनम्

Ans : (c)

छात्रों से सम्बन्धित लिखित कार्य सम्बद्ध त्रुटि संशोधन की प्रभावित प्रक्रिया छात्रों को संकेत द्वारा त्रुटियों को बताना और संशोधन के लिए अभिप्रेरित करना है।

Q.31. "छात्राः सहजतया लक्ष्यभाषया भाषणं कर्तुं समर्थाः भवेयुः" इत्यर्थं किं महत्त्वपूर्णम्?

(a) लिखित-मौखिक-परीक्षणम्

(b) दृश्यसाधनानां प्रयोगः

(c) छात्रः यथा इच्छन्ति तथैव कयापि भाषया भाषणं कुर्युः

(d) सर्वत्र लक्ष्यभाषया सम्भाषणार्थम् अभिप्रेरणा नूतनेषु च सन्दर्भेषु भाषाप्रयोग-अवसराणां प्रदानम्

Ans : (d)

छात्र को बड़ी आसानी से लक्ष्य भाषा का सम्भाषण करने में समर्थ होना चाहिए। इसके लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि सर्वत्र लक्ष्यभाषा का सम्भाषण करने के लिए अभिप्रेरणा एवं नूतन सन्दर्भ में भाषा का प्रयोग अवसर प्रदान करता है।

Q.32. भाषाशिक्षणविषये व्यवहारवादिविचारधारायाम्

(a) उत्प्रेरणा-प्रत्युत्तरसम्बन्धसंवर्धनस्य प्राधान्यं विद्यते

(b) बोधनस्य केन्द्रं छात्रो भवति

(c) शाला शिक्षकश्च प्रधानपात्रं वहतः

(d) अनुभवाय प्रामुख्यं प्रदीयते

Ans : (a)

भाषा शिक्षण विषय के अन्तर्गत व्यवहारवादी विचारधारा में उत्प्रेरण- प्रत्युत्तर सम्बन्ध संवर्धन की प्रधानता होती है।

Q.33. वाक्कौशलस्य वर्धने परिणामकारी गतिविधिषु अन्यतमः

- (a) स्थानापत्तिसारिण्याः अभ्यासः (b) वस्तुनिष्ठव्याकरणपरीक्षा
(c) अभिनयः (d) वाचनम्

Ans : (d)

वाक् कौशल के संवर्धन हेतु परिणामकारी गतिविधियों में वाचन महत्वपूर्ण है। किसी विषय का वाचन वाणी की कुशलता को अभिव्यक्त करता है। साथ ही साथ भाषागत ज्ञान का सम्यक बोध स्पष्ट करता है।

Q.34. भाषाध्यापकः अप्रत्यत्नं छात्राणां सिद्धेः मूल्याङ्कनं सततं करोतीति कथं वक्तुं शक्यते?

- (a) भाषाविषयकपत्रिकाः प्रायेण दीर्घाः दीर्घकालापेक्षिण्यश्च भवन्ति
(b) निरन्तर- व्यापकमूल्याङ्कनसूचीपत्रिकायां मूल्याङ्कनलेखः प्रधानपात्रं वहति
(c) बहवो मूल्याङ्कनोपायाः भाषाबोधनोपायाश्च वर्तन्ते
(d) समयसारिण्यां भाषाकक्ष्यावधिः अत्यधिकं महत्त्वं कालं च प्राप्नोति

Ans : (b)

भाषाध्यापक बिना प्रयत्न के छात्रों का मूल्यांकन निरन्तर करता रहता है। वह समय सारणी से भाषा की कक्षावधि में अत्यधिक महत्व के समय में छात्रों का मूल्यांकन कर सकता है।

Q.35. शब्दार्थज्ञानार्थं किं समुपयुक्तम्?

- (a) अलङ्काराणां परिचयः (b) वर्ण-विन्यासः
(c) कविपरिचयः (d) विविधसन्दर्भेषु शब्दप्रयोगः

Ans : (d)

शब्दार्थज्ञानार्थं विविधसन्दर्भेषु शब्द प्रयोगः समुपयुक्तम्। तात्पर्य है - शब्द ज्ञान का अर्थज्ञान विविध संदर्भ में शब्द प्रयोग के लिए उपयुक्त विकल्प है।

Q.36. कोऽपि अध्यापकः छात्रस्य असमीचीन-प्रतिक्रियाम् अपि उत्साहेन स्वीकरोति। सः अध्यापकः

- (a) छात्राणां भावात्मकविकासस्य प्रक्रियां सम्यक् रूपेण अवगच्छति
- (b) छात्राणां भाषाविकासदृष्ट्या तेभ्यः प्रोत्साहनं यच्छति
- (c) शिक्षणकौशलम् अनुपालयति
- (d) संज्ञानात्मकविकासाय प्रयत्नशीलः

Ans : (a)

छात्राणां भावात्मकविकासस्य प्रक्रियां सम्यक् रूपेण अवगच्छति। तात्पर्य है - एक अध्यापक को किसी भी छात्र को समझने के लिए उस छात्र के भावात्मक विकास को जानना अत्यावश्यक है, जिसके आधार पर वह छात्र के द्वारा किये गये कार्य के प्रति उत्साह प्रकट करते हैं व कार्यपरिणाम की सराहना करते हैं।

Q.37. 'रचनावादः' (Constructivism) इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति यत् छात्राः

- (a) स्वानुभवान् अधिकृत्य तत्त्वानि तथ्यानि च अवगच्छन्ति ज्ञाननिर्माणे च संलग्नाः भवन्ति
- (b) विभिन्नानि तत्त्वानि निर्दिष्ट-सिद्धान्तानुसारम् अवगच्छन्ति
- (c) शिक्षक-सहाय्येन विभिन्नमाध्यमैः वा शोधकार्यं कुर्वन्ति
- (d) स्वानुभवैः शिक्षणसामग्री रचयन्ति।

Ans : (a)

'रचनावादः' (Constructivism) इत्यनेन अभिप्रायः स्वानुभवान् अधिकृत्य तत्त्वानि तथ्यानि च अवगच्छन्ति ज्ञाननिर्माणे च संलग्नाः भवन्ति। तात्पर्य है रचनावाद (रचना का

निर्माण) का अभिप्राय है-जब छात्र स्वयं के अनुभव द्वारा तत्वों के तथ्यों को समझने में सक्षम होते हैं तथा ज्ञान के निर्माण में संलग्न (प्रवृत्त) होते हैं तब वे एक नयी रचना का निर्माण करते हैं जिसे 'रचनावाद' के नाम से जाना जाता है। ऐसे छात्र को **Constructive minded student** कहा जाता है।

Q.38. संभाषणमिदं पठत्। अत्र अध्यापकः-अध्यापकः- अथवा भवान् कथापुस्तकमेकं पठितुमिच्छति? शिष्यः - आम्। अध्यापकः - आम् कृपया।

- | | |
|------------------------------------|--|
| (a) पठनारम्भं कर्तुं विनयेन सूचयति | (b) शिष्यस्य प्रार्थनामनुमोदते |
| (c) अन्यदेकमभ्यासं ददाति | (d) भाषानुष्ठानक्रमं विनयेन सम्बद्धयति |

Ans : (a)

यह सम्भाषण पढ़ो। यहाँ अध्यापक हैं-अध्यापक कहता है क्या आपको पुस्तक की कथा पढ़ने की इच्छा होती है? शिष्य कहता है-हाँ, तो अध्यापक कहता है पढ़ो, तब पढ़ना आरम्भ करना विनय को सूचित करना है।

Q.39. NCF 2005 अनुसारं काल्पनिक-चिन्तनार्थम् एवं च साक्षरताद्वारा ज्ञानार्जनं मन्यते?

- | | |
|--|-----------------|
| (a) शास्त्रियभाषा (Classical language) | (b) द्वितीयभाषा |
| (c) मातृभाषा | (d) तृतीयभाषा |

Ans : (c)

NCF 2005 के अनुसार कल्पना द्वारा चिन्तन द्वारा एवं साक्षरता द्वारा ज्ञान का अर्जन करना मातृ भाषा के अन्तर्गत समाहित होता है।

Q.40. रचनात्मकशिक्षणेन अभिप्रायः अस्ति?

- | |
|--|
| (a) स्वपाठानुगुणं विभिन्न-सहायकसामग्र्या रचयन्ति |
| (b) छात्राः पाठ्यासमग्र्यां विभिन्न-उदाहरणानि पठन्ति |

- (c) छात्रा स्वानुभवानुगुणं पाठ्यसम्बद्ध-शब्दपद-वाक्यादीनां व्याख्यां कुर्वन्ति
(d) अध्यापककथनानुगुणं शोधकार्यं कुर्वन्ति

Ans : (c)

रचनात्मक शिक्षण का अभिप्राय यह होता है कि छात्र अपने स्वयं के अनुभव के द्वारा पाठ से सम्बन्धित शब्द पद तथा वाक्य इत्यादि की व्याख्या करता है। अपने अनुभव द्वारा छात्र जब शब्दों की व्याख्या करता है तो उसे रचनात्मक शिक्षण कहा जाता है।

Q.41. रूपात्मकं मूल्याङ्कनं (Summative Assessment) मूल्याङ्कनं मन्यते?

- (a) आधगमनाय (b) अधिगमने
(c) अधिगमनमधिकृत्य (At learning) (d) अधिगमनस्य

Ans : (c)

रूपात्मक मूल्यांकन उसे कहते हैं जब सीखने के साथ ही उसका मूल्यांकन किया जाता है अर्थात् 'अधिगम नमधिकृत्य' यह मूल्यांकन प्रणाली ही रूपात्मक मूल्यांकन के रूप में माना जाता है।

Q.42. निम्नलिखितानि लेखनकौशलस्य सोपानानि सन्ति। अत्र किं सोपनं लुप्तम् अस्ति? संकङ्कलनम् रूपरेखा → सम्पादनम् → पुनरावृत्तिः

- (a) वर्गीकरणम् (b) विश्लेषणम्
(c) व्यवस्थितीकरणम् (d) मस्तिष्क-उद्वेलनम्

Ans : (a)

निम्नलिखित में लेखन कौशल के सोपान वर्णित हैं। यहाँ पर वर्गीकरण नामक सोपान विलुप्त है-यथा-सङ्कलनम् रूपरेखा-सम्पादनम् - पुनरावृत्तिः। यहाँ पर वर्गीकरण नामक सोपान लुप्त हो गया है।

Q.43. तृतीयकक्षायाः एका छात्रा कथयति- 'सः कथति'। इदं किं प्रदर्शयति?

- (a) भाविकाले शुद्धवाक्यानि प्रयोक्तुम् तथा शुद्धवाक्यं स्मर्तव्यम्
- (b) छात्रा पठितलट्लकारस्य रूपाणां प्रयोगे समर्था अस्ति। सा धातुस्वरूपं विस्मृत्य पठितसिद्धान्तानाम् अतिसामान्यीकरणं करोति।
- (c) छात्रा सावधानं कार्यं न करोति, अतः दण्डनीया
- (d) बालिका समुचितरूपेण व्याकरणं न पठितवती अतः तस्याः विशिष्टपाठनं भवेत्

Ans : (b)

तृतीय कक्षायाः एका छात्रा कथयति- “सः कथति” यह वाक्य यह प्रदर्शित करता है कि छात्र पठित लट्लकार के रूप को प्रयोग करने में समर्थ है किन्तु वह धातु स्वरूप को विस्मृत कर पढ़े हुए सिद्धान्तों का अतिसामान्यीकरण करता है।

Q.44. उत्तमलेखनं कतमा प्रक्रियाम् अनुसरति?

- (a) प्रारूपलेखनम् अन्तिमरूपलेखनं च
- (b) संशोधनं पुनरवलोकनं च
- (c) विचाराणां लेखनम्, प्रारूपलेखनं, संशोधनम्, पुनरवलोकनम् अन्तिमलेखनं च (d) अन्तिमरूपेण लेखनम्

Ans : (c)

उत्तम लेखन की प्रक्रिया इस प्रकार है- विचार लेखन, प्रारूप लेखन, संशोधन, पुनरावलोकन और अंतिम लेखन।

Q.45. बहुभाषिकता कक्षायां साधनरूपेण व्यवहियेत अर्थात् शिक्षकः

- (a) अनेकभाषाणाम् अध्यापनं कुर्यात्
- (b) मातृभाषया अधिगमं कुर्यात्
- (c) विद्यार्थिनां सर्वासां भाषाणां ज्ञानं कुर्यात्

(d) विद्यार्थिनां भाषाणां उपयोगं कुर्यात्

Ans : (d)

बहुभाषा की कक्षा में साधन रूप से व्यवहृत करना चाहिए अर्थात् शिक्षक को चाहिए कि छात्रों की ही भाषा का उपयोग करे। इससे छात्रों के विषय का ज्ञान समझ में आ जाता है।

Q.46. षष्ठकक्षायाः भाषायाः शिक्षिका स्वच्छात्रेभ्यः परस्पर पुस्तिकानाम् आदानप्रदानं कर्तुं निर्दिशति तथा तत्रत्यत्रुटीनाम् अन्वेषणं कर्तुं सूचयति। एतेन सा कस्य अभ्यासं कारयति?

- (a) सहाध्ययनस्य (Shared reading)
- (b) पठनस्य (Reading)
- (c) समकक्षाणं संशोधस्य (Peer correction)
- (d) प्रतिपुष्टेः प्रदानस्य (Providing feedback)

Ans : (c)

छठी कक्षा की भाषा की शिक्षिका अपने छात्रों के बीच आपस में पुस्तिका के आदान-प्रदान को निर्देशित करती है तथा उनमें व्याप्त त्रुटियों को खोजने को कहती है। इस प्रकार यह प्रक्रिया 'समकक्षा के संशोधन' का अभ्यास कराती है।

Q.47. शिक्षार्थिनां त्रुटिसंशोधनार्थं शिक्षकः

- (a) दोषस्य पुनरावृत्तिकारणात् छात्रं भर्त्सयेत्
- (b) छात्रान् प्रोत्साहयितुं आशावादीप्रवृत्तिं धारयेत्
- (c) छात्राणां दोषान् अधोरेखाङ्कितान् कुर्यात्
- (d) छात्रस्य प्रत्येकं दोषस्य संशोधनं कुर्यात्

Ans : (b)

शिक्षक हमेशा शिक्षार्थियों के त्रुटि संशोधन हेतु छात्रों को प्रोत्साहित करता है और आशावादी प्रवृत्ति को भी धारण करता है।

Q.48. आदौ नियमज्ञानम् अनन्तरं तस्य प्रयोगः इति व्याकरणम् अस्ति

- (a) अवरोहात्मकव्याकरणम् (Deductive grammar)
- (b) नवीनव्याकरणम् (Newgrammar)
- (c) व्याख्यानात्मकं व्याकरणम् (Descriptive grammar)
- (d) आरोहात्मकव्याकरणम् (Inductive grammar)

Ans : (a)

"प्रारम्भ में नियम ज्ञान के बाद उसका प्रयोग करना" ऐसा व्याकरण ज्ञान अवरोधात्मक व्याकरण ज्ञान के अन्तर्गत आता है। अर्थात् पहले नियम बनाना और बाद में उसका प्रयोग करना ही अवरोहात्मकव्याकरण ज्ञान है।

Q.49. शिक्षिका नवनवसन्दर्भेषु भाषयाः प्रयोगार्थं छात्रेभ्यः अवसरं दधात् येन छात्राः

- (a) प्रश्नान् श्रुत्वा उत्तरं दद्युः
- (b) विभिन्नगद्यमद्यानाम् अवगमनं कुर्युः
- (c) कवितानाम् उच्चारणं कण्ठस्थीकरणं च कुर्युः
- (d) स्वयम् अभिव्यक्तिं कुर्युः

Ans : (d)

यदि शिक्षण के समय पर अध्यापक द्वारा छात्र को भाषा ज्ञान के नये-नये आयामों या सन्दर्भों में भाषा प्रयोग हेतु अवसर प्रदान करे तो यह कार्य शिक्षक का छात्र के प्रति उसकी स्वयं की अभिव्यक्ति का उत्थान ही कहा जायेगा।

Q.50. निम्नलिखितेषु किं भाषाशिक्षणस्य उद्देश्यं नास्ति?

- (a) लेखनदक्षता (Proficiency in writing)

(b) सृजनात्मकता (Creativity)

(c) विचाराणाम् अभिव्यक्तिः (Publication of thoughts)

(d) भाषायाः अधिगमः (Understanding language)

Ans : (a)

भाषाशिक्षणस्य उद्देश्य लेखनदक्षता नास्ति। सृजनात्मकता, विचाराणाम् अभिव्यक्तिः, भाषायाः अधिगमश्च। भाषाशिक्षणस्य उद्देश्यं अस्ति। अर्थात् - भाषा शिक्षण के उद्देश्य के अन्तर्गत सृजनात्मकता, विचार अभिव्यक्ति तथा भाषा अधिगम आते हैं तथा लेखन दक्षता भाषा शिक्षण का उद्देश्य नहीं है।

Q.51. शब्दज्ञानपद्धतेः कृते शिक्षण-अधिगमसमस्या (Teaching-learning difficulty) निम्नलिखितेषु केन निवारिता भवति?

(a) क्रमिकवाक्यनिर्माणार्थं साहाय्येन

(b) शुद्ध-उच्चारणेन

(c) बालाः यथा विवरणात्मककलेशस्य सम्मुखं न कुर्युः, तेन

(d) उपर्युक्तं सर्वमपि

Ans : (b)

शब्दज्ञानपद्धतेः कृते शिक्षण-अधिगमसमस्या शुद्धउच्चारणेन निवारिता भवति। अर्थात् - शब्दज्ञान पद्धति के लिए शिक्षण अधिगम समस्या का निवारण शुद्धउच्चारण के द्वारा होता है।

Q.52. एकस्यां समावेशी-कक्ष्यायां (Inclusive class) बालाः अस्मिन् अधिकप्रमादान् आचरन्ति

(a) पठने

(b) लेखने

(c) भाषणे

(d) सर्वेष्वपि

Ans : (d)

एकस्यां समावेशी-कक्ष्यायां बालाः अस्मिन् सर्वेष्वपि अधिकप्रमादान् आचरन्ति। अर्थात् - एक समावेशी कक्षा में बालक पढ़ने, लिखने तथा भाषण में अधिक प्रमाद करता है।

Q.53. छात्राः सहर्षं वक्तुम् इच्छन्ति। 'गतिविधिः अधिकः उद्देश्यपूर्णः भवेत्' इत्यर्थं किं समीचीनम् ?

- | | |
|-------------------------------------|--|
| (a) कार्य-समाप्त्यर्थम् अभिप्रेरणम् | (b) लेखन-पठन-सम्बद्ध-कार्यार्थं निर्देशनम् |
| (c) समुचित-उच्चारणार्थं निर्देशनम् | (d) शब्दकोशं द्रष्टुं प्रेरणम् |

Ans : (d)

"छात्र सहर्ष बोलने की इच्छा करते हैं। गतिविधि अधिक उद्देश्यपूर्ण हो" इसका आशय शब्दकोश देखने की प्रेरणा है। क्योंकि इससे छात्र में भाषा के ज्ञानार्जन में अधिक सहायता मिलती है।

Q.54. लिखितानुच्छेदस्य आकलनार्थं प्रथमं सोपानम् अस्ति

- | | |
|------------------|--|
| (a) शब्दसमृद्धिः | (b) व्याकरणम् |
| (c) शब्दसीमा | (d) विषयवस्तु-सार्थक्यं विचाराभिव्यक्तिः च |

Ans : (d)

लिखित अनुच्छेद के आकलन का प्रथम सोपान विषयवस्तु की सार्थकता और विचार अभिव्यक्ति है। क्योंकि इसी के माध्यम से सम्पूर्ण सार का अनुमान लग जाता है।

Q.55. "छात्राः श्रुतसामग्रीम् अधिकृत्य विशिष्ट-टिप्पणीं लेखितुं समर्थाः भवेयुः" इत्यर्थं कृतगतिविधिः कथ्यते

- | | |
|-------------------------|-----------------|
| (a) सूचना-स्थानान्तरणम् | (b) व्याख्यानम् |
| (c) पुनर्मरणम् | (d) भाविकथनम् |

Ans : (a)

छात्र श्रुत सामग्री को अधिकृत्य का विशिष्ट टिप्पणी लेखन में समर्थ होना चाहिए। यह गतिविधि सूचना स्थानान्तरण कहलाती है।

Q.56. उपलब्धसमस्तसङ्केतोपयोगेन समग्रपाठ्यस्य व्याखना एतदपेक्षते

- (a) शब्दार्थकौशलनम् (b) शब्दार्थकौशलम्
(c) व्याकरणकौशलं संरचनाकौशलं च (d) सान्दर्भिकपाठ्यवस्तुनः अवबोधनम्

Ans : (d)

उपलब्ध समस्त सङ्केतों के उपयोग से समग्र पाठ के व्याख्या सन्दर्भिक पाठ्य वस्तुओं के अवबोधन की अपेक्षा करते हैं।

Q.57. ग्रन्थपाठे नियमानुसारेण यदृच्छया वा अपनीतानां शब्दानां स्थाने छात्रैः पदपूर्णं यस्यां प्रक्रियायां क्रियते सा परीक्षा

- (a) रिक्तस्थानपूरणम् (b) क्लोसू (Cloze) विधानम्
(c) शब्दसमापत्तिः (d) अवधारणम्

Ans : (b)

ग्रन्थ पाठ के नियम के अनुसार स्वेच्छा प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर छात्रों द्वारा वाक्यों की पूर्ति की प्रक्रिया क्लोज विधान के अन्तर्गत आती है।

Q.58. छात्रकेन्द्रितशिक्षाकक्ष्यायाःस्वरूपं किम्?

- (a) कठोरानुशासनम् (b) स्थिरोपवेशनव्यवस्था
(c) क्रियाकलापवैविध्यम् (d) सिद्धिमापनाय नियतपरीक्षा

Ans : (c)

छात्र केन्द्रित शिक्षा कक्षा का स्वरूप क्रिया कलाप की विविधता है। प्रायः छात्रों में कार्य-कौशल की विविधता पाई जाती है। विचारों की पृथक्ता के कारण छात्रों में प्रभृति प्रवृत्तियां होती हैं।

Q.59. साहित्य-शिक्षणे किं सर्वाधिक महत्वपूर्णम्?

- (a) शब्दकोषः (b) छन्दः ज्ञानम्

(c) सम्यक् उच्चारणम्

(d) पाठस्य सन्दर्भः

Ans : (d)

साहित्य-शिक्षणे पाठस्य सन्दर्भः सर्वाधिक महत्वपूर्णम्। तात्पर्य है - साहित्य शिक्षण पाठ के संदर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

Q.60. यदि कोऽपि छात्र शारीरिक-मानसिक-इत्यादि - कारणेभ्यः विभिन्न-गतिविधिषु सक्रियः न भवति तर्हि आवश्यकता अस्ति

(a) उपचारात्मककार्यस्य

(b) नूतनप्रकारेण कक्ष्याव्यावस्थापनस्य

(c) मानवीय-मूल्य-शिक्षायाः

(d) विशिष्ट-शिक्षा-सिद्धान्तानाम्

Ans : (d)

तात्पर्य है - ऐसे छात्र जो शारीरिक-मानसिक इत्यादि कारणों से गतिविधियों में सक्रिय नहीं हैं तो उन्हें विशिष्ट शिक्षा सिद्धान्त की आवश्यकता होती है। इस योजना से छात्र अपने जीवन की गतिविधियों को समझने में पूर्णरूप से सहायक होंगे।

Q.61. कस्मिंश्चित् पाठे प्रयुक्तस्य कस्यापि शब्दस्य 'किं मूल्यम्' इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति

(a) शब्दस्य 'अप्रत्यक्ष-प्रयोगः'

(b) शब्दप्रयोगस्य 'भिन्नानि रूपाणि'

(c) शब्दस्य 'शब्दकोशीयः अर्थः'

(d) शब्दस्य 'सन्दर्भगत-प्रयोग-सार्थक्यम्'

Ans : (d)

कस्मिंश्चित् पाठे प्रयुक्तस्य शब्दस्य 'सन्दर्भगत-प्रयोगसार्थक्यम्' मूल्यम् इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति। तात्पर्य है → किसी भी पाठ में प्रयुक्त किसी भी शब्द का सही अर्थों में मूल्य शब्द का सन्दर्भ ज्ञान होता है, शब्द के सन्दर्भ ज्ञान के द्वारा ही पाठ के विषय का ज्ञान होता है, कि पाठ किस सन्दर्भ में है?

Q.62. एतयोः द्वन्द्वयोः कः युग्मः संज्ञानात्मक - स्वरूपं प्रदर्शयति?

(a) व्याख्यात्मकः/शाब्दिकः

(b) भावात्मकः/औचित्यधीसम्पन्नः

(c) कर्तरि कर्मणि-प्रयोगः

(d) साम्पूर्ण्यम्/विश्लेषणात्मकः

Ans : (d)

इन दोनों युग्मों में सम्पूर्णता तथा विश्लेषणात्मकता का स्वरूप संज्ञानात्मक स्वरूप का प्रदर्शन करता है। ये दोनों ही युग्म संज्ञा शब्द का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Q.63. भाववाच्यात्मकक्रियापदस्य उदाहरणमस्ति?

(a) नृत्यं करोति

(b) हसति

(c) भोजनं खादति

(d) लेखं लिखति

Ans : (b)

भाववाच्यात्मक क्रिया पद का उदाहरण है-हसति। भाववाच्य का अर्थ है-केवल किसी क्रिया का होना दिखाना। यह सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होता है। कर्ता के अनुसार इसके रूप नहीं बदलते, जैसे-तेन भूपते, तैः भूपते, हसति, भूपात इत्यादि।

Q.64. छात्राः अनुच्छेद-सङ्घटनम् अवगन्तुं समर्थाः भवेयुः इत्यर्थम् आवश्यकम्?

(a) विचार-मौल्यम्

(b) शब्द-वस्तार्थम्

(c) शीर्षक-वाक्यं, विस्तार-साहाय्यम् योजकानि च

(d) विचार-प्राचुर्यम्

Ans : (c)

छात्रों को अनुच्छेद का सङ्घटन प्राप्त करने के लिए। समर्थ होना चाहिए, इसके लिए छात्रों को शीर्षक वाक्य अर्थात् अनुच्छेद का शीर्षक क्या होगा इसका ज्ञान होना चाहिए तथा उसकी व्याख्या या विस्तार में सहायक योजकों का ज्ञान होना चाहिए।

Q.65. निम्नलिखितेषु प्रभावि-भाषाशिक्षकस्य भूमिकादृष्ट्या किं श्रेष्ठम्?

(a) व्यवस्थित-शिक्षण-अधिगमन-प्रक्रियार्थम् अनुशासित भूमिका।

- (b) लक्ष्यभाषायाः प्रभावि-प्रयोगार्थं शिक्षार्थिभ्यः सहायकरूपेण प्रचुरावसरप्रदानम्।
(c) प्रत्यादर्शरूपस्य ज्ञानस्य च उद्गमस्थल्योः स्वरूपनिर्धारणम्।
(d) प्रत्येकं बिन्दुम् अधिकृत चेष्टापूर्वकं व्याख्याद्वारा आद्योपान्तं शिक्षणम्।

Ans : (b)

निम्नलिखित में प्रभावी-भाषाशिक्षक की दृष्टि वही श्रेष्ठ है जो लक्षित भाषा के प्रभावी प्रयोग के लिए शिक्षार्थियों के सहायक रूप में पर्याप्त अवसर प्रदान करे अर्थात् विद्यार्थियों को जो सीखने में अधिक अवसर प्रदान करे वही प्रभावी भाषा शिक्षक का लक्ष्य होता है।

Q.66. एका अध्यापिका रचनात्मकमूल्याङ्कनकार्यार्थं छात्रेभ्यः

लघुकथालेखनसम्बद्धकार्यं प्रयच्छति। अस्य कार्यस्य मूल्याङ्कनार्थं किं सर्वाधिक महत्वपूर्णम्?

- (a) मौलिकी रचनात्मिका च कथासामग्री, रुचिकराणि चरित्राणि, व्याकरणनिष्ठभाषा च
(b) सुन्दरं शीर्षकं, समृद्धशब्दावली, शुद्धभाषाप्रयोगः च
(c) सचित्रं प्रभावयुक्तं प्रस्तुतीकरणम्
(d) सुस्पष्ट-स्वच्छ-सुन्दरः हस्तलेखः चित्राणि च

Ans : (a)

एक अध्यापक रचनात्मक मूल्याङ्कन हेतु छात्रों को एक लघुकथा लेखन सम्बन्धी कार्य प्रदान करता है। इसमें छात्रों की मौलिक रचनात्मक अभिवृत्ति, रुचिकर चरित्र एवं व्याकरण निष्ठ भाषा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इससे छात्रों के मौलिकता, रुचि, चरित्र इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है।

Q.67. व्याकरणं कथं पाठनीयम्?

- (a) सन्दर्भगत-अभ्यासेन
(b) स्पष्ट-व्याख्यानेन
(c) लिखितः-कार्येण
(d) नियमैः

Ans : (a)

सन्दर्भित अभ्यास द्वारा व्याकरण को पढ़ना चाहिए। क्योंकि निरन्तर अभ्यास से व्याकरण का ज्ञान बढ़ जाता है।

Q.68. 'अस्माकं छात्राः तथ्यानां संग्रहणे, व्यवस्थापने, प्रारूपनिर्माणे, सम्पादने, पुनर्दर्शने च समर्थाः भवेयुः । इत्यर्थं ते प्रेरयितव्याः।' अस्मिन् कथने किं भाषाकौशलं निर्दिष्टम्?

- (a) श्रवणम् (b) लेखनम् (c) भाषणम् (d) वाचनम्

Ans : (b)

हमारे छात्र तथ्यों के संग्रहण में, व्यवस्थापन में, प्रारूप निर्माण में, सम्पादन में और पुनर्दर्शन में समर्थ होना चाहिए। इस प्रकार उन्हें प्रेरित किया जाना चाहिए। इस कथन में भाषा कौशल की लेखन वृत्ति निर्देशित होती है।

Q.69. काचित् बाला यदि मातृभाषया सम्यक्तया पठति, तर्हि.....

- (a) सा अनेकासु भाषासु पठितुं लेखितुं च शक्नोति।
(b) सा सम्यक्तया पठितुं शक्नोति परन्तु मातृभाषया लेखितुं न शक्नोति
(c) सा स्वपठनकौशलस्य प्रयोगं द्वितीयभाषाया अधिगमे कर्तुं शक्नोति
(d) सा स्वपठनकौशलस्य उपयोगं द्वितीयभाषायाः अधिगमे कर्तुं न शक्नोति

Ans : (d)

कोई बाला यदि मातृभाषा में ठीक से पढ़ती है तो वह स्वपठन कौशल का उपयोग द्वितीय भाषा में अधिगम में करने में समर्थ नहीं हो सकती।

Q.70. एकस्य शब्दस्य ज्ञानं नाम

- (a) तस्य मूलस्य ज्ञानम् (b) तस्य रूपस्य ज्ञानम्
(c) तस्य अर्थस्य ज्ञानम् (d) तस्य वर्तनीज्ञानम्

Ans : (c)

एक शब्द के ज्ञान का नाम है उसके अर्थ को जानना। क्योंकि शब्द के अर्थज्ञान से ही उसकी समझ हो पाती है।

Q.71. यदा विद्यार्थिनः पुरकपठनसामग्रीषु एकां लघुकथा पठन्ति, तदा ते

- (a) कठिनशब्दानां वर्तनीज्ञानार्थं पठेयुः (b) लेखनकौशलस्य विकासार्थं पठेयुः
(c) पठितांशे प्रत्येकं शब्दस्य अर्थज्ञानं कुर्युः (d) आनन्दानुमूत्यर्थं पठेयुः

Ans : (d)

जब छात्र पूरक पाठ सामग्री के साथ एक लघुकथा को पढ़ते हैं तब वे आनन्द की अनुभूति होगी- इस अर्थ में अध्ययन करते हैं।

Q.72. यात्रावृत्तम् एका विधा अस्ति

- (a) कवितायाः (b) समीक्षायाः (c) असम्बद्धनिबन्धस्य (d) साहित्यस्य

Ans : (d)

'यात्रावृत्त' साहित्य की एक विधा है। इसी तरह संस्मरण, स्मृति रेखायें भी इसी के अन्तर्गत आती हैं।

Q.73. सर्वेषां बालानां भाषाधिग्रहणक्षमता जन्मजाता एव अस्ति इति केन विदुषा उक्तम्?

- (a) वायगोत्स्की (Vygotsky) (b) नोम चॉमस्की (Noam Chomsky)
(c) स्टीफेन क्रशेन (Stephen Krasben) (d) बी.एफ. स्किनर (B.F. Skinner)

Ans : (b)

‘नोम चामस्की’ विद्वान के अनुसार भाषा अधिग्रहण के सम्बन्ध में यह विचार है- “सभी बालकों की भाषा अधिग्रहण की उनकी क्षमता जन्म से ही प्राप्त होती है अथवा जन्म जात ही है।”

Q.74. भाषाशिक्षणे अधिगमसामग्र्याः (Learning material) अतिमुख्या समस्या अस्ति

- (a) अधिगमसामग्र्याः कठिनबिन्दूनाम् उपरि उचितविवरणम्
- (b) अध्यापने अध्यापकस्य न्यूनश्रमेण कार्यसिद्धिः
- (c) अल्पसमये अधिकविषयस्य उपलब्धिः
- (d) पाठं प्रति विद्यार्थिनां श्रद्धावर्धनम्

Ans : (a)

भाषाशिक्षणे अधिगमसामग्र्याः अतिमुख्या समस्या 'अधिगमसामग्र्याः कठिनबिन्दूनाम् उपरि उचितविवरणम्।' अर्थात् भाषा शिक्षण में अधिगम सामग्रियों की मुख्य समस्या है - अधिगम सामग्री के कठिन बिन्दुओं पर उचित विवरण को उपलब्ध कराना।

Q.75. कौशल-उद्देश्येषु (Skill objectives) किं निम्नलिखितं सम्बद्धं नास्ति?

- (a) श्रवणम्
- (b) भाषायाम् आसक्तिः
- (c) पठनम्
- (d) लेखनम्

Ans : (b)

कौशल-उद्देश्येषु सम्बद्धं भाषायाम् आसक्तिः नास्ति। अर्थात् - कौशल उद्देश्यों में श्रवण (सुनना), पढ़ना तथा लिखना आदि का सम्बद्ध कौशल उद्देश्य के अन्तर्गत आते हैं, जबकि भाषाओं में आसक्ति का सम्बद्ध कौशल उद्देश्य में नहीं है।

Q.76. 'अर्थज्ञानद्वारा सम्प्रेषणक्षमता-विकासः' इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति

- (a) व्याकरणात्मकी संरचना
- (b) शङ्का-निवारणार्थं शिक्षकैः सह वार्ता पाठ्यक्रमस्य च स्पष्टीकरणम्

(c) शब्दार्थन् प्रयोगान् च ज्ञातुं शब्दकोशस्य उपयोगः

(d) अवबोधनार्थं सूचनायाः आदानं प्रदानञ्च, स्पष्टीकरणं पुनर्रचना च

Ans : (d)

अर्थज्ञान द्वारा सम्प्रेषण क्षमता का विकास होता है। इससे अवबोधन की सूचना के आदान-प्रदान स्पष्टीकरण एवं पुनर्रचना का विकास होता है।

Q.77. सन्दर्भवैविध्य-गतिविधिप्रयोग-प्रतिपुष्टि -इत्यादीनां दृष्ट्या किम् अनुदेशनं छात्रेभ्यः अधिकान् अवसरान् प्रददाति?

(a) प्रत्यक्षम्

(b) दूरस्थम्

(c) अभिक्रमितम्(Programmed)
aided)

(d) सङ्गणक-सम्बद्धम्(Computer-

Ans : (d)

सन्दर्भ वैविध्य-गतिविधि प्रयोग-प्रतिपुष्टि इत्यादि दृष्टि से सङ्गणक सम्बद्ध अनुदेशन छात्रों को विशेष अवसर प्रदान करता है।

Q.78. व्याकरणात्मकम् अनुदेशनं तदैव स्वाभाविकं मन्यते यदा

(a) लेखनात् भाषणात् वा पूर्वं व्याकरणाभ्यासार्थं प्रयत्नाः क्रियन्ते

(b) अध्यापकैः अल्पकालिक-व्याकरणकक्ष्या स्वीक्रियते

(c) छात्राः स्वयमेव लेखन-भाषण-समये सजगाः भूत्वा त्रुटि संशोधनम् अपि कुर्वन्ति

(d) अध्यापकाः निरन्तरं सिद्धान्त-पाठने संलग्नाः भवन्ति

Ans : (c)

व्याकरणात्मक अनुदेशन तभी स्वाभाविक रूप से माना जाता है जब छात्र स्वयं ही लेखन भाषण के समय सजग होकर त्रुटियों का संशोधन भी करते हैं।

Q.79. मौल्याङ्कनं नाम

- (a) लक्ष्यसिद्धिमापनम् (b) रचनात्मिका संकलनात्मिका च परीक्षा
(c) वार्षिकी परीक्षा (d) कक्ष्यापरीक्षया सह आकलनैकीकरणम्

Ans : (a)

मूल्याङ्कन का नाम लक्ष्य सिद्धि मापन होता है। मूल्याङ्कन पद्धति से व्यक्ति के गुण-दोषों का विवेचन होता है इससे व्यक्तित्व में निखार आता है।

Q.80. विशिष्टछात्राणां बोधनाय

- (a) मुख्यधारायामेव प्रवेश्य अन्यैः छात्रैस्सह बोधनं कर्तव्यम्
(b) तेभ्यो विशिष्टपाठचर्या कल्पनीया
(c) पृथक् तेषां परीक्षा भवेत्
(d) ते विशेषशालासु अध्यापनीयाः

Ans : (a)

विशिष्ट छात्रों की जानकारी हेतु मुख्य धारा में प्रवेश करके छात्रों के साथ जानकारी प्राप्त करना चाहिए। शिक्षा का स्वरूप ही ऐसा होता है कि उसकी बोधता समान्य से विशिष्ट दोनों ही छात्रों में समान रूप से होनी चाहिए।

Q.81. छात्रस्वायत्तता अनेन प्रोत्साहिता भवति

- (a) कक्ष्यायां सर्वे छात्राः पर्यायेण नायकाः क्रियन्ते इति विधानेन
(b) छात्रेषु अनुशासनस्य उपनिक्षेपणेन
(c) स्वमूल्याङ्कने सहाध्याय्याकलने च छात्राणां समावेशनेन
(d) असकृत् गृहाध्ययने नियोजनेन

Ans : (c)

छात्र स्वायत्तता को अनेक प्रकार से प्रोत्साहित किया जा सकता है जिसमें स्वमूल्यांकन करने में छात्रों को समावेशित किया जा सकता है।

Q.82. व्याकरण-शिक्षणार्थं किं सर्वाधिक महत्वपूर्णम्?

- (a) नियमानां स्मरणम् (b) विभिन्नसन्दर्भेषु पाठ्यबिन्दूनाम् अभ्यासः
(c) स्वच्छ-सुन्दर-लेखः (d) जीवन-कौशलानि

Ans : (b)

व्याकरण-शिक्षणार्थं विभिन्नसन्दर्भेषु पाठ्यबिन्दूनाम् अभ्यासः सर्वाधिक महत्वपूर्णम् अस्ति। तात्पर्य है - व्याकरण शिक्षण के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है विभिन्न प्रकार के सन्दर्भों में पाठ्य बिन्दु का अभ्यास करना।

Q.83. पाठ्यवस्तु-निहित विभिन्नशब्दानां साहाय्येन नूतनानाम् अपरिचितानां शब्दानाम् अर्थज्ञानप्रक्रिया केन कौशलेन सम्बद्धा?

- (a) श्रवणेन (b) भाषणेन (c) पठनेन (d) लेखनेन

Ans : (c)

तात्पर्य है - जब विद्यार्थी पाठ्यवस्तु आधारित शब्दों के आधार पर नये, अपरिचित शब्दों के अर्थ ज्ञान को समझने का प्रयास करता है, तो वह पठन क्रिया द्वारा शब्दार्थ को समझता है, अतः पठन क्रिया नये व अपरिचित शब्दार्थ को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

Q.84. भाषण-कौशल-मूल्याङ्कनार्थम् अनिवार्यम्

- (a) सम्भाषणम् (b) निरन्तरं श्रवणम्
(c) संवाद-लेखनम् (d) भावानुगुणं पाठ्यवस्तुनः विश्लेषणम्

Ans : (a)

भाषण-कौशल-मूल्याङ्कनार्थम् अनिवार्यम् सम्भाषणम् अस्ति। तात्पर्य है - भाषण कौशल मूल्याङ्कन के लिए सम्भाषण अत्यधिक आवश्यक है। सम्भाषण का अर्थ है समान रूप से भाषण करना।

**Q.85. लेखः लघुः वर्तते चेत् तृतीयपुरुषे पूर्णयतु विना अप्रस्तुतवाचा,
अध्वन्यात्मकरीत्या तथा अतार्किकरीत्या पूर्णयतु**

(a) समाचारपत्रलेखनम् (b) वर्गीकृतप्रकटनम् (c) विज्ञप्तिः (d) प्रतिवेदनम्

Ans : (d)

छोटे लेख में विद्यमान तीसरा पुरुष के बिना पूर्ण करना अप्रस्तुतवाची, अध्वन्यात्मक रीति तथा अतार्किक रीति को प्रतिवेदन पूर्ण करता है। इसे प्रतिवेदन कहते हैं।

Q.86. नटानां सूक्तसमूहवाचकपदम्?

(a) पात्रः (Characters) (b) अध्यापकवृन्दः (c) समूहः (d) जनपदः

Ans : (a)

नटानां सूक्तसमूहवाचक पद पात्र को कहा जाता है। नाटकों में नट पात्र होते हैं जैसे-सूत्रधार, यह नाटक का प्रारम्भकर्ता और रंगमंच का अध्यक्ष होता है तथा नटी स्त्री-पात्र है जो सूत्रधार की स्त्री होती है।

Q.87. कः प्रकारात्मकः शब्दः (Functional word)?

(a) किमपि न (b) रचनात्मक (c) विक्षिप्त (d) सर्वे

Ans : (b)

रचनात्मक शब्दों को प्रकारात्मक शब्द कहते हैं। शब्दों को प्रकारात्मक शब्द नहीं कह सकते हैं और न ही विक्षिप्त को प्रकारात्मक शब्द कहा जाता है। अतः प्रकारात्मक शब्द रचनात्मक होते हैं।

**Q.88. 'सतत-व्यापक-मूल्याङ्कनम्' इत्यनेन सम्बद्धा 'व्यापक' इति सङ्कल्पना
छात्रस्य वृद्धिविकासान्तर्गतेपक्षं विवृणोति।**

(a) सह-शैक्षणिकस्य (b) शैक्षणिक-सहशैक्षणिकयोः
(c) सम्पूर्णशैक्षिकस्य (d) शैक्षणिकस्य

Ans : (b)

'सतत-व्यापक-मूल्याङ्कन' इससे सम्बद्ध पद 'व्यापक' इस संकल्पना से छात्र के वृद्धि एवं विकास के अन्तर्गत शैक्षणिक तथा सहशैक्षणिक दोनों पक्षों का होना आवश्यक है।

Q.89. उपचारात्मक शिक्षण मन्यते?

- (a) निदानम् अधिगमनात्मक-रिक्ति-संज्ञानम् च
- (b) मेधाविछात्रान् उद्दिश्य शिक्षणम्
- (c) प्रदत्तपाठ्यक्रमोत्तर-शिक्षणम्
- (d) अतिरिक्त-शिक्षणम्

Ans : (a)

निदान और अधिगमनात्मक-रिक्ति-संज्ञान उपचारात्मक शिक्षण माने जाते हैं।

Q.90. कस्यापि जनस्य विशिष्ट-क्षमतानां कौशलानां, यथा, सङ्गीत-विज्ञान-औषध-इत्यादीनां, रचनात्मकताम् (Potential) अन्वेष्टुं मापयितुं कृता परीक्षा किं कथ्यते?

- (a) अभिवृत्ति-परीक्षा (Aptitude Test) (b) प्रवृत्ति-परीक्षा (Attitude Test)
- (c) उपलब्धि-परीक्षा (Achievement Test) (d) नैपुण्य-परीक्षा (Proficiency Test)

Ans : (a)

किसी भी प्रकार के लोगों की विशिष्ट क्षमताओं, कौशलों यथा-सङ्गीत - विज्ञान - औषध इत्यादि रचनात्मकता के खोज के लिए, मापन के लिए इस प्रकार की परीक्षा (परीक्षण) को अभिवृत्ति - परीक्षा (Aptitude Test) कहते हैं।

Q.91. समाविष्ट-कक्षाम् (Inclusive Classroom) आश्रित्य निम्नलिखित-युक्तिषु असमीचीना अस्ति

- (a) सङ्गणक-आधारित-उपचारात्मककार्येण सह सम्प्रेषणात्मक प्रविधीनाम् अतिरिक्त-साहाय्यम्।
- (b) सर्वे छात्राः सुयोग्याः भवेयुः इत्यर्थं विविध-संसाधनानाम् उपयोगः
- (c) छात्राः स्वगत्यनुगुणम् अधिगच्छेयुः इत्यर्थं विभिन्न-अनुदेशन मूल्याङ्कन-प्रणालीनाम् उपयोगः
- (d) विभिन्नविषयाणां सन्दर्भे अनुकूलित-संशोधित-विकल्पात्मक

Ans : (d)

समाविष्ट कक्षा में विभिन्न विषयों के सन्दर्भ में अनुकूलित संशोधित विकल्पात्मक गतिविधियाँ असमीचीन हैं।

Q.92. निम्नलिखितेषु किं समाविष्ट-कक्षया सम्बद्धं न?

- (a) समानुभूतिः (empathy) (b) सहयोगः (Co-operation)
- (c) सहकार्यता (Collaboration) (d) सहानुभूतिः (Sympathy)

Ans : (d)

समानुभूति, सहयोग एवं सहकार्यता कक्षा से सम्बद्ध होती है। सहानुभूति का कक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं होता। सहानुभूति का सम्बन्ध प्राणिमात्र के बीच भाव जगत में होती है।

Q.93. एकः शिक्षकः चित्रेण सह गृहस्य दृश्यस्य वर्णने संलग्नः। चित्रे पिता पाकशालायां पाकक्रियायां संलग्नः, माता सङ्गणकस्य साहाय्येन कार्ये संलग्ना, पुत्रः च सीवनप्रक्रियायां लग्नः। अध्यापकः चित्रद्वारा किं स्पष्टीकर्तुम् इच्छति?

- (a) कार्यस्य महत्त्वम् (b) कार्यविभाजनम्
- (c) लिङ्ग-सम्बद्ध-पूर्वधारणानाम् उन्मूलनम् (d) कार्यम् एव पूजा

Ans : (c)

एक शिक्षक चित्र के साथ घर (गृह) के दृश्य का वर्णन करता है। चित्र में पिता पाकशाला (रसोई) में पाक क्रिया कर रहा है; माता सङ्गणक के साथ कार्य में लगी हुई है और पुत्र सीवन(सिलाई) प्रक्रिया में लगा हुआ है। यहाँ पर अध्यापक चित्र द्वारा लिङ्ग सम्बन्ध पूर्व धारणा के उन्मूलन को स्पष्ट करता है

Q.94. रचनात्मक मूल्याङ्कन क्रियते

- | | |
|--------------------------------|------------------------|
| (a) एकैकस्य पाठस्य/पठनपाठनसमये | (b) सततमूल्याङ्कनरूपेण |
| (c) सत्रान्ते | (d) सत्रादौ |

Ans : (b)

रचनात्मक मूल्यांकन एक पाठ का अथवा पठन, पाठन के समय किया जाता है। क्योंकि सतत मूल्यांकन से तेजी से रचनात्मकता पर प्रकाश पड़ता है।

Q.95. विभिन्नविषयाणं ज्ञानस्य कृते विद्यार्थिनः मातृभाषायाः उपयोगः

- (a) ज्ञानप्राप्तौ साहाय्यं करिष्यति
- (b) इतरभाषणां विषयाणं व अधिगमे बाधकः भविष्यति
- (c) अन्यासां भाषाणां ज्ञानार्थं विघ्नं जनयिष्यति
- (d) संस्कृतभाषायाः कक्षायां अनुमोदितः न स्यात्

Ans : (a)

विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी मातृभाषा का उपयोग ज्ञान प्राप्ति में सहायता करता है। क्योंकि मातृभाषा का ज्ञान अधिक उपयोगी होता है। इससे समझ विकसित होती है।

Q.96. शिक्षिका कक्षायां स्थितानां वस्तूनां नामानि कर्गदपट्टिकायां लिखित्वा वस्तूनाम् उपरि आरोपयति। एवं सा

- (a) छात्राणं शुद्धवर्तनीज्ञानं कारयति
- (b) कक्षा व्यवस्थितां करोति

- (c) कक्षायां वातावरणं मुद्रितपठनसामग्रीमयं करोति
(d) पर्यावरणविज्ञानस्य (EVS) पाठनं करोति

Ans : (c)

शिक्षिका कक्षा में स्थित वस्तुओं के नाम को कर्गद की पट्टिका पर लिखकर वस्तुओं को आरोपित करता है। इस प्रकार वह कक्षा का वातावरण मुद्रित पठन सामग्रीमय करती है।

Q.97. भाषायाः अधिग्रहणसमये किं प्रथमम् आगच्छतिः?

- (a) अर्थः (b) उभयं रूपम् अर्थश्च
(c) वर्णमालायाः अक्षराणि (d) रूपम्

Ans : (a)

भाषा अधिग्रहण करते समय सबसे पहले अर्थ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अर्थात् सर्वप्रथम् पहले सोपान में भाषा का ज्ञान अर्थ के ज्ञान पर निर्भर रहता है।

Q.98. उत्पादकशब्दावली (Productive vocabulary) सन्निवेशयति

- (a) श्रवणसमये अभिज्ञातान् शब्दान्
(b) लेखनसमये प्रयुक्तान् शब्दान्
(c) सम्भाषणसमये लेखनसमये च प्रयुक्तान् शब्दान्
(d) सम्भाषणसमये प्रयुक्तान् शब्दान्।

Ans : (c)

सम्भाषण और लेखन के समय प्रयोग किये गये शब्द या शब्द युक्त शब्दावली उत्पादक शब्दावली कहलाती है।

Q.99. लेखनस्य प्रक्रियास्वरूपानुसारं (Process writing) शिक्षिका विमर्शण

(Brainstorming) सह प्रारम्भं करोति। अत्र विमर्शः (Brainstorming) इत्यस्य आशयः

- (a) उपस्थितविषयोपरि विचाराणां सङ्ग्रहः उपस्थापनं च
- (b) स्वस्थबुद्धेः कृते यौगिकव्यायामः
- (c) उपस्थितविषयस्य बोधार्थं बुद्धौ बलाघातः
- (d) बुद्धौ ज्ञानस्य चक्रवातकरणम्

Ans : (a)

लेखन की प्रक्रिया के अनुसार कोई एक शिक्षिका परस्पर विमर्श के साथ पाठ का यदि प्रारम्भ करती है। तब शिक्षिका का यह विमर्श उस समय उपस्थित विषय के ऊपर विचारों से सङ्ग्रहण की स्थापना को सिद्ध करता है।

Q.100. केचन छात्राः सूचि-लिखित-उत्तरेभ्यः शीर्षकसहितं समुचितम् उत्तरम् अन्वेष्टुं निर्दिष्टाः। पूर्वम् एव ते सामग्र्याः स्वरूपविषये किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छन्ति। इदं किम्?

छात्राः

- (a) सूचनान्तरालं पूरयन्तः सन्ति
- (b) सक्रियरूपेण सामग्र्याः सन्दर्भे पूर्वानुमानप्रक्रियायां संलग्नाः
- (c) तथ्यानां निरीक्षणे संलग्नाः
- (d) प्रश्नोत्तरसन्दर्भे ऊहां (Guess) कुर्वन्ति

Ans : (b)

यदि किसी छात्र को सूची लिखित उत्तर शीर्षक सहित उत्तर देने के लिए निर्दिष्ट किया गया है तो इसका अर्थ है छात्रों से पूर्वनमान प्रक्रिया के आधार पर संलग्न क्रिया के लिए कहा गया है।

Q.1. अध्यापकः/अध्यापिका उदाहरणैः व्याकरणात्मकसंरचनां पाठयितं दृश्य-श्रव्य-उपकरणानां प्रयोगं करोति। छात्राः प्रभावि-सम्प्रेषणार्थं, लेखनेन भाषणेन वा, एतेषां पाठित-तत्त्वानां सम्यक् उपयोगं कुर्वन्ति। एषा प्रक्रिया अस्ति

(a) रचनात्मकी

(b) पुनरात्मकी

(c) आगमनात्मकी

(d) निगमनात्मकी

Ans : (c)

अध्यापक/अध्यापिका उदाहरण के लिए व्याकरणात्मक संरचना को स्पष्ट करने हेतु दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करते हैं। छात्रों के प्रभावी सम्प्रेषण, लेखन एवं भाषण इन पठित-तत्वों का सम्यक उपयोग करते हैं। यह प्रक्रिया आगमनात्मक प्रक्रिया कहलाती है।

Q.2. अधिगन्तारः प्रायः ज्ञान-निर्मातारःअपि भवन्ति। भाषा-कक्ष्यया इदं साधयितुं कः समीचीनः उपायः?

- (a) लक्ष्यभाषया सम्बद्ध-पाठ्यवस्तुनः अधिकाधिकं पठनम्
- (b) पूर्वनिर्धारित-प्रायोजनात्मकं कार्यं प्रतिष्ठाः च
- (c) विभिन्नगतिविधीनां द्वारा नूतनसन्दर्भेषु भाषा-प्रयोगार्थम् अधिकाधिक-अवसरणां प्रदानम्
- (d) छात्राणाम् अधिगम-क्षमता-विकासार्थम् अधिगम-सामग्र्याः उपलब्धिः

Ans : (c)

विभिन्न गतिविधियों द्वारा नूतन संदर्भ से भाषा प्रयोग के अर्थ में अधिकाधिक अवसर प्रदान करना भाषा कक्षा को साधित करने का यह समीचीन उपाय है।

Q.3. विचारमन्थनं (Brain storming) सप्रयोजनं भवति

- (a) यदा सुविचारेभ्यो बहिर्गन्तुमिष्यते
- (b) यदा चिन्तनविधानानि स्थापितानि
- (c) यदा मूलभूतविचारः प्रचारयितुम् इष्यते
- (d) यदा विषयाभिवीक्षणे सर्जनात्मकविधानानां संवर्धनमपेक्षितम्

Ans : (d)

सर्जनात्मक विधान के संवर्द्धन में विचार मंथन की अपेक्षा होती है। विचार मंथन के परिणाम स्वरूप ही नई विधा का प्रतिपादन होता है।

Q.4. भाषाबोधकानाम् आद्यं कर्तव्यम्

- (a) छात्राणां संवहनकौशलाभिवर्धने साहाय्यम्
- (b) छात्राणं भाषादोषशोधनम्
- (c) सविवरणं सम्पूर्णपाठबोधनम्
- (d) व्याकरणपरिकल्पनानां विवरणं रूपनिष्पत्तौ अभ्यासवर्गप्रदानं

Ans : (a)

छात्रों में कौशल अभिवर्धन में सहायता हेतु भाषा बोध की पहली आवश्यकता है। भाषा की पूर्ण जानकारी होना कौशल छात्रों की विषयगत कुशलता का सही मानदण्ड प्रतिस्थापित करती है।

Q.5. पठनकौशलम् अनेन प्रभावितं भवति

- (a) छात्रस्य संज्ञानस्तरः
- (b) पाठ्यपुस्तकानां मूल्यं तथा स्वरूपम्
- (c) छात्रस्य सामाजिकी आर्थिकी च परिस्थितिः
- (d) पाठकस्य उद्देशः आसक्तिश्च, एवं पाठ्यस्य काठिन्यस्तरः

Ans : (d)

पठन कौशल पाठक के उद्देश्य आसक्ति (रुचि) एवं पाठ के कठिनाई से प्रभावित होता है। यदि पाठक में भाषागत दुरुहता का बोध होता है तो पठन कौशल प्रभावित होता है।

Q.6. कोऽपि छात्रः अनुकरणापेक्षया मूलरूपेण रचनात्मकं लेखनं लिखति। इदं किं कथ्यते

- (a) कथालेखनम्
- (b) संवादलेखनम्
- (c) सृजनात्मकलेखनम्
- (d) पत्रलेखनम्

Ans : (c)

सृजनात्मकलेखनम् छात्रः अनुकरणापेक्षया मूलरूपेण रचनात्मकं लेखनं लिखति। तात्पर्यं है - सृजन करने वाला लेख ही छात्र अनुकरण की अपेक्षा मूलरूप से रचनात्मक लेख में लिखते हैं। ना कि कथालेख, कथालेख बौद्धिक क्षमता को बढ़ाता है, ना कि संवाद लेख, संवाद लेख तार्किक क्षमता को बढ़ाता है, ना कि पत्रलेखन, पत्रलेखन भावनाओं से सम्बन्धित होता है।

Q.7. गृहकार्यस्य मुख्योद्देश्यः अस्ति

- (a) छात्राः गृहे नवीनपाठान् पठितुं रुचिं प्रदर्शयेयुः
- (b) अभिभावकाः जीनीयुः यत् छात्राः विद्यालये किं किं पठन्ति
- (c) पाठितपाठान् अधिकृत्य अभ्यासं कुर्युः
- (d) पठने छात्ररुचि-वर्धनम्

Ans : (c)

गृहकार्यस्य मुख्योद्देश्यः पठितपाठान् अधिकृत्य अभ्यासं कुर्युः अस्ति। तात्पर्यं है - गृहकार्य का मुख्य उद्देश्य पढ़े हुए पाठ का अधिक से अधिक अभ्यास करना।

Q.8. श्रवणकौशलविकासाथं कः उत्तमः मार्गः?

- (a) विद्यालयस्य विभिन्नकार्यक्रमेषु भाषाश्रवणस्य अवसराः
- (b) कथितवाक्यानां पुनरावृत्तिः
- (c) छात्रकथनानां सावधानं श्रवणम्
- (d) 'ध्यानेन शृण्वन्तु' इति छात्रेभ्यः पुनः पुनः निर्देशदानम्

Ans : (a)

श्रवणकौशलविकासाथं विद्यालयस्य विभिन्नकार्यक्रमेषु भाषाश्रवणस्य अवसराः उत्तमः मार्गः। तात्पर्यं है - श्रवण कौशल के विकास के लिए विद्यालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में प्रयोग किए जा रहे भाषाओं का श्रवण करना ही उत्तम (सर्वश्रेष्ठ) मार्ग है।

Q.9. विस्तृतपदानां प्रतीपक्रमः?

- (a) मन्त्रः (संस्कृतम्)- मन्त्रः (हिन्दी) (b) चोरः - चुरति
(c) भारत + युरोपीय – भारोपीय (d) प्रयोजकः - अप्रयोजकः

Ans : (d)

विस्तृतपदानां प्रतीपक्रमः का प्रयोग प्रयोजक तथा अप्रयोजक के लिए किया गया है। प्रयोजक उसे कहते हैं जो आयोजनकर्ता होता है। किसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए जो कार्य करता है उसे प्रयोजक कहते हैं।

Q.10. आकलनस्य निकषः (Criteria)

- (a) अङ्कनमार्गदर्शिका (b) परीक्षामार्गदर्शन-मूल्याङ्कननिर्देशः
(c) प्रश्नक्रमेण अङ्कानां विभागः (d) विद्यार्थिनां सामर्थ्यस्य सामान्यज्ञानम्

Ans : (d)

आकलन की कसौटी वह होती है जो विद्यार्थियों के सामान्य जानकारी के सामर्थ्य का परीक्षण करती है अर्थात् सामान्य ज्ञान के आधार पर विद्यार्थियों के ज्ञान का आकलन करना ही उसकी कसौटी है।

Q.11. शीर्षकस्य मुख्यसम्बन्धः भवति

- (a) मुख्यपात्रस्य कथनेन (b) पाठस्य मुख्यांशेन
(c) पाठस्य मुख्यसूक्त्या (d) सम्पूर्णपाठेन

Ans : (d)

शीर्षक का मुख्य सम्बन्ध सम्पूर्ण पाठ से होता है। जब तक सम्पूर्ण पाठ का पठन नहीं हो जाता है तब तक शीर्षक का निर्धारण करना असंगत होता है। सम्पूर्ण पाठ के पढ़ लेने के बाद जो भाव मूलतः ग्रहण होता है वही उसका शीर्षक होता है।

Q.12. निम्नलिखितेषु किं मूल्यं समाविष्ट -कक्षया (Inclusive Classroom) सम्बद्धं न अस्ति?

(a) सहानुभूति: (b) परस्परं साहाय्यम् (c) सहयोगः (d) समानुभूतिः

Ans : (a)

निम्नलिखित मूल्यों में सहानुभूति नामक मूल्य समाविष्ट या सामूहिक कक्षा से सम्बद्ध (सम्बन्धित) नहीं है जबकि परस्पर सहायता, सहयोग तथा समानुभूति समूह कक्षा से सम्बन्ध रखते हैं।

Q.13. प्रो.यशपालसमितिद्वारा' भारं विना अधिगमनम्'

(Learning Without Burden) इति नाम्नि प्रतिवेदने कानिचित् अनुशंसनानि कृतानि।

निम्नलिखितेषु किम् अनुशंसनं न?

- (a) गृहकार्यस्य मात्रा न्यूनी-भवेत्
- (b) शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया गतिविधि-आधारिता मनोरञ्जिका च भवेत्
- (c) पाठ्यपुस्तकेषु प्रतिबन्धः भवेत्।
- (d) छात्राः भारयुक्तस्यूतं न स्वीकुर्युः

Ans : (b)

प्रो. यशपाल समिति द्वारा 'बिना भार के अधिगमन' (सीखना) इस भाग से प्रतिवेदन दिया है जिसमें कुछ अनुशंसायें प्रदान की गई हैं, इनमें से निम्नलिखित अनुशंसा नहीं सम्मिलित है, यथा-शिक्षण - अधिगम - प्रक्रिया गतिविधि आधारित और मनोरंजनपूर्ण होता है।

Q.14. बालानां निःशुल्क-आवश्यक-शिक्षा-अधिकार अधिनियमानुसारं (2009)

शिक्षास्वरूपं कीदृक् भवेत्?

- (a) मासिकपरीक्षणद्वारा शिक्षास्तरवर्धनम्
- (b) छात्रानुकूल-गतिविधि-अनुसन्धान-प्रदर्शनद्वारा शिक्षणम्।

- (c) विद्यालयकालान्तरम् अभिभावकैः अतिरिक्तशिक्षणम् ।
(d) प्रारम्भिकस्तरे शैक्षिकविषयाणां शिक्षणम् एव आवश्यकम्।

Ans : (b)

छात्रों के अनुकूल गतिविधियाँ एवं अनुसन्धान प्रदर्शन द्वारा शिक्षा प्रदान करना बाल निःशुल्क आवश्यक शिक्षा अधिकार अधिनियम (2009) का स्वरूप है। इसके द्वारा 6 से 14 वर्ष के बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया।

Q.15. निम्नलिखितं वाक्यद्वयं पठत अध्यापिका बालकं पृच्छति। बालकः अध्यापिकां पृच्छति। किं स्पष्टीकर्तुम् इदं समीचीनम् उदाहरणम्?

- (a) यदि विभक्तिपरिवर्तनं भवति, वाक्यस्य अर्थः अपि परिवर्तते
(b) वाक्यद्वयं कर्मवाच्यस्वरूपं स्पष्टीकरोति
(c) वाक्यद्वयं संज्ञा-क्रिया-सम्बन्धं प्रतिपादयति
(d) उभयोः वाक्ययोः कोऽपि भेदः न अस्ति यतो हि उभयोः वाक्ययोः समानाः शब्दाः

Ans : (a)

“अध्यापिका बालकं पृच्छति। बालकः अध्यापिका पृच्छति।” इन दोनों वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि यदि विभक्ति परिवर्तन होता है तो वाक्य का अर्थ भी बदल जाता है। क्योंकि विभक्ति कारण, लिंग, काल इत्यादि अर्थ परिवर्तन में सहायक होते हैं।

Q.16. कीदृशाः प्रश्नाः छात्रचिन्तनकौशलं न उन्नयन्ति?

- (a) तार्किकाः प्रश्नाः। (b) व्याख्यात्मकाः प्रश्नाः।
(c) व्यक्तिगत-चिन्तनात्मकाः प्रश्नाः। (d) केवलं पाठ्यवस्तु-पठनाधारिताः प्रश्नाः।

Ans : (d)

ऐसा प्रश्न जो छात्र चिन्तन की उन्नति करता है, वह है तार्किक प्रश्न, व्याख्यात्मक प्रश्न और व्यक्तिगत चिन्तन से युक्त प्रश्न, न कि केवल पाठ्यवस्तु पठन पर आधारित प्रश्न।

Q.17. अनुदेशनकाले अधिगमन-प्रगति-प्रक्रियायाः निर्देशनं शिक्षार्थिभ्यः च निरन्तरं प्रतिपुष्टिपोषणं किं कथ्यते?

- (a) रचनात्मकं मूल्याङ्कनम् (Formative assessment)
- (b) मानक-परीक्षणम् (Standardised test)
- (c) मानक-सन्दर्भित-परीक्षणम् (Norm-referenced test)
- (d) निकष-सन्दर्भित-मूल्याङ्कनम् (Criterion-referenced assessment)

Ans : (a)

अनुदेशन काल में अधिगमन प्रगति-प्रक्रिया का निर्देशन और शिक्षार्थियों द्वारा निरन्तर प्रति पुष्टिपोषण रचनात्मक मूल्यांकन कहलाता है।

Q.18. भाषायाः कक्षायां कथाकथनम् एकपद्धतिरूपेण प्रयोक्तुं न शक्यते

- (a) केवलं नैतिकशिक्षणस्य कृते
- (b) लेखनस्य अध्यापनकृते
- (c) श्रवण-भाषण-बोधनस्य कृते
- (d) पठनकौशलस्य अध्यापनकृते

Ans : (c)

भाषा की कक्षा में कथाकथन की एक पद्धति श्रवणभाषण एवं बोधन का प्रयोग नहीं किया जा सकता। जबकि नैतिक शिक्षण, लेखन अध्यापन तथा पठन कौशल का अध्यापन होता है।

Q.19. कवितापाठनं क्रियते

- (a) विचारणां बोधार्थम् आनन्दानुभूत्यर्थं च
- (b) नवीनशब्दाज्ञानार्थम्
- (c) वर्तन्याः व्याकरणस्य च ज्ञानार्थम्
- (d) छन्दोबद्धरचनायाः ज्ञानार्थम्

Ans : (a)

कविता पाठन विचारों के बोधनार्थ और आनन्द अनुभूति के लिए किया जाता है तथा यह रुचि बढ़ाने में भी उपयोगी है।

Q.20. चतुर्थकक्षायाः शिक्षिका विनीताः छात्राणं श्रवणकौशलस्य मूल्याङ्कनं करोति। श्रवणकौशलपरीक्षणार्थम् अधोलिखितेषु कस्य कार्यस्व्य न्यूनतमा उपयोगिता वर्तते?

- (a) एकं गानं श्रुत्वा विषयबोधः
- (b) वेतारयन्त्रे चलत्क्रिकेटव्याख्यानं श्रुत्वा अवगमनम्
- (c) एकस्याः कथायाः श्रवणं कृत्वा तस्यां घटितानां घटनानां योग्यक्रमेण उल्लेखः
- (d) वार्तालापं श्रुत्वा सारांशग्रहणम्

Ans : (b)

चतुर्थ कक्षा की शिक्षिका विनीता नामक छात्रा से श्रवण कौशल का मूल्यांकन करती है। श्रवण कौशल के परीक्षण में एक गाने के श्रवण का विषय बोध, एक कथा का उल्लेख और वार्तालाप को सुनकर उसका सारांश ग्रहण उपयोगी होता है जबकि रेडियो पर क्रिकेट के व्याख्यान को सुनकर अनुगमन करना उतना उपयोगी नहीं होता।

Q.21. अधोलिखितवाक्येषु कतमं न समीचीनम्?

- (a) इतरविषयाणाम् अधिगमकाले भाषाधिगमः भवति
- (b) विषयाणाम् अधिगमः भाषाद्वारा भवति
- (c) भाषाधिगमार्थं व्याकरणाधिगमस्य आवश्यकता अस्ति
- (d) सर्वे भाषाधिगमाः विषयाधिगमाः भविन्त

Ans : (d)

“सर्वे भाषाधिगमाः विषयाधिगमाः भवन्ति” यह वाक्यांश भाषाधिगम पर ठीक नहीं है। अतः उपर्युक्त चार विकल्पों में यह विकल्प शुद्धता की दृष्टि से सर्वतः अशुद्ध एवं अप्रामाणिक है। क्योंकि ऐसा कभी नहीं हो सकता कि - "सभी भाषाओं का ज्ञान मात्र विषयगत ज्ञान से पूरा हो जाये।”

Q.22. पठनं नाम

- (a) अक्षराणां शब्दानां च कूटज्ञानम्
(c) भाषाधिगमः

- (b) सम्पूर्णशब्दावल्याः अधिगमः
(d) अर्थकरणम्

Ans : (d)

पठन (पढ़ने) का प्रथम सोपान भाषा के अन्तर्गत अर्थज्ञान से है।

Q.23. सुन्दरी एकस्य अभ्यासकार्यस्य नियोजनं कृतवती यस्मिन् सा प्रत्येकं पञ्चमशब्दस्य लोपं कृतवती। एतद् अभ्यासकार्यम् अस्ति

- (a) व्याकरणपरीक्षा (b) लेखनपरीक्षा
(c) रिक्तस्थानपूर्तिपरीक्षा (d) अनुमानकार्यम्

Ans : (c)

सुन्दरी नाम की एक बालिका अपने अभ्यास कार्य को सम्पन्न करती है। जिसमें प्रत्येक पाँचवें शब्द का लोप वह बालिका करती है। ऐसा अभ्यास कार्य बालिका द्वारा रिक्तस्थान पूर्ति की परीक्षा से सम्बन्धित है। व्याकरण परीक्षा, लेखन परीक्षा, अनुमानकार्यम् इत्यादि विकल्प अशुद्ध है।

Q.24. दोषपूर्णपठनाभ्यासस्य कारणेषु अन्यतमं कारणं भवति

- (a) कक्ष्यायां बहुविद्यार्थिनां सम्मर्दः (Over crowded class)
(b) अङ्गुलीदर्शनम् (Finger pointing) अथवा पठने चक्षुरक्षर-संयोगार्थम् अङ्गुली-दर्शनम्
(c) बहुभाषाज्ञानम् (Multilingualism)
(d) द्विभाषाज्ञानम् (Bilingualism)

Ans : (b)

दोषपूर्णपठनाभ्यासस्य कारणेषु अन्यतमं कारणं अङ्गुलीदर्शनम् अथवा पठने चक्षुरक्षर-संयोगार्थम् अङ्गुली दर्शनं भवति। अर्थात् - दोषपूर्ण पठन अभ्यास के कारणों में अन्य कारण अङ्गुली दर्शन अथवा पढ़ने में चक्षुरक्षर संयोगार्थ अङ्गुली दर्शन में होता है।

Q.25. विद्यार्थिषु उच्च प्राथमिकस्तरे उच्च माध्यमिकस्तरे भाषायां रुचिसंवर्धनार्थम् अपेक्षितं किं नाम?

- (a) विद्यार्थिभ्यः अधिकं श्रुतलेखनं (Dictation) देयम्
- (b) विद्यार्थिनां व्याकरणज्ञानस्य वर्धनं कार्यम्
- (c) विद्यार्थिनः पुस्तकानि पठितुं सूचिताः भवेयुः
- (d) विद्यार्थिभ्यः मौखिकरूपेण अधिकाधिकविवरणं देयम्

Ans : (d)

विद्यार्थिषु उच्चप्राथमिकस्तरे उच्च माध्यमिकस्तरे भाषायां रुचिसंवर्धनार्थम् अपेक्षितं नाम विद्यार्थिभ्यः मौखिकरूपेण अधिकाधिकविवरणं देयम्। अर्थात् - विद्यार्थियों में उच्चप्राथमिकस्तर तथा उच्च माध्यमिकस्तर में भाषाओं की रुचिसंवर्धनार्थ अपेक्षित है क्योंकि विद्यार्थियों के लिए मौखिक रूप से अधिक से अधिक विवरण देना चाहिए।

Q.26. वाचनप्रक्रियायां नूतन-अपरिचित-शब्दस्य अर्थं ज्ञातुं प्रथमं किं कर्तव्यम्?

- (a) सम्पूर्णसन्दर्भं परिशील्य स्वयमेव अर्थं ज्ञातं प्रयासः
- (b) सरलपाठ्यवस्तु-चयनम्
- (c) सद्यः एव शब्दकोशपरिशीलनम्
- (d) अध्यापकः सहपाठी वा प्रष्टव्यः

Ans : (a)

वाचन प्रक्रिया में नूतन-अपरिचित शब्द का आशय ज्ञात करने हेतु सबसे पहले सम्पूर्ण सन्दर्भ का परिशीलन कर स्वयं ही अर्थ जानने का प्रयास करना चाहिए।

Q.27. सहजरूपेण भाषा-अधिगमन-सन्दर्भं महत्वपूर्णम् अस्ति

- (a) अधिगत-शब्द-अधिकृत्य वाक्यनिर्माणम्
- (b) लेखनम्

(c) कथनशैल्याः अपेक्षया अर्थस्पष्टीकरणम्

(d) अभिभावकानां वाक्यानां श्रवणम्

Ans : (c)

सहज रूप से भाषा अधिगमन सन्दर्भ में कथन शैली की अपेक्षा अर्थ स्पष्टीकरण अति महत्वपूर्ण है।

Q.28. भाषा-शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया-सन्दर्भ समस्यानां समाधानां प्राप्तुम् अधिगमशैली महत्वपूर्णा। भाषाशिक्षणोपागमार्थम् अपि अस्याः विशिष्टं स्थानम्। एतादृशी एका भाषा-शिक्षण-अधिगमशैली अस्ति

(a) मुद्रणोन्मुखी शैली

(b) केन्द्रीकृता शैली

(c) उच्चस्तरीया शैली

(d) शान्तिपूर्णा शैली

Ans : (a)

भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सन्दर्भ में समस्या के समाधान प्राप्त करने में अधिगम शैली महत्वपूर्ण है। भाषा शिक्षण में भी इसका विशिष्ट स्थान है, इस तरह की एक भाषा शिक्षण अधिगम शैली मुद्रणोन्मुखी शैली है।

Q.29. शिक्षणस्य आरम्भबिन्दुं प्रवर्तयितुं छात्राणां अवबोधनदौर्बल्यगवेषणाय क्रियमाणं मूल्याङ्कनं भवति

(a) सर्जनात्मकम् (b) सत्रान्तकृतम् (c) निदानात्मकम् (d) सङ्कलनात्मकम्

Ans : (c)

शिक्षण के प्रारम्भिक अवस्था के प्रवर्तन हेतु छात्रों के अवबोधन की दुर्बलता के मूल्याङ्कन में निदानात्मक प्रक्रिया सहायक होती है। निदानात्मक प्रक्रिया शिक्षण में समग्र रूप से सहायक होती है।

Q.30. व्याकरणस्य लक्षणम्

(a) भाषाप्रवाहः (b) भाषायाः प्रस्तुतिः (c) भाषादर्शनम् (d) भाषासिद्धान्तः

Ans : (d)

व्याकरण का लक्षण भाषा सिद्धान्त है। व्याकरण भाषा को वैज्ञानिक परिस्थिति से जोड़ती है। जो क्रमबद्ध भाषा प्रवाह का प्रतिपादन करती है।

Q.31. वाक्कौशलम् इति अस्य साहाय्येन सम्यग् वर्धते

(a) स्थानापत्तिसारणिः (b) लिखित-संभाषणाभ्यासः
(c) अभिनयो गोष्ठीचिन्तना च (d) समृद्धवाचनसामग्री

Ans : (c)

अभिनव एवं गोष्ठी से वाणी की कुशलता में वृद्धि होती है। इससे बोलने की प्रवृत्ति के साथ-साथ शब्द ज्ञान में भी वृद्धि होती है। इससे व्यक्तिगत विकास होता है।

Q.32. छात्राणां 'बहुविध-ज्ञान-कौशल-विकासाथ' शिक्षकाणां कृते कः मार्गः उत्तमः?

(a) पठन-निर्देशनार्थं छात्रेभ्यः केचन प्रश्नाः दातव्याः
(b) पाठ-अवबोधनार्थं छात्राः नूतनशब्दानाम् अर्थान् स्मरेयुः
(c) छात्राः पाठ्यांशम् अधिकृत्य स्वयं नूतन-चिन्तनशील प्रश्नानां निर्माणार्थं प्रेरितव्याः
(d) छात्राणां कृते अवबोधनात्मक-कार्यार्थम् अवसराः दातव्याः

Ans : (c)

छात्राणां 'बहुविध-ज्ञान-कौशल-विकासाथ' शिक्षकाणां कृते छात्राः पाठ्यांशम् अधिकृत्य स्वयं नूतन-चिन्तनशील-प्रश्नानां निर्माणार्थं प्रेरितव्याः मार्गः उत्तमः।' तात्पर्य है - छात्रों के बहुविध-ज्ञान-कौशल के विकास के लिए शिक्षक का कौन सा मार्ग उत्तम है - छात्र पाठ्यांश का अध्ययन कर नये चिंतनशील प्रश्नों का निर्माण करने के लिए प्रेरित करना।

Q.33. वाचन-सन्दर्भ 'सञ्चय-कौशलेन' (Gathering Skill) अभिप्रायः अस्ति

- (a) टिप्पणी-स्वीकरणम् (note taking) (b) विश्लेषणम्
(c) व्याख्यानम् (d) टिप्पण-निर्माणम् (note making)

Ans : (d)

वाचन-सन्दर्भ 'सञ्चय-कौशलेन' (Gathering Skill) अभिप्रायः टिप्पण-निर्माणम् अभिप्रायः अस्ति। तात्पर्य है - वाचन सन्दर्भ में अर्थात् बोलने के सन्दर्भ में सञ्चय कौशल का अभिप्राय है - टिप्पणियों का निर्माण करना। इससे छात्र विषय ज्ञान को पूर्णरूप से समझने के लिए योग्य होगा और इसके आधार पर वह अपने ज्ञान को और विस्तृत रूप देने में सक्षम होगा। ना कि किसी दूसरे की टिप्पणियों को स्वीकार करने में, सञ्चित कौशल वह कौशल है जिसमें टिप्पणियों का निर्माण कर सके।

Q.34. सूचना-सम्बद्ध-विभिन्न-पक्षेषु श्रुत-ध्वनि-शब्द-पद दृष्ट्या परस्परं विभेदीकरणस्य गतिविधिः केन कौशलेन सम्बद्धः?

- (a) पठनेन (b) लेखनेन (c) श्रवणेन (d) भाषणेन

Ans : (c)

तात्पर्य है - सूचना सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के पक्ष जैसे-श्रुत, ध्वनि, शब्द, पद की दृष्टि से परस्पर एक दूसरे में विभेद के कारण श्रवण कौशल गतिविधि अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिससे छात्रों की मानसिक व बौद्धिक योग्यताओं, क्षमताओं आदि में वृद्धि होती है।

Q.35. लेखनसमये संलग्नशीलक्रममेकम्

- (a) उपसर्गः (b) उक्तिः (c) उपवृत्तम् (d) विशेषणम्

Ans : (d)

लेखन के समय संलग्नशील क्रम में एक विशेषण होता है संस्कृत में विशेष्य के लिङ्ग, वचन और विभक्ति के अनुसार विशेषण का रूप बदलता है। जिस लिंग, जिस वचन और जिस

विभक्ति का विशेष्य होता है, उसी लिंग उसी वचन और उसी विभक्ति का विशेषण भी होता है। यथा-अहं सुन्दोऽस्मि। (मैं सुन्दर हूँ)

Q.36. संस्थासु अन्तःशैक्षणिक-संपन्मूलविनिमयकरणं संवहन तन्त्रज्ञानम्
(Communicative Technology)

- (a) एरनेट (ERNET) (b) अन्तर्जालम् (INTERNET)
(c) इन्ट्रानेट (INTRANET) (d) डेलनेट (DELNET)

Ans : (b)

अन्तः शैक्षणिक संस्थानों में भाषा के आदान-प्रदान का मूल कारण एक ऐसा तन्त्र या जाल है जिसके माध्यम से सभी भाषायी कार्य सम्पन्न होते हैं उसे ही हम अन्तर्जाल अर्थात् इन्टरनेट कहते हैं।

Q.37. नामपदकेन्द्रीकृत-उपगमः मन्यते यत् अधिक-अधिगमनं संघटनात्मकम्?

- (a) शैक्षिकतन्त्रानुगुणम् (b) विद्यार्थिनां रुचिरनुगुणं क्रियते
(c) अध्यापकस्य विषयसामर्थ्यानुगुणम् (d) विषयसामग्र्यनुगुणम्

Ans : (b)

नामपद को केन्द्रीकृत करके उपगम को माना जाता है। जो कि अधिक अधिगमन एवं संघटनात्मक होता है जैसे-विद्यार्थिनां रुचिरनुगुणं क्रियते। विद्यार्थी सुन्दरता का अनुगमन करते हैं।

Q.38. कक्षायाः मिश्रित-योग्यता-समूहः स एव यत्र

- (a) विभिन्न-राष्ट्र-सम्बद्धाः छात्राः मिलित्वा पठन्ति।
(b) समाजस्य विभिन्न-स्तरसम्बद्धाः छात्राः मिलित्वा पठन्ति।
(c) मन्दगतिशिक्षार्थिनः (slow learners) उच्च-उपलब्धि-प्राप्ताः च मिलित्वा पठन्ति।
(d) बालकाः बालिकाः च मिलित्वा पठन्ति।

Ans : (c)

कक्षाओं में मिश्रित (सभी छात्र एक साथ अध्ययन में सम्मिलित हों) योग्यता - समूह वहीं होता है जहाँ मन्द या कम बुद्धि वाले छात्र उच्च बुद्धि (उपलब्धि) वाले छात्रों के साथ मिलकर पढ़ते हैं। अर्थात् मन्द बुद्धि और तीव्र या कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र एक साथ मिलकर पढ़ाई करें।

Q.39. एका शिक्षिका अन्विष्यति यत् तस्याः केचन छात्राः भाषाप्रश्नपत्रस्य लेखन-सम्बद्ध-भागे निम्नश्रेणी प्राप्नुवन्ति सा निम्नश्रेण्याः कारणं ज्ञातुम् एकं परीक्षणं परिकल्पयति। तत् परीक्षणं किं कथ्यते?

- (a) नैपुण्य-परीक्षणम् (b) निदानात्मक-परीक्षणम्
(c) अभिवृत्ति-परीक्षणम् (d) उपलब्धि-परीक्षणम्

Ans : (b)

एक शिक्षिका अन्वेषण करती है कि कुछ छात्र भाषा प्रश्न पत्र के लेखन से सम्बद्ध भाग में निम्न श्रेणी प्राप्त करते हैं। उनके निम्न श्रेणी के कारण को जानने के लिए एक परीक्षण की परिकल्पना करते हैं, उस परीक्षण को निदानात्मक - परीक्षण कहते हैं अर्थात् निम्न श्रेणी को प्राप्त करने का निदान (उपचार) करते हैं।

Q.40. अनुमानम् (Prediction) एकम् उपकौशलम् अस्ति

- (a) टिप्पणीकरणस्य (Note making) (b) पठनस्य (Reading)
(c) समूहकरणस्य (Chunking) (d) सारांशकरणस्य (Summarising)

Ans : (b)

शिक्षणाभ्यास में पठन के कौशलों का वर्णन मिलता है। जैसे- लेखन कौशल, श्रुत कौशल, उच्चरण कौशल इत्यादि। इसी प्रकार अनुमानम् भी एक कौशल है। लेकिन अनुमान का एक उपकौशल भी है वह है- पठन का कौशल अतः अन्य विकल्पों में पठनस्य विकल्प सही है।

Q.41. प्रत्येकं शिक्षार्थी विशिष्ट-अधिगमशैल्या पठति। केचन पाठ्यपुस्तकं पठित्वा अवगच्छन्ति, केचन अध्यापकं सावधानं शृण्वन्ति अन्ये च गतिविधिषु संलग्नाः भूत्वा अनुभवैः शिक्षा प्राप्नुवन्ति। इदम् अधिकृत्य अध्यापकेन किं कर्तव्यम्?

- (a) उपयुक्त-निष्पत्त्यर्थं निरन्तरं छात्रपरीक्षणम्।
- (b) वैयक्तिकक्षमताविकासाय छात्राः कला-नृत्य-सङ्गीत गतिविधिषु प्रतिभागित्वं स्वीकुर्युः इत्यर्थं परामर्शदानम्।
- (c) छात्राणां वैविध्यम् अधिकृत्य विविधशिक्षणविधिभिः विभिन्नपद्धतिद्वारा च शिक्षणम्।
- (d) प्रत्येकं पाठस्य सम्पूर्णपाठनं पठितपाठानां च सम्यक् पुनरावृत्तिः।

Ans : (b)

प्रत्येक शिक्षार्थी विशिष्ट अधिगम शैली का पठन करता है। कुछ पाठ्यपुस्तकों का पठन करते हैं, कुछ शिक्षकों को सावधानी से श्रवण करते हैं और अन्य कतिपय ऐसे होते हैं जो अन्य गतिविधियों के अनुभव से शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन बातों पर ध्यान देकर अध्यापकों का कर्तव्य होता है कि वे छात्रों के वैयक्तिक क्षमता के विकास के लिए छात्रों को कला, नृत्य एवं संगीत गतिविधियों में प्रतिभागी बनाने हेतु परामर्श दे।

Q.42. 'छात्राः भाषायां सम्प्रेषणात्मक-कौशलं सहजतया प्राप्तुं समर्थाः भवेयुः' इत्यर्थम् प्रभावपूर्णमार्गः अस्ति

- (a) छात्रैः विस्तृत-निबन्धन-लेखनम् तेषां च पूर्णरूपेण संशोधनम्।
- (b) छात्रैः मानकभाषाश्रवणं तदनुगुणम् च अनुकरणम्।
- (c) 'भाषा-व्यवहार-द्वारा भाषाकौशलानां समुचितः विकासः भवेत्' इत्यर्थम् अवसराणां प्रदानम्।
- (d) व्याकरणज्ञाननैपुण्यार्थं भाषाकौशलानाम् अधिकाधिक अभ्यासः।

Ans : (c)

भाषा व्यवहार द्वारा भाषा कौशल का समुचित विकास होता है। अतः भाषा कौशल में सम्प्रेषण का विशेष महत्व है। इससे भाषा कौशल का विकास अधिक होता है।

Q.43. परीक्षणं महत्वपूर्ण भवति

- (a) प्रतिपुष्टिम् अधिकृत्य उपचारात्मककार्यार्थम् (b) अग्रिमकक्षार्थं छात्रोन्नत्यर्थम्
(c) भयद्वारा छात्रान् प्रेरयितुम् (d) कक्षायां श्रेष्ठछात्रं संज्ञातुम्

Ans : (a)

प्रतिपुष्टि को अधिकृत्यकर उपचारात्मक कार्य हेतु परीक्षण महत्वपूर्ण होता है।

Q.44. भाषा मुख्यरूपेण भवति

- (a) मौखिकी (b) लेखाचित्रात्मिका (c) लिखिता (d) दृश्या

Ans : (a)

भाषा दूसरे के विचारों का साधन है। क्योंकि बिना अर्थ जाने समझ विकसित नहीं होती है। भाषा मुख्य रूप से मौखिक होती है।

Q.45. भाषायाः अधिगमः प्रभावशाली भवति यदा विद्यार्थी

- (a) क्रमबद्धरीत्या व्याकरणगतनियमान् जानाति (b) रूपज्ञानात् प्रयोगं प्रति गच्छति
(c) नियमात् प्रयोगं प्रति गच्छति (d) अर्थग्रहणात् रूपं प्रति गच्छति

Ans : (d)

भाषा का अधिगम प्रभावशाली होता है। यदि छात्र कही गई बात का अर्थ ग्रहण करने में समर्थ हों।

Q.46. सप्तमकक्षायाः छात्रा रु सद्य एवं एकां कवितां पठित्वा अवगतवन्तः ।

तेषां शिक्षिका तान् प्रश्नं करोति "सप्तपङ्क्तौ कस्य काव्यतत्त्वस्य अलङ्कारस्य वा प्रयोगः कृतः।" एवं सा मूल्याङ्कनं करोति

(a) निष्कर्षस्य

(b) विश्लेषणात्मकचिन्तनस्य

(c) बोधस्य

(d) सूचनायाः

Ans : (a)

सातवी कक्षा की छात्रा एकाएक एक कविता पढ़ती हुई आती है। उसकी शिक्षिका उससे प्रश्न करती है कि सातवीं पंक्ति में कौन सा काव्य तत्व अथवा अलंकार का प्रयोग किया गया है इस प्रकार वह निष्कर्ष का मूल्यांकन करती है।

Q.47. पठनस्य शिखरपादक्रमपद्धतौ (Top-down model) अध्ययेता

(a) पूर्णात् अवयवान् प्रति गच्छति

(b) लम्बमानं (Vertucally) गच्छति

(c) प्रस्यमानं (Horizontally) गच्छति

(d) अवयवेभ्यः पूर्ण प्रति गच्छति

Ans : (a)

पढ़ने की 'शिखरपाद क्रम' पद्धति का अध्येता पूर्ण अवयवों (तथ्यों) की ओर जाता है। अर्थात् शिखरपादक्रम पद्धति वह पद्धति कहलाती है जिसमें रुचिकर्ता या अध्ययनकर्ता शब्दशः पूर्ण अवयवों को प्राप्त करता है।

Q.48. सुनीतायाः भाषानियमानां रूपाणां च ज्ञानम् अस्ति। एतेन तस्याः विकासः अस्ति

(a) भाषिकसामर्थ्य

(b) बहुभाषिकसामर्थ्य

(c) द्विभाषिकसामर्थ्य

(d) संप्रेषणसामर्थ्य

Ans : (a)

'सुनीता' नामक एक छात्रा को भाषा नियमों और रूपों का ज्ञान है। ऐसा ज्ञान विकास भाषा सामर्थ्य के अन्तर्गत आता है। अर्थात् भाषा में पकड़ एवं रुचि ही भाषा सामर्थ्य का उदाहरण कहलाता है। अन्य तीनों विकल्प कम उचित एवं अपूर्ण हैं।

Q.49. शिक्षिका स्वाध्यापनात् विद्यार्थिनाम् अधिगमः कथं भवति इति ज्ञातुम् इच्छति। सा कथम्प्रकारकं परीक्षणं कुर्यात्?

- (a) निदानात्मकपरीक्षा (Diagnostic test)
- (b) सत्रान्तपरीक्षा (Summative test)
- (c) रचनात्मकपरीक्षा (Formative test)
- (d) पूर्वनिर्दिष्टमानकानुसारं परीक्षा (Criterion referenced test)

Ans : (a)

निदानात्मक परीक्षा वह परीक्षा है जिसके अन्तर्गत शिक्षक या शिक्षिका यह विचार करते हैं कि छात्रों का अधिगम कैसा है और उनका परीक्षण किस तरह से किया जाये। निदानात्मक परीक्षण वह परीक्षण है जिसके अन्तर्गत अध्यापक छात्र का मूल्याङ्कन सहित अन्य परीक्षण करता है।

Q.50. उच्चस्तरीय-पठन-अवबोधन-सन्दर्भ कानि तत्त्वानि प्रमुखानि?

- (a) छात्रभाषया पुनर्लेखनं, रिक्तस्थानपूर्तिः पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध विभिन्नार्थाः
- (b) छात्रभाषया पुनर्लेखनं, पूर्णवाक्यैः पाठ्यवस्तुसम्बद्ध भावस्पष्टीकरणं, प्रमुखशब्दानां च विभिन्नेषु सन्दर्भेषु प्रयोगः
- (c) बिन्दुलेखनं, पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध-प्रमुखशब्द-चयनम् पाठ्यवस्तुनिहिताः विभिन्नार्थाः ।
- (d) पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध-प्रमुखशब्दानां छात्रभाषया पुनर्लेखनम्

Ans : (b)

उच्च स्तरीय पठन-अवबोधन सन्दर्भ में छात्र भाषा का पुनर्लेखन, पूर्ण वाक्य में पाठ्य वस्तु सम्बन्धी भाव स्पष्टीकरण और प्रमुख शब्दों का विभिन्न सन्दर्भों में प्रयोग प्रमुख तत्व है।

Q.51. मौखिकी प्रश्नोत्तरी कस्य कौशलस्य अभ्यासस्य कृते समीचीना?

- (a) पठनस्य
- (b) शब्दज्ञानस्य
- (c) भाषणस्य
- (d) लेखनस्य

Ans : (c)

मौखिकी प्रश्नोत्तरी भाषण कौशल के अभ्यास के लिए समीचीन (उचित) है।

Q.52. तथ्यात्मक-गद्य-पाठस्य काव्यात्मकपाठस्य च मध्ये भेदः मन्यते। काव्यपाठः

मुख्यतः सम्बद्धः अस्ति

(a) प्रदत्त-सूचनासन्दर्भे वैयक्तिक-व्याख्यया

(b) कवेः सन्देशस्य मूल्याङ्कनेन

(c) बौद्धिक-व्याख्यानेन

(d) काव्यस्य मुख्यकथ्य-सन्दर्भे भावाभिव्यक्त्या बौद्धिकाभिव्यक्त्या च

Ans : (d)

तथ्यात्मक गद्य पाठ और काव्यात्मक पाठ के बीच भेद माना जाता है। काव्यपाठ मुख्य रूप से कवि के सन्देश मूल्यांकन से सम्बद्ध है।

Q.53. प्राथमिस्तरे छात्रैः पुनः पुनः क्रियमाणाः दोषाः इमे

(a) उच्चारणदोषाः (b) लेखनदोषाः (c) तर्कदोषाः (d) व्याख्यानदोषाः

Ans : (a)

प्राथमिक स्तर पर छात्रों में उच्चारण दोष प्रायः देखा जाता है। प्रारम्भिक सीखने की अवस्था में यह सामान्य दोष बच्चों में पाया जाता है।

Q.54. पठनकौशलं छात्रैः तदा गृह्यते यदा

(a) उच्चेः पठ्यते

(b) प्रकर्षेण कठिना परीक्षा क्रियते

(c) अर्थग्रहणपुरस्सरं पठ्यते

(d) सवेगं पठनं क्रियते

Ans : (c)

पठन कौशल छात्रों द्वारा तभी सार्थक हो सकता है जब वह इसका अर्थ ग्रहण कर पाठन करता है। जब किसी कथ्य का भाव स्पष्ट होता है, उसके पाठन में भावगत अभिव्यक्ति निदर्शित होती है।

Q.55. 'अन्तर्वैयक्तिक-प्रज्ञा'-विकासार्थम् अतीव महत्वपूर्णम् अस्ति

- | | |
|---------------------------|---------------------------------------|
| (a) काव्यशास्त्रपठनम् | (b) अन्यभाषासु लिखितसाहित्यस्य पठनम् |
| (c) परस्परं विचार-विमर्शः | (d) नूतनविषयान् अधिकृत्य निबन्धलेखनम् |

Ans : (c)

अन्तर्वैयक्तिक-प्रज्ञा' विकासार्थम् अतीव महत्वपूर्णम् परस्परं विचार-विमर्शः अस्ति। तात्पर्य है - आन्तरिक विशिष्ट ज्ञान का विकास तभी सम्भव है जब एक छात्र दूसरे छात्र से परस्पर विचार-विमर्श करता रहे। यही महत्वपूर्ण विकल्प है।

Q.56. आकलनस्य निकषः (Criteria) अस्ति

- | | |
|----------------------------------|-------------------------------|
| (a) मूल्याङ्कन-सम्बद्ध-निर्देशाः | (b) प्रश्नानुगुण-अङ्क-वितरणम् |
| (c) छात्र-दक्षता-ज्ञानम् | (d) मूल्याङ्क-उपकरणानि |

Ans : (a)

आकलनस्य निकषः (Criteria) मूल्याङ्क-सम्बद्धनिर्देशाः अस्ति। तात्पर्य है - जब कभी शिक्षक किसी विद्यार्थी का आकलन करता है तो उसके पहले उसे मूल्यांकन करना पड़ता है। अतः विद्यार्थी का आकलन करने के लिए मूल्यांकन सम्बन्धित निर्देश देने पड़ते हैं। अर्थात् आकलन के लिए मूल्यांकित निर्देश देने होते हैं।

Q.57. 'ध्वनि-अभ्यासार्थ' किं करणीयम्?

- | | |
|---|--------------------------------|
| (a) ध्वनि-सिद्धान्तानां पाठनम् | (b) सन्धि-युक्तपदानाम् अभ्यासः |
| (c) ध्वन्युच्चारण-सम्बद्ध-विभिन्नगतिविधयः | (d) साहित्यश्रवणम् |

Ans : (c)

'ध्वनि-अभ्यासार्थं ध्वन्युच्चारण-सम्बद्ध-विभिन्नगतिविधयः करणीयम्। तात्पर्य है - ध्वनि अभ्यास का कारण है ध्वनि सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की गतिविधि जो इस प्रकार है- संधि, समास, प्रत्यय एवं उपसर्ग सहित शब्दों का शुद्ध उच्चारण, अनुकरण विधि, आवृत्ति विधि, अवरोध विधि इत्यादि गतिविधि का प्रयोग करके शिक्षक छात्रों से शुद्ध उच्चारण करवाने का प्रयास करता है।

Q.58. सूर्यग्रहणं कदा भविष्यति? अयं प्रश्नः

- (a) अनुवर्तनशीलवर्तमानकालीयः (b) भूतकालीयः
(c) वर्तमानकालीयः (d) भविष्यत्कालीयः

Ans : (d)

सूर्यग्रहणं कदा भविष्यति? यह प्रश्न भविष्यकालीय होता है। इसका तात्पर्य है कि सूर्य ग्रहण कब होगा अर्थात् यह भविष्य में होने की बात कर रहा है अतः यहाँ भविष्य काल होगा।

Q.59. भवान् पृच्छतु, अस्माकं लक्ष्यं किम्? अहं एकेन पदेन उत्तरं वदामि- "विजयः"

एतादृशः प्रश्नः

- (a) रीतियुक्तः (b) सहजः (c) विवरणात्मकः (d) आलङ्कारिकः

Ans : (b)

भवान् पृच्छतु अर्थात् आपने पूछा, हमारा लक्ष्य क्या है? मैंने एक शब्द या पद में उत्तर दिया कि, "विजय" अर्थात् हमारा लक्ष्य विजय प्राप्त करना है। इस प्रकार के प्रश्न सहज प्रश्न होते हैं।

Q.60. भाषार्जने आवश्यकम्?

- (a) मातृभाषा ज्ञानावगमनस्यक्रममेकं विद्यार्थिषु
(b) कण्ठस्थीकरणं तथा आवश्यकपदानां प्रयोगः

(c) व्याकरणज्ञानस्यव्यवस्थितप्रयोगःतथापदानां कण्ठस्थीकरणम्

(d) मातृभाषायाःतथाद्वितीयभाषायाःअवगमनक्रमे मानवमस्तिष्कस्य अन्तःसामर्थ्यं निर्दिशति

Ans : (d)

भाषार्जन अथवा भाषा के ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि मातृ भाषा का ज्ञान हो तथा द्वितीय भाषा का भी ज्ञान हो जो अवगमन क्रम से मानव के मस्तिष्क में सन्निहित हो अर्थात् उसे समझ सकने की मानव मस्तिष्क के अन्तःसामर्थ्य को निर्दिष्ट करता है।

Q.61. निम्नलिखितेषु किं कथनम् असमीचीनम् ?

(a) सम्प्रेषणात्मकं शिक्षणं मूलतः उत्पादककौशलयोः, यथा भाषणस्य लेखनस्य च समृद्ध्या सम्बद्धम्।

(b) सम्प्रेषणात्मकं शिक्षणं मूलतः व्याख्यान-अभिव्यक्ति-द्वारा अर्थस्पष्टीकरणेन सम्बद्धम्।

(c) सम्प्रेषणात्मकं शिक्षणं व्यावहारिकजीवने भाषा-प्रयोगं लक्ष्यीकरोति।

(d) सम्प्रेषणात्मकं शिक्षणं मूलतः वर्तन्याः भाषायाः च नियमानां द्वारा शब्दावल्याः व्याकरणनियमानां च शिक्षणेन सम्बद्धम्।

Ans : (d)

निम्नलिखित में असमीचीन कथन या असंगत कथन यह है कि सम्प्रेषणात्मक शिक्षक मूलरूप से वर्तनी, भाषा एवं नियमों द्वारा शब्दावली व्याकरण के नियमों एवं शिक्षण से सम्बद्ध है। यह कथन समीचीन है कि सम्प्रेषणात्मक शिक्षण मूलतः उत्पादन कौशल यथा - भाषण व लेखन की समृद्धि से सम्बद्ध है।

Q.62. स्वाधिगमनस्यकृतेछात्रोत्तरदायित्व-सन्दर्भे निम्नलिखितेषु किम् असमीचीनम्?

(a) अधिकाधिक-प्रश्नान् प्रष्टुं छात्रेभ्यः प्रोत्साहनम्।

(b) सृजनात्मक-अभिव्यक्त्यर्थ प्रविधि-एकीकरणम्।

(c) छात्राणां भाषाकौशलानां संशोधनार्थम् अधिकाधिकगृहकार्य प्रायोजनाकार्य-प्रदत्तकार्यप्रदानम्।

(d) ते श्रेष्ठरूपेण कथम् अवगन्तुं समर्थाः भवेयुः इत्यस्य निर्णयार्थं छात्रेभ्यः प्रोत्साहनम्।।

Ans : (c)

स्वाधिगमन सम्बन्धी कार्य में छात्रों का उत्तरदायित्व से सम्बन्धित निम्नलिखित कथनों में असंगत कथन यह है कि छात्रों के भाषा कौशल के संशोधन के लिए अधिक मात्रा में गृहकार्य दिया जाये। प्रयोजना कार्य तथा प्रदत्त कार्य को प्रदान किया जाये। जबकि समीचीन यह है कि छात्रों से अधिकाधिक प्रश्न पूछकर उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए। सृजनात्मक व अभिव्यक्ति का विकास करना चाहिए।

Q.63. प्रारम्भिकस्तरे अधिकाधिक-भाषाभ्यासः कारणीयः येन बालाः

लक्ष्यभाषा-व्यवहारे निपुणाः भवेयुः।

(a) सृजनात्मकतया (b) समुचितरूपेण

(c) भूयो भूयः (d) प्रवाहरूपेण

Ans : (b)

दिये गये वाक्य में रिक्त स्थान पर उपयुक्त शब्द समुचितरूपेण होगा।

Q.64. बालानाम् 'आवश्यक-निःशुल्क-शिक्षा-अधिकार अधिनियमः (2009)' शिक्षायाः

एकोद्देश्यरूपेण 'बालसर्वाङ्गीण-विकासस्य' उल्लेखनं करोति। अस्य अभिप्रायः अस्ति

(a) प्रत्येकं बालकः एक-शक्तियुक्त-प्रौढरूपेण विकसितः भवेत् इत्यस्मिन् सन्दर्भे तस्य स्वास्थ्यं प्रति समुचितम् अवधानम् यतो हि सः भावि-आहवानानि स्वीकर्तुं समर्थः भविष्यति।

(b) बालकस्य सम्पूर्णविकाससन्दर्भे तस्य व्यक्तित्वस्य शारीरिक मानसिक-भावात्मक-पक्षाणां समुचितं पुष्टीकरणम्।

(c) बालकः समुचितकाले राष्ट्रस्य आर्थिक-विकासे समुचितं योगदानं दातुं योग्यः भवेत्।

(d) प्रत्येक बालकस्य (06-14 आयु-वर्ग-समूहे) शीघ्रातिशीघ्र वृद्धिः भवेत् ।

Ans : (b)

आवश्यक निःशुल्क शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 बालक के सर्वांगीण विकास का उल्लेख करता है। इसका अभिप्राय है- बालक के सम्पूर्ण विकास के सन्दर्भ में उसके व्यक्तित्व का शारीरिक, और भावात्मक पक्ष का समुचित पुष्टिकरण।

Q.65. छात्राणां लेखनपुस्तिकाः अवलोक्य शिक्षिका तैः कृतानां त्रुटीनां सङ्कलनं करोति। अनन्तरं कस्यापि नाम्नः उल्लेखं न कृत्वा तत्त्रुटीनाम् उपरि कक्षायां चर्चा करोति। एवं सा किं करोति?

(a) प्रतिपुष्टि (feedback) प्रदानं करोति

(b) लेखनार्थं विचारान् प्रस्तौति

(c) कथं त्रुटिः न भवेत् इति पाठयति

(d) कथं शुद्धलेखनं भवेत् इति पाठयति

Ans : (a)

छात्रों की लेखन पुस्तिका का अवलोकन कर शिक्षिका उनके लेखन की गलतियों का संकलन करती है। अनन्तर किसी भी छात्र के नाम का उल्लेख न करके उनकी त्रुटियों को कक्षा में चर्चा करती है। इस प्रकार यह कार्य छात्रों को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।

Q.66. शब्दजालस्य उपयोगः क्रियते

(a) वैश्विक-अन्तर्जालस्य (World&Wide-Web) प्रयोगज्ञानार्थम्

(b) सम्यक् पठनज्ञानार्थम्

(c) प्रभाविरीत्या शब्दावलीज्ञानार्थम्

(d) सम्यक्तया लेखनस्य ज्ञानार्थम्

Ans : (c)

शब्द जाल के उपयोग शब्दावली के ज्ञान के लिए किया जाता है। शब्दावली का ज्ञान बढ़ने पर भाषा समझ का विकास होता है।

Q.67. उच्चप्राथमिकस्तरे विद्यार्थिषु सम्भाषणकौशलविकासाथम् अधोलिखितेषु कतमः सर्वाधिकप्रभावकारी उपायः भवेत्?

(a) उत्तमवक्तुः श्रवणम्

(b) नाटकानां पठनम्

(c) कक्षायां चरिताभिनयस्य आयोजनम्

(d) सम्पाठस्य अभ्यासः

Ans : (c)

उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सम्भाषण कौशल के विकास के लिए कक्षा में चरित अभिनय का आयोजन सर्वाधिक प्रभावकारी होता है।

Q.68. केचन बालाः कक्षायां अवरोधनकारणात् भयात् वा न वदन्ति। एतद् अस्ति

(a) परिवेशीयबाधा

(b) सामाजिकबाधा

(c) शारीरिकबाधा

(d) मनोवैज्ञानिकबाधा

Ans : (d)

मनोवैज्ञानिक बाधा के अन्तर्गत यह देखा जाता है कि छात्र/छात्रायें शिक्षण कार्य के समय पर बिल्कुल चुप रहते हैं जबकि उनके मस्तिष्क में अनेक प्रश्नगत विचार उत्पन्न होते रहते हैं फिर भी वह यह सोचते हैं कि कहीं मेरे प्रश्न से कक्षा बाधित न हो जाये। ऐसी बालक बुद्धि धारणायें मनोवैज्ञानिक बाधा का कारण होती हैं।

Q.69. कक्षायां भाषामयवातावरणनिर्माणार्थं शिक्षकः

(a) कक्षायां स्वस्वानुभूतिप्रकटनार्थं छात्रान् अवसरं दद्यात्

(b) तेषां सम्भाषणकालं प्रदीर्घं कुर्यात्

(c) अपत्यानां सम्यक् पालनार्थम् अभिभावकान् निर्दिशेत्

(d) प्रत्येक छात्रस्य कृते समानं लक्ष्यं स्थापयेत्

Ans : (a)

कक्षा में भाषा से युक्त वातावरण निर्माण हेतु शिक्षक कक्षा में छात्रों के स्वयं के अपने-अपने अनुभव प्रकटन हेतु प्रवीण शिक्षक अवसर प्रदान करता है। ऐसा करने से शिक्षक का शिक्षण तो पुष्ट होता ही है साथ ही साथ शिक्षार्थी उचित अवसर प्राप्तानुसार स्वयं का निर्माण भी आसानी से कर लेता है।

Q.70. अध्ययनाध्यापने सर्वविषयव्यापीभाषापरिप्रेक्ष्ये अधस्तनेषु कतमं कथनं न समीचीनम्?

- (a) आङ्गलभाषायाः हिन्दीभाषायाः वा शिक्षिका छात्रान् समूहेषु विभज्य एकस्य ग्रामस्य/नगरस्य स्मारकोपरि प्रकल्पं (Project) कारयति
- (b) जङ्गमदूरवाण्याः (Mobile phones) चतुर्णां प्रकाराणां तुलनां कृत्वा प्रौद्योगिक्याः उपयोगम् आधारीकृत्य निबन्धं लेखितुं छात्राः निर्दिश्यन्ते
- (c) भाषाशिक्षकः वाच्यानां लकाराणां च सन्दर्भानुसारं पाठनं करोति
- (d) विज्ञानविषयस्य शिक्षकः विज्ञानस्य एकं तत्त्वमधिकृत्य शब्दज्ञानस्य अभ्यासं कारयति

Ans : (c)

'सर्वविषयव्यापीभाषापरिप्रेक्ष्य के समय भाषा शिक्षक को वाचक शब्दों और लकारों का सन्दर्भ के अनुसार पाठन नहीं करना चाहिए। क्योंकि यह अनेक विषयगत भाषा परिप्रेक्ष्य में तर्कसम्मत नहीं है। यह तो केवल किसी एक विशेष भाषा पर ही ठीक रहता है।

Q.71. यदा छात्राः व्याकरणाध्ययनस्य भाषास्वरूपस्य च मध्ये सम्बन्धं प्रदर्शयन्ति तदा ते किं दर्शयन्ति?

- (a) सम्प्रेषणोद्देश्य विकासप्रक्रियां च
- (b) व्याकरणाध्ययनम् अत्यधिकं महत्त्वपूर्णम्

- (c) सम्प्रेषणार्थं व्याकरणज्ञानम् अनिवार्यम्
(d) लेखन-शैली व्याकरणज्ञानेन प्रभाविता भवति

Ans : (a)

जब छात्र व्याकरण अध्ययन के और भाषा स्वरूप के मध्य सम्बन्ध प्रदर्शित करता है तब वे सम्प्रेषण उद्देश्य एवं विकास प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं।

Q.72. भाषा-शिक्षण-अधिगम-सन्दर्भ प्रौद्योगिक-उपकरणानाम् एकं विशिष्टं स्थानं दृश्यते। उच्चारण-शिक्षण-प्रक्रियासन्दर्भ किं समीचीनम् उदाहरणं न?

- (a) भूमिका निर्वहणम् उच्चारण-प्रदर्शनञ्च (b) ध्वनि-मुद्रिका-उपयोगः
(c) श्रव्य-दृश्य-प्रस्तुति-द्वारा वर्णनम् (d) श्वेत-फलकस्य प्रयोगः

Ans : (d)

भाषा शिक्षण अधिगम के सन्दर्भ में प्रौद्योगिक उपकरण एक विशिष्ट स्थान रखता है। उच्चारण शिक्षण प्रक्रिया के सन्दर्भ में श्वेत फलक का प्रयोग समीचीन होता है।

Q.73. कस्याञ्चित् कक्ष्यायां प्रायः सर्वे छात्राः मातृभाषया एव व्यवहरन्ति। अतः अन्यभाषा कक्ष्यायाः सन्दर्भ इदम् अवगन्तव्यं यत्

- (a) छात्राः सुविधानुसारं लक्ष्यभाषया वदेयुः
(b) मातृभाषा-प्रयोगः सर्वदा निषिद्धः
(c) छात्रेभ्यः लक्ष्यभाषया व्यवहारः आवश्यकः न
(d) छात्राः परस्परं लक्ष्यभाषया व्यवहर्तुं प्रेरितव्याः

Ans : (d)

किसी कक्षा में प्रायः सभी छात्र मातृभाषा का ही व्यवहार करते हैं। किन्तु अन्य भाषा कक्षा के संदर्भ में यह व्यवहार आवश्यक है कि छात्र आपस में लक्ष्य भाषा का व्यवहार करें। इसके लिए उन्हें प्रेरित किया जाता है।

Q.74. व्याकरणबोधनस्य श्रेष्ठं विधानम्

- (a) शब्दरूपसारिणीनां मुखतः उपयोगेन रचनानाम् अभ्यासः
- (b) उदाहरणद्वारा व्याकरणनियमानां वैयक्तिकीकरणम्
- (c) सूत्राणां कण्ठस्थीकरणाय छात्राणां प्रेरणम्
- (d) दत्तनियमानुसारेण अभ्यासः

Ans : (b)

उदाहरण द्वारा व्याकरण नियमों को व्यक्त करना व्याकरण बोध का श्रेष्ठ विधान है।
उदाहरण के रूप में कोई बात स्पष्ट करने में सहज बोधता का प्रतिपादन होता है।

Q.75. श्रवणकौशलाभिवर्धने अत्यन्तपरिणामकारीणि कर्तव्यानि

- (a) श्रवणात् पूर्व छात्राः स्वयं पठेयुः
- (b) किमर्थं शृण्वन्तीति छात्राः पूर्वमेव जानीयुः
- (c) सविस्तरं विवरणम् श्रवणात् पूर्व भवेत्
- (d) श्रवणाय परिचितानां पाठ्यानाम् उपयोगः

Ans : (d)

श्रवण (सुनना) कौशल बढ़ाने में सुनने के लिए परिचित पाठों का प्रयोग अत्यन्त परिणामकारी होता है। इससे छात्रों में पाठ की श्रवण करने की रुचि बढ़ती है। श्रवण से सुपरिचित पाठों का उपयोग होता है। श्रवण कौशल, के अभिवर्धन से ज्ञानात्मक अभिवृद्धि होती है।

Q.76. यः सर्वेषु जनेषु प्रीतिमान् सः

- (a) मानवीयः (b) मानवकुलप्रेमी (c) मानवद्वेषी (d) सहानुभूतिपरः

Ans : (b)

जो सभी लोगों में प्रिय होता है उसे मानवीय कहते हैं। इसके अतिरिक्त जो मानव से द्वेष करने वाला होता है उसे मानवद्वेषी कहते हैं।

Q.77. अधिगमनात्नर्गत-विभिन्नक्षेत्रेषु किं क्षेत्रम् उच्च-स्तरीय चिन्तनेन सम्बद्धम्?

- (a) स्मरणात्मकम् (b) अवबोधनात्मकम्
(c) मूल्याङ्कनात्मकम् (d) अनुव्यवहारात्मकम्

Ans : (c)

अधिगमनात्नर्गत-विभिन्नक्षेत्रेषु मूल्याङ्कनात्मकम् क्षेत्रम् उच्च-स्तरीय-चिन्तनेन सम्बद्धम्। तात्पर्य है - अधिगम के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में मूल्याङ्कन ऐसा क्षेत्र है जिसमें उच्च-स्तरीय चिन्तन सम्बद्ध होती है। स्मरणात्मकम् का अर्थ है - स्मरण करना। अवबोधनात्मकम् का अर्थ है - आन्तरिक अवबोध कराना। अनुव्यवहारात्मकम् का अर्थ है - आन्तरिक व्यवहार का अनुकरण करना।

Q.78. 'शीर्षक-वाक्येन' अभिप्रायः अस्ति

- (a) निबन्धस्य मुख्यभावः
(b) काव्यस्य निबन्धस्य वा शीर्षकम्
(c) अनुच्छेदस्य प्रमुखः विचारः
(d) कस्यापि निबन्धस्य प्रलेखस्य वा उपशीर्षकम्

Ans : (c)

'शीर्षक-वाक्येन' अभिप्रायः अस्ति अनुच्छेदस्य प्रमुखः विचारः। तात्पर्य है - शीर्षक वाक्य को तभी समझा जा सकता है जब अनुच्छेद के विषय में ज्ञान हो, इसलिए सर्वप्रथम अनुच्छेद के विषय पर विचार किया जाता है, जिसके माध्यम से शीर्षक के विषय में ज्ञात होता है।

Q.79. समानार्थक शब्दयुग्मम् अस्ति

- (a) कुलम् / कूलम् (b) वसुधा / वसुंधरा

(c) कति / कियान्

(d) क्रूरः / क्रोधः

Ans : (b)

समानार्थकं शब्दयुग्मम् वसुधा / वसुंधरा अस्ति। तात्पर्य है - वसुधा का अर्थ पृथ्वी और वसुंधरा का अर्थ पृथ्वी या धरा। भार को धारण करने वाली वसुंधरा। कुल का अर्थ सम्पूर्ण। कुल एक प्रकार का शब्द है। कति का अर्थ कितना, कियान् का अर्थ किया (सम्पन्न), क्रूर का अर्थ निर्दयी, क्रोध का अर्थ गुस्सा (आगबबूला) आदि अर्थ होते हैं।

Q.80. पठनसमये विसंज्ञायाः (Decoding) अर्थः?

(a) विदेशभाषामवगन्तुम्

(b) IC.T.मध्ये प्रयुक्तक्रियाः।

(c) क्लिष्टसमस्यासमाधानं कर्तुम्

(d) विश्लेषणं कर्तुं अवगन्तुं च

Ans : (d)

पठनसमये (पढ़ने के समय) विसंज्ञाया (Decoding) का अर्थ विश्लेषण करना अर्थात् प्रत्येक शब्द का अलग-अलग ज्ञान प्राप्त करना अर्थात् विश्लेषण करके आगमन विधि द्वारा निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना होता है।

Q.81. वास्तवीयतात्मकं (Virtual Reality)?

(a) वीडियोडिस्क

(b) दूरगोष्ठी

(c) दूरदृश्यगोष्ठी

(d) संगणकयन्त्रद्वारा प्रगतक्रममेकम्

Ans : (a)

वीडियोडिस्क को वास्तवीयतात्मक (Virtual Reality) कहा जाता है। वीडियो में वास्तविक रूप से प्रत्यक्ष तस्वीर या डाटा ले लिया जाता है। इसी के माध्यम से फिल्म का निर्माण किया जाता है। अतः वीडियोडिस्क को ही वास्तवीयात्मक कहा जाता है।

Q.82. पठनसन्दर्भे भावग्रहणं परीक्ष्यते

(a) अवरोधनार्थकप्रक्रियाद्वारा सम्भाषणवाक्यानि
(c) टिप्पणिनिर्माणद्वारा

(b) टिप्पणिलेखनद्वारा
(d) सारांशेन

Ans : (d)

पठन के सन्दर्भ में भाव को ग्रहण करने में जो परीक्षण होता है वह सारांश का ही परीक्षण होता है सम्पूर्ण तथ्य को पढ़ने के बाद जो भाव मूल रूप में ग्रहण होता है उसे सारांश कहा जाता है।

Q.83. एकं प्राधिकृत-पाठ्यवस्तु तत् एव

- (a) यत् कस्मिंश्चित् पाठ्यपुस्तके समावेष्टं शैल्या असमीचीनम्।
- (b) यत् व्यावहारिकजीवनस्य प्रकाशनेभ्यः यथा विज्ञापन-सूचना-लेख-इत्यादिभ्यः स्वीक्रियते।
- (c) यत् ज्ञानस्य विशिष्टक्षेत्रेभ्यः यथा नृविज्ञान-खगोलशास्त्र इत्यादिभ्यः प्राप्यते।
- (d) यत् विविध-नवीन-शब्दावल्या परिपूर्णम् अत्यधिकम् आह्वानिकम्।

Ans : (b)

एक प्राधिकृत - पाठ्यवस्तु वही होती है जो व्यावहारिक जीवन का प्रकाशन करे (व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी हो) यथा-विज्ञापन - सूचना - लेख इत्यादि को स्वीकृत करे वही प्राधिकृत - पाठ्यवस्तु होती है। अर्थात् जिसमें व्यावहारिक जीवन का विकास निहित हो वही उपयुक्त पाठ्यक्रम होता है।

Q.84. निम्नलिखितेषु किं कथनम् असत्यम्? स्वायत्त-शिक्षार्थिनः ते एव ये

- (a) स्व-अधिगमनाय स्व-उत्तरदायित्वं स्वीकुर्वन्ति।
- (b) अधिगमनार्थं गतिविधीनाम् आयोजनं क्रियान्वयनं च कर्तुम् उद्यताः भवन्ति।
- (c) अधिगमनस्य एतस्य च प्रभावितायाः च निरन्तरं समीक्षा कुर्वन्ति।
- (d) केवलम् अनुमोदित-पुस्तकानि एव स्रोतोरूपेण स्वीकृत्य तेषु प्रदत्त-प्रश्नानाम् उत्तराणि अधिगच्छन्ति पूर्णतया च अभ्यासान् कुर्वन्ति।

Ans : (a)

स्वायत्त शिक्षार्थी वे होते हैं जो अपने द्वारा सीखने के लिए स्वयं को उत्तरदायी स्वीकार करते हैं अर्थात् जो छात्र स्वयं से सीखते हैं तथा किसी की सहायता नहीं लेते हैं वे स्वायत्त छात्र होते हैं वे अपने अधिगमन के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते हैं।

Q.85. काव्य-कक्षायाम् एका अध्यापिका छात्रान् एकं गीतं श्रावयति। तत्पश्चात् ते गीतम् उच्चैः पठन्ति। एतत्पश्चात्, समूहे केचन छात्राः गीतानुसारं नृत्यन्ति, केचन गीतं गायन्ति। अध्यापिका अपि तत् गीतम् अधिकृत्य भावानुसारं चित्राणि रचयितुं प्रेरयति। अध्यापिका एतादृशीं पद्धतिं किमर्थम् अनुसरति?

(a) प्रत्येकं छात्रः विशिष्टशैल्या पठति। अतः अध्यापिका एतैः विधिभिः अधिगमने छात्रसाहाय्यं करोति।

(b) विभिन्नविधिभिः छात्राः प्रतियोगितार्थं प्रेरिताः भवन्ति। परीक्षायां च तेषां श्रेणी उन्नता भवति।

(c) यदा छात्राः गतिविधिषु व्यस्ताः भवन्ति अध्यापिका अपि विश्रामार्थम् अवकाशं प्राप्नोति।

(d) छात्राः पठनं न इच्छन्ति अतः गतिविधिद्वारा छात्रान् व्यस्तीकर्तुं अध्यापिका साहाय्यं प्राप्नोति।

Ans : (a)

काव्य कक्षा में एक अध्यापिका छात्रों से एक गीत सुनती है। अन्त में वे उच्च स्वर में गीत पढ़ते हैं। तत्पश्चात् समूह में कुछ छात्र गीत की लय के अनुसार नाचते हैं, कुछ गीत को गाते हैं। अध्यापिका उस गीत को अधिकृत्यकर भाव के अनुसार चित्र बनाने को प्रेरित करती हैं अध्यापिका इस प्रकार की पद्धति का अनुसरण इसलिए करती है कि प्रत्येक छात्र विशिष्ट शैली में पढ़ता है। अतः अध्यापिका इस विधि के अधिगमन में छात्र की सहायता करती है।

Q.86. उपाचारात्मकं शिक्षणम् अस्ति

(a) निदानम् अधिगमनात्मक-रिक्ति पूर्णं च (b) प्रतिभाशालिभ्यः छात्रेभ्यः शिक्षणम्

(c) पाठ्यक्रमोत्तरं शिक्षणम्

(d) अतिरिक्त-शिक्षणम्

Ans : (a)

उपचारात्मक शिक्षण निदान एवं अधिगमन रिक्ति पूर्ण होता है। और यह छात्रों के ज्ञानात्मक वृद्धि में सहायक होता है।

Q.87. कस्य अधिगमस्य कृते सहविन्यासः (Collocation) एकः उपायः?

(a) पठनस्य (b) लेखनस्य (c) वर्तन्याः (d) शब्दावल्याः

Ans : (d)

शब्दावल्या अधिगम करने में सहविन्यास एक उपाय है जिससे समझ विकसित होती है।

Q.88. उत्तमलेखने एतत् न आगच्छति

(a) योग्यपदानां चयनम् (b) केवलम् उत्कृष्टहस्तलेखः
(c) व्याकरणगतशुद्धता (d) विचाराः उपस्थापनञ्च

Ans : (b)

उत्तम लेखन में केवल उत्कृष्ट हस्तलेख नहीं आता है जबकि योग्य पदों का लेखन, व्याकरणगत शुद्धता और विचारों का उपस्थापन आता है।

Q.89. भारतस्य भाषाशिक्षानीतिः ज्ञायते

(a) त्रिभाषासूत्ररूपेण (b) मातृभाषाशिक्षणरूपेण
(c) शिक्षायाः अधिकाररूपेण (d) बहुभाषिकतावादरूपेण

Ans : (a)

भारत की भाषा शिक्षा नीति त्रिभाषा सूत्र के रूप में जानी जाती है। त्रिभाषा के अन्तर्गत हिन्दी अंग्रेजी और स्थानीय भाषा सम्मिलित है।

Q.90. अधस्तनेषु कतमः भाषापरिवारः भारते न विराजते?

- (a) द्रविडः (Dravidian) (b) तिब्बत-बर्मन (Tibeto-Burman)
(c) अल्ताईक (Altaic) (d) इंडो-आर्यन् (Indo-Aryan)

Ans : (c)

भारत में दृढ़ एवं परिपक्व भाषा परिवार का विश्लेषण मिलता है जिसे विद्वानों ने अपने ज्ञान की खोज द्वारा सिद्ध किया है। जिसमें से द्रविडः भाषा परिवार मुख्य हैं। प्रश्नानुसार द्रविड, तिब्बत, वर्मन, इंडो-आर्यन ये सभी भारतीय भाषा परिवार के अन्तर्गत आते हैं। जबकि अल्ताईक भारत के भाषा परिवार के अन्तर्गत नहीं है।

Q.91. प्रक्रियालेखने (Process writing) बहुविधिस्थितीनां क्रमः

- (a) विमर्शः टिप्पणं प्रारूपलेखनं सम्पादनम् अन्तिमलेखनं च (Brainstorming jotting, drafting, editing and finalising)
(b) टिप्पणं सम्पादनं प्रारूपलेखनम् अन्तिमलेखनं च (jotting, editing, drafting and finalising)
(c) विमर्शः टिप्पणं सम्पादनं प्रारूपलेखनम् अन्तिमलेखनं च (Brainstorming, jotting, editing, drafting and finalising)
(d) टिप्पणं प्रारूपलेखनं सम्पादनम् अन्तिमलेखनं च (jotting, drafting, editing and finalising)

Ans : (a)

अनेक प्रकार की स्थितियों में जब प्रक्रिया लेखन का प्रयोग होता है, तब उस समय विमर्श, टिप्पणी, प्रारूप लेखन और अन्तिम लेखन का सम्पादन मुख्य भूमिका निभाता है।

Q.92. अनेकेभ्यः छात्रेभ्यः लेखनकार्यम् अत्यन्तं जटिलकार्यम्। अतः अस्मिन् सन्दर्भे अध्यापकैः/अध्यापिकाभिः प्रथमं कुत्र अवधानं दातव्यम्?

- (a) रुचि-वर्धनार्थं सरलकार्यं प्रति
(b) स्पष्ट सम्प्रेषण-क्षमता-विकास-सन्दर्भे आवश्यक-व्याकरण तत्व-अभ्यासं प्रति

(c) व्याकरण-सम्बद्ध-अभ्यासान् प्रति

(d) आत्मविश्वासम् उत्पादयितुं लक्ष्यभाषा मातृभाषा-प्रयोगं प्रति

Ans : (b)

अनेक छात्रों के लिए लेखनकार्य अत्यन्त जटिल होता है। अतः इस सन्दर्भ में अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों को स्पष्ट सम्प्रेक्षण क्षमता के विकास के सन्दर्भ में आवश्यक व्याकरण तत्व का अभ्यास कराये।

Q.93. कस्यापि लेखस्य मूल्याङ्कनसन्दर्भे लेखस्य कः सः भागः यत्र सम्पूर्णस्य लेखस्य सारांशः पुनरावृत्तिं विना प्राप्यते यत्र च सम्पूर्णमहत्वपूर्णाः सूचनाः अपि दृश्यन्ते?

- (a) मध्यभागः (b) भूमिका
(c) निष्कर्षः (d) द्वितीयः अनुच्छेदः

Ans : (c)

किसी लेख के मूल्यांकन के सन्दर्भ में लेख का निष्कर्ष वाला भाग होता है जहां सम्पूर्ण लेख का सारांश एवं सम्पूर्ण महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है।

Q.94. सामाजिकसम्पर्कस्य संस्थापनाय संरक्षणाय च भाषाया उपयोगः एवम् अभिधीयते

- (a) भाषायाः संवादात्मिका क्रिया (b) औपचारिकोपगमः
(c) विश्लेषणात्मकः उपगमः (d) प्रत्यक्षोपगमः

Ans : (a)

सामाजिक सम्पर्क की स्थापना और संरक्षण के लिए भाषा के उपयोग को भाषा की संवादात्मक क्रिया कहा जाता है। सामाजिक सम्पर्क में भाषा संवहन का कार्य करती है। भाषा की समझ ही सम्प्रेषण कौशल है।

Q.95. 'स-कलकलम् सकल-कलम्' इति पदद्वन्द्वे अस्त्ययम् अलङ्कारः

(a) श्लेषः (b) रूपकम् (c) यमकम् (d) अनन्वयः

Ans : (c)

'स-कलकलम् सकल-कलम्' इस द्वन्द्व पद में यमक अलङ्कार है। यमक शब्द का अर्थ दो है। इस अलङ्कार में एक ही आकार के शब्दों का बार-बार प्रयोग होता है लेकिन अर्थ भिन्न भिन्न होते हैं।

Q.96. लयः बलाघातः स्वरश्च कस्य गुणाः?

(a) शब्देतरभाषायाः (b) सम्भाषणभाषायाः
(c) लिखितभाषायाः (d) सङ्गीतस्वराणाम्

Ans : (d)

स्वर का लय, बलाघात इत्यादि सङ्गीत स्वरों में है। सम्भाषण भाषा में लय, बलाघात इत्यादि पर ध्यान दिया जाता है।

Q.97. 'छात्राः शान्तिपूर्णजीवनाय अभिप्रेरिता भवेयुः, परस्परं मिलित्वा वसेयुः अन्येषां कृते च कार्यं कर्तुं सज्जिताः भवेयुः इति।' एतैः भावैः सम्बद्धा शिक्षा कथ्यते

(a) मूल्यशिक्षा (b) शैक्षणिकता
(c) व्यावसायिक शिक्षा (d) दूरस्थशिक्षा

Ans : (a)

तात्पर्य है - विद्यार्थियों को जब भी कोई कार्य करने की अभिप्रेरणा दी जाती है व परस्पर समान रूप से कार्य करना, मिलकर रहना, कार्य करना व शान्तिपूर्ण जीवन के लिए अभिप्रेरित करना, सद्भाव बनाये रखना, इस प्रकार का जीवन नैतिक शिक्षा पर आधारित होता है। अर्थात् मूल्य शिक्षा कहलाती है।

Q.98. भाषा-शिक्षणस्य कः विधिः छात्रान् तथा भाषया परस्परम् अन्तः क्रियार्थम् प्रेरयति

- (a) व्याकरण-अनुवाद-विधिः (b) अनुवादविधिः
(c) सम्प्रेषणात्मकविधिः (d) अनौपचारिकविधिः

Ans : (c)

भाषा-शिक्षणस्य सम्प्रेषणात्मकविधिः छात्रान् तथा भाषया परस्परम् अन्तः क्रियार्थम् प्रेरयति। तात्पर्य है - भाषा शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा सूचनाओं, तथ्यों एवं विचारों को छात्रों तक भाषा की सहायता से प्रेषित करता है। सम्प्रेषण का अर्थ है संदेश प्राप्त करने वाला, संदेश को उसी अर्थ में लें जिस अर्थ में वह उसके पास भेजा गया है, इसका ज्ञान तभी सम्भव है जब वह अपनी प्रतिक्रिया भी साथ-साथ व्यक्त करे। इस प्रकार का सिद्धान्त अन्तःक्रिया (अर्तमन में चलने वाली क्रिया) को महत्व देता है। सम्प्रेषणात्मक विधि आन्तरिक क्रिया को प्रेरित करता है

Q.99. संस्कृतपाठ्यक्रमे संवादलेखस्य मूलोद्देशः अस्ति?

- (a) सृजनात्मकक्षमता (b) गतिलेखनम्
(c) व्याकरणपरिशुद्धता (d) सम्प्रेषणकौशलानि

Ans : (a)

संस्कृत पाठ्यक्रम में संवाद लेख का जो मूल उद्देश्य होता है वह यह होता है कि इससे सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। सृजनात्मक क्षमता के विकास के लिए लेखन का बहुत महत्व होता है। अतः संवाद लेख के माध्यम से सृजनात्मकता का विकास होता है।

Q.100. एकस्यां भाषा-कक्ष्यायां 'वृक्षः' इति पाठः पाठ्यते। छात्राः विभिन्नसमूहेषु विभक्ताः। सर्वे भिन्न भिन्नं कार्यं कुर्वन्ति। एकः समूहः पाठ्यसामग्रीम् अधिकृत्य

चित्राणि निर्माय लेखन-भाषण-कौशल-द्वारा कृतकार्य प्रस्तौति। तस्य समूहस्य प्रदर्शनं केन सम्बद्धम्?

- (a) अर्थग्रहणेन (b) अवबोधनात्मक-अभिव्यक्तात्मक-कौशलेन
(c) चित्र-चित्रण-कौशलेन (d) तथ्य-सङ्ग्रहणेन

Ans : (b)

एक भाषा की कक्षा में 'वृक्ष' शीर्षक नामक पाठ पढ़ाया जाता है। छात्र विभिन्न समूहों में विभक्त हैं। सभी अलग-अलग कार्य करते हैं। एक समूह पाठ्य सामग्री का अनुगमन कर चित्र बनाकर लेखन भाषण कौशल द्वारा कृतकार्य प्रस्तुत करता है। उस समूह का प्रदर्शन अवबोधनात्मक अभिव्यक्तात्मक कौशल से सम्बद्ध है।

SACHIN ACADEMY



<https://www.youtube.com/channel/UC7Pb8pDIwmU8UvEx2Q6K5GA>

CP STUDY POINT



https://www.youtube.com/results?search_query=CP+STUDY+POINT